सृजन-2

Srijan-2

कक्षा 12 के लिए सृजनात्मक लेखन और अनुवाद की पाठ्यपुस्तक

Textbook in Creative Writing and Translation for Class XII

सृजन

भाग 2

कक्षा 12 के लिए सृजनात्मक लेखन
और अनुवाद की पाठ्यपुस्तक

Srijan

Part 2

Textbook in Creative Writing
and Translation for Class 12

12132

© NCERT
not to be published

विद्ययाऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

Prelims.indd 1 29-11-2018 14:24:10

12132 – सृजन (भाग 2)
कक्षा 12 के लिए पाठ्यपुस्तक

ISBN 978-93-5007-301-8

प्रथम संस्करण
अक्तूबर 2015 कार्तिक 1937

पुनर्मुद्रण
जनवरी 2019 पौष 1940
नवंबर 2021 कार्तिक 1943

PD 5T RPS

© ***राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2015***

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बैंगलूर 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2674869

₹ 265.00

प्रकाशन सहयोग/Publication Team

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*अनूप कुमार राजपूत*
Head, Publication Deptt	:	*Anup Kumar Rajput*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
Chief Editor	:	*Shveta Uppal*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरूण चितकारा*
Chief Production Officer	:	*Arun Chitkara*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*विपिन दिवान*
Chief Business Manager	:	*Vipin Dewan*
संपादक	:	*रेखा अग्रवाल/ Rekha Agarwal*
Editor	:	*बिज्ञान सुतार/ Bijnan Sutar*
उत्पादन सहायक	:	*प्रकाश वीर सिंह*
Production Assistant	:	*Prakash Veer Singh*

आवरण एवं चित्रांकन
आर्ट क्रिएशनस

Cover and Illustration
Art Creations

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा दीवान प्रिंट हाउस नं.-26, सैक्टर-2, डी.एस.आई.आई.डी.सी. बवाना इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली 110 039 द्वारा मुद्रित।

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है, जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का सफ़ल प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा यह भी सुझाती है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर ज़्यादा से ज़्यादा विकल्प उपलब्ध कराए जाएँ। इसे ध्यान में रखते हुए परिषद् ने कुछ ऐसे नए विषय क्षेत्रों से विद्यार्थियों का परिचय कराने का निश्चय किया, जो सृजनात्मक दृष्टिकोण और अंतरविषयी समझ विकसित करने में विशेष रूप से सहायक हों। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर इस तरह की समझ और कौशल विकसित करने में सृजनात्मक लेखन और अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। बहुभाषी सामग्री से भरपूर यह पुस्तक युवा पीढ़ी को इस क्षेत्र में आगे आने के लिए एक अनूठा अवसर दे सकती है। एन.सी.ई.आर.टी. यह उम्मीद करती है कि इस पुस्तक का यह नवाचारमूलक दृष्टिकोण अध्यापकों और विद्यार्थियों दोनों को इस बात के लिए प्रेरित करेगा कि वे भाषा और साहित्य संबंधी अपनी जानकारी को रोज़मर्रा के सामाजिक अनुभवों और उनसे जुड़े विमर्शों के साथ समन्वित कर सकें।

इस प्रयत्न की सफ़लता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सिखाने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एक मात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

यह उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फ़ेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है, जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव कराने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का

© NCERT not to be republished

पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् इस पुस्तक के मुख्य सलाहकार श्री अशोक वाजपेयी, सलाहकार प्रोफ़ेसर अरुण कमल तथा निगरानी समिति द्वारा विशेष आमंत्रित सदस्य सुश्री राजी सेठ की आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान दिया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं, जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी, जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
अक्तूबर, 2010

© NCERT not to be republished

Foreword

The National Curriculum Framework (NCF) 2005, recommends that children's life at school must be linked to their life outside the school. This principle marks a departure from the legacy of bookish learning which continues to shape our system and causes a gap between the school, home and community. The syllabi and textbooks developed on the basis of NCF signify and attempt to implement this idea. They also attempt to discourage rote learning and the maintenance of sharp boundaries between different subject areas. We hope these measures will take us significantly further in the direction of a child-centered system of education outlined in the *National Policy on Education* (1986).

On of the key recommendation of the NCF is to increase the number of options available at the higher secondary level. Following this re-commendation the National Council of Educational Research and Training (NCERT) has decided to introduce new areas highlighted in the NCF for their potential for increasing creativity and interdisciplinary understanding. Creative Writing and Translation constitute a major example of the space available for interdisciplinary understanding and skill development in the higher secondary classes. The present textbook attempts to provide a unique opportunity to the young pursuing this area in a bilingual text. NCERT hopes that the innovative approach of this textbook will inspire both teachers and students to combine the knowledge of language and literature with everyday social experiences and the discourses associated with them.

This initiative can succeed only if school principals, parents and teachers recognise that given space, time and freedom, children generate new knowledge by engaging with the information passed on to them by adults. Treating the prescribed textbooks as the sole basis of examination is one of the key reasons why other resources and sites of learning are ignored. Inculcating creativity and initiative is possible if we perceive and treat children as participants in learning, not as receivers of fixed body of knowledge.

These aims imply considerable change in school routines and mode of functioning. Flexibility in the daily time-table is as necessary as rigour in implementing the annual calendar so that the required number of teaching days is actually devoted to teaching. The methods used for teaching and evaluation will also determine how effective this textbook proves for making

© NCERT not to be republished

children's life at school a happy experience, rather than a source of stress or boredom. Syllabus designers have tried to address the problem of curricular burden by restructuring and reorienting knowledge at different stages with greater consideration for child psychology and the time available for teaching. The textbook attempts to enhance this endeavour by giving higher priority and space to opportunities for contemplation and wondering, discussion in small groups, and activities requiring hands-on experience.

NCERT appreciates the hard work done by the syllabus and textbook development committee. The work for developing this interactive textbook was challenging and the painstaking efforts by its Chief Advisor, Sri Ashok Vajpayi and Advisor, Professor Arun Kamal are praiseworthy. The Council is grateful to Ms Rajee Seth, the special invitee of the Monitoring Committee. We are indebted to the institutions and organisations, which have generously permitted us to draw upon their resources, materials and personnel. We are especially grateful to the members of the National Monitoring Committee appointed by the Department of Secondary and Higher Education, Ministry of Human Resource Development, under the Chairpersonship of Professor Mrinal Miri and Professor G.P. Deshpande, for their valuable time and contribution. As an organisation committed to systemic and continuous empowerment in the quality of its products, NCERT welcomes comments and suggestions which will enable us to undertake further revision and refinement.

Director
National Council of Educational
Research and Training

New Delhi
October, 2010

© NCERT not to be republished

यह पुस्तक

बच्चे सहज ही सृजनात्मक होते हैं। उनकी यह सृजनात्मकता तरह-तरह से अभिव्यक्त होती है। भाषा रचने की तो उनमें स्वाभाविक क्षमता होती है। अगर उनकी इस क्षमता की पहचान शुरूआत में ही हो जाए तो इसे और निखारा जा सकता है। खासतौर से उच्चतर माध्यमिक स्तर तक आते-आते अभिव्यक्ति के नए माध्यमों की बारीकियों से परिचय हो तो विद्यार्थियों की रचनात्मकता नए आयाम लेगी। साथ ही वे भाषा साहित्य को रोज़मर्रा के सामाजिक मुद्दों और विमर्शों से जोड़कर देखने में समर्थ हो सकेंगे। ऐसे में इस पुस्तक का साथ उनमें अच्छा लिख सकने का विश्वास भर सकता है।

इस पुस्तक का निर्माण एक बहुभाषी बच्चे की परिकल्पना के साथ हुआ है। इसमें **चार इकाइयाँ** हैं। प्रत्येक इकाई में हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में समानांतर सामग्री दी गई है, वह भी एक ही ज़िल्द में। एन.सी.ई.आर.टी. ने पहली बार ऐसी पाठ्यपुस्तक का निर्माण किया है। दोनों ही भाषाओं में स्वतंत्र रूप से अध्यायों को लिखा गया है। विद्यार्थियों से यह अपेक्षा होगी कि वे दोनों भाषाओं में लिखी सामग्री को पढ़ें ताकि उनकी अभिव्यक्ति दोनों भाषाओं में आसानी से आवाजाही कर सके। अनुवाद कौशल में भी यह सहायक रहेगा। इसके माध्यम से कम-से-कम दो भाषाओं की सृजनात्मक विशेषताओं से विद्यार्थी एकसाथ रू-ब-रू होंगे। इसमें दी गई गतिविधियाँ भी दोनों भाषाओं की सामग्री को जोड़ती हैं, जो बहुभाषी संदर्भ रचने में समर्थ हो सकती है। अनुवाद इसका एक ज़रूरी हिस्सा है। इसके माध्यम से विद्यार्थी अनुवाद में सृजनात्मक अभिव्यक्ति के प्रति सचेत हो सकेंगे।

सृजनात्मकता हममें ऊर्जा भरती है। यही हमें विभेदों का आदर करना सिखाती है विभिन्नता और अनेकता में रस लेना भी। हरेक व्यक्ति सृजनात्मक होता है, बच्चे तो बड़ों से भी ज़्यादा। सींची जाने पर सृजनात्मकता अंकुरण बन प्रत्येक विद्यार्थी के स्वतंत्र विकास का ज़रिया हो सकती है। बढ़िया ढंग से लिखे गए शब्द दुनिया को नए ढंग से रचने की ऊर्जा देते हैं। ज़ाहिर है रचने की इस ऊर्जा को शुरुआत में ही दिशा मिल जाए तो आने वाले कल का इतिहास बिलकुल नया और ताज़ा होगा क्योंकि लिखित शब्द दस्तावेज़ की तरह होते हैं। इनका प्रभाव भी बिलकुल भिन्न होता है।

यह पुस्तक सृजनात्मकता संबंधी बनी-बनाई धारणा में बदलाव की माँग करती है। रचने की कला किसी जन्मजात प्रतिभा की मोहताज़ नहीं होती, वह कहीं भी और कभी भी पनप सकती है। क्योंकि सबके भीतर वह बीज मौजूद है। यह पुस्तक उन्हें पहचानने का एक अवसर दे सकती है।

आज अलग-अलग क्षेत्रों, रूप विधा के साथ-साथ अलग-अलग अनुशासनों में ऐसा लेखन हो रहा है, जिसकी नयी भाषा और उसका नया व्याकरण सृजनात्मकता की नयी संभावनाओं की ओर

© NCERT not to be republished

ले जाता है। साहित्य के साथ-साथ अनुवाद और मीडिया का भी क्षेत्र ऐसा ही है। पूरी दुनिया से जुड़ने में ऐसे लेखन की बड़ी भूमिका है। ज़ाहिर है अगर ऐसे सृजनात्मक लेखन से युवाओं/युवतियों की ऊर्जा भी जुड़ती है, तो पूरी दुनिया को रचनात्मक ढंग से जुड़ने में मदद मिलेगी।

अनुवाद तो सृजनात्मकता से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। दो से अधिक भाषाएँ साधे बिना भारत में जल्दी किसी का काम नहीं चलता। हमारे संदर्भ की बहुभाषिकता रोज़मर्रा की ज़िन्दगी से ताल्लुक रखती है। एक दिन के लिए भी सिर्फ़ एक भाषा में बँधकर रह जाना हमारे लिए संभव नहीं। फ़िर भी अकसर हम बंद खाँचों में बाँधकर भाषा पढ़ते-पढ़ाते हैं। बोल-चाल में भले ही हम एक भाषा की पंक्ति से शुरू कर दूसरी भाषा की पंक्ति पर खत्म करें-कक्षा में हमारा ज़ोर एकभाषिकता पर रहता है और शुद्धतावादी दृष्टिकोण इस कदर हम पर हावी रहता है कि भाषिक हेल-मेल से हम भरसक परहेज़ ही कर जाते हैं। हर भाषा के अलग-अलग अवयव जानना-समझना ज़रूरी है पर उतना ही ज़रूरी है भाषाओं का गठबंधन/तुलनात्मक अध्ययन। हमारे रोज़मर्रा के अनुभव का हिस्सा है अनुवाद, जिसमें अनुवादक की कल्पनाशीलता और संवेदनशीलता एक बड़ी भूमिका निभाती है, इसलिए अनुवाद मौलिक रूप में सृजनात्मक होता है। हमारे बहुलतावादी समाज में एकभाषिकता की कृत्रिमता पर एक प्रश्नचिह्न लगाता है यह पाठ्यक्रम, साथ ही भाषिक कौशल के विकास की सम्यक्-व्यापक योजना रखता है।

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के मूल्यांकन में समग्र दृष्टिकोण की माँग करता है। यहाँ मूल्यांकन की भूमिका विद्यार्थी की सृजनात्मकता और उनकी सृजनात्मक लेखन संबंधी जानकारी को आकार देकर पैना बनाना है। उनकी रुचि और भावनाओं को रचनात्मक दिशा तलाशने में मदद करना है। इस प्रक्रिया में अध्यापकों को हरेक विद्यार्थी के लिए मूल्यांकन संबंधी अलग-अलग विधियों और औज़ारों को अपनाना होगा। विद्यार्थी की समझ और विकास को जाँचने के लिए उनकी समस्याओं, उनके आत्मविश्वास, उनकी क्षमता को नज़दीक से पहचानना होगा।

मूल्यांकन की इस प्रक्रिया में अंकों या 'ग्रेड' द्वारा जाँचने के बजाय संरचनात्मक सुझाव देकर विद्यार्थी की अभिव्यक्ति को असरदार बनाना होगा। यह प्रक्रिया उनके सृजनात्मक विकास में सहायक होगी। इसलिए लिखित परीक्षा मात्र मूल्यांकन में सहायक नहीं हो सकती, लिखित परीक्षा के साथ-साथ विभिन्न तरीकों से विद्यार्थी का निरीक्षण, जैस-पोर्टफ़ोलियो में किए गए कार्य, बातचीत, सामूहिक कार्य में साझेदारी, विद्यार्थी के स्वयं के मूल्यांकन को वरीयता देनी होगी। विद्यार्थी की मौलिकता को बनाए रखना मूल्यांकन का सबसे ज़रूरी पक्ष होगा। इसके लिए पुस्तक में दी गई गतिविधियों को तो कराएँ ही, कक्षा की माँग के अनुसार कुछ नयी गतिविधियों की जगह हमेशा बनाएँ।

हमें यह भी याद रखना चाहिए कि रचनात्मक प्रक्रिया किसी रचना से कम महत्वपूर्ण नहीं होती। कुछ रच सकने के अहसास तक पहुँचना या उसे जानना विद्यार्थियों की सृजनात्मक मौलिकता (खासतौर से भाषा में सृजनात्मकता) की पहचान कर उसे सही दिशा देने में सहायक होगा, जो इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है।

अध्यापकों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह होगी कि वह हरेक विद्यार्थी से एक तरह की सृजनात्मक क्षमता की अपेक्षा न करे। हर विद्यार्थी की भिन्न मौलिक क्षमता और रुचि को ध्यान में रखकर ही उन्हें दिशा देना अध्यापकों का दायित्व होना चाहिए। उनकी भूमिका मित्रवत् होनी चाहिए ताकि विद्यार्थी, शिक्षक और शिक्षा के बीच एक संवादात्मक रिश्ता बन सके। विद्यार्थी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और अभिव्यक्ति की आज़ादी विद्यार्थी के तनाव को कम कर उनके आत्मविश्वास और आत्मसंयम को बढ़ाएगी। यह प्रक्रिया उन्हें अभिव्यक्ति की ऐसी भाषा देने में समर्थ होगी, जिससे भाषाओं, कलाओं, संस्कृतियों के बीच का रास्ता बेरोक-टोक, शांतिपूर्ण और मज़बूत हो सकेगा।

© NCERT not to be republished

गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ :

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

© NCERT not to be republished

About This Book

Children have an innate creative ability which manifests itself in many forms. Their natural flair for creativity in language, if identified early, can lead to further creative growth and enhancement of their skills. Exposure to the nuances of contemporary and diverse forms of creative expression at the Higher Secondary level can facilitate discovery of new dimensions of creative expression in language and literature. The endeavour of this book is therefore to enable students to recognise their talents and write confidently.

Srijan has been developed keeping in view a bilingual child and it is for the first time that NCERT has developed a bilingual book (Hindi and English). There are four units in the book. Each unit has been developed in Hindi as well as in English. These are parallel texts and not just literal translations. Students are expected to read both sets of units as this would hone their linguistic abilities and besides developing their translation skills will give them a better understanding of the subject. The units in Hindi and English are linked with activities that are numbered in continuation so that students visit both texts and come across enriching examples in both languages. Translation, which is an inherent part of this course, creates a bilingual context. Translations are expected to enable the learners to appreciate the fact that translation is also a creative activity.

The book aims to change pre-conceived notions related to creative skills, the foremost among which is that creativity is inborn and hence only some of us are endowed with it. This book reiterates the fact that each one of us can be creative; children are more so. With adequate guidance and training every student's creative potential can be tapped and developed. Creativity teaches us to respect diversity and to derive pleasure in variety. What is required is to give effective direction to the inherent creative energy in students so that a better tomorrow can be scripted. As we all know, a well-written piece has the strength to change/formulate opinions.

Today, Creative writing has been revitalised with a spirit of innovation and experimentation. New forms of writing, with their unique expressions and grammar have emerged in the field of literary writing, translation and media. With the creative use of both language and literature, students will be able to represent and reflect upon contemporary social realities, diverse thoughts, languages and cultures.

The study of two or more languages is essential in India. No person can confine herself or himself to a single language. In schools, however, we study

© NCERT not to be republished

languages as watertight compartments. While conversing we may begin the sentence in one language and end it in another, but in the classroom we emphasise exclusivity and purity. This book attempts to bridge the gap between experienced reality and pedagogical practice by recognising that although it is important to know the individual features of every language, it is also essential in our multilingual context to look at them comparatively. This can be achieved by introducing students to translation as a creative activity.

The course on Creative Writing and Translation demands that the assessment of the students should be holistic. The role of assessment is to enhance the knowledge and skills of creative writing among students, and to provide direction to their field of interest. On the basis of this, the teacher can evolve an individualised approach or strategy appropriate for her/his students. The teacher will also have to identify the problems, ascertain the level of confidence, and capabilities of the students.

The students' assessment should not be made merely in terms of marks or grades; rather, constructive feedback from the teacher would be more effective. Therefore, written texts alone are not sufficient as a means of assessment. They should be combined with the teacher's observations and assessment of the student's work throughout the year by maintaing individual portfolios, oral presentations, group-work, students' self-assessment etc. The learner's individual expression should be given due space in the process of assessment.

There are a variety of activities in the book. However, new activities should be created according to the interests and needs/demands of the students. We must remember that the creative process is as important as the product, and the learner needs to be encouraged to enjoy the process, which is the primary objective of this course.

The inherent challenge before the teachers lies in the fact that all the students do not have the same level of creativity and understanding. Teachers are required to guide the students according to the individual's interest and creativity level. The teacher's role in a learner-centered environment is that of a facilitator and friend. This will encourage constant dialogue between the teacher and the student. A positive attitude and freedom of expression will go a long way in lowering the anxiety levels of learners, while raising their self-confidence and self-discipline. This course is expected to provide students with a medium to creatively interact with diverse cultures and languages thereby contributing towards creating harmony and peace.

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति
Textbook Development Committee

मुख्य सलाहकार/Chief Advisor

अशोक वाजपेयी, *अध्यक्ष*, नयी दिल्ली ललित कला अकादमी
Ashok Vajpayi, *Chairperson,* Lalit Kala Academy, New Delhi

सलाहकार/Advisor

अरूण कमल, *प्रोफ़ेसर*, पटना विश्वविद्यालय, पटना
Arun Kamal, *Professor*, Patna University, Patna

सदस्य/Members

अनामिका, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, सत्यवती कॉलेज, दिल्ली
Anamika, *Associate Professor*, Satyawati College, Delhi

अनुराधा, *पी.जी.टी.*, सरदार पटेल विद्यालय, लोधी इस्टेट, नयी दिल्ली
Anuradha, *P.G.T.*, Sardar Patel School, Lodhi Estate, New Delhi

अनुभा यादव, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, कमला नेहरू कॉलेज, नयी दिल्ली
Anubha Yadav, *Assistant Professor*, Kamla Nehru College, New Delhi

आनंद प्रधान, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, आई.आई.एम.सी., दिल्ली
Anand Pradhan, *Associate Professor,* Indian Institute of Mass Communication, Delhi

इंदुबाला, *पूर्व प्रधानाचार्य*, डी.टी.ई.ए. स्कूल, आर.के. पुरम्, नयी दिल्ली
Indu Bala, *Former Principal*, DTEA School, R.K. Puram, New Delhi

जी.जे.वी. प्रसाद, *प्रोफ़ेसर*, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली
G.J.V. Prasad, *Professor*, Jawaharlal Nehru University, New Delhi

नीलम सरण गौड, *प्रोफ़ेसर*, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
Neelum Saran Gaur, *Professor*, Allahabad University, Allahabad

नीलकंठ कुमार, *पीजीटी*, राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, द्वारका, नयी दिल्ली
Neelkanth Kumar *PGT*, Rajkiya Pratibha Vikas Vidyalaya, Dwarka, New Delhi.

© NCERT not to be republished

प्रमोद तिवारी, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,* केंद्रीय विश्वविद्यालय गुजरात, गांधी नगर
Pramod Tiwari, *Assistant Professor*, Central University Gujarat, Gandhi Nagar.

महेश दर्पण, *कहानीकार और पत्रकार*, सादतपुर, नयी दिल्ली
Mahesh Darpan, *Storywriter and Journalist*, Sadatpur, New Delhi

राज्यश्री नारायण, *पीजीटी*, राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, लोधी रोड, नयी दिल्ली
Rajyasri Narayan, *PGT*, Rajkiya Pratibha Vikas Vidyalaya, Lodhi Road, New Delhi.

शारदा, *वरिष्ठ प्रवक्ता*, डाइट, आर.के. पुरम्, नयी दिल्ली
Sharda, *Sr. Lecturer*, DIET, R.K. Puram, New Delhi

सुरेश सलिल, *कवि और अनुवादक*, सादतपुर, नयी दिल्ली
Suresh Salil, *Poet and Translator*, Sadatpur, New Delhi

सुकृता पॉल कुमार, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
Sukrita Paul Kumar, *Associate Professor*, University of Delhi, Delhi

सूसन थॉमस, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, कमला नेहरू कॉलेज, नयी दिल्ली
Susan Thomas, *Assistant Professor*, Kamla Nehru College, New Delhi

सदस्य समन्वयक/Member Coordinators

संध्या सिंह, *प्रोफ़ेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
Sandhya Singh, *Professor*, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi

कीर्ति कपूर, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
Kirti Kapur, *Associate Professor*, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi

© NCERT not to be republished

आभार

पुस्तक निर्माण के अलग-अलग चरणों में सहयोगी रामजन्म शर्मा, *प्रोफ़ेसर* और *पूर्व अध्यक्ष*, भाषा शिक्षा विभाग, नयी दिल्ली, रणजीत साहा, *प्रोफ़ेसर*, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नयी दिल्ली, सुश्री सनम खन्ना, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, कमला नेहरू कॉलेज, नयी दिल्ली और स्व. डॉ. नूतन झा, मीरांबिका स्कूल, नयी दिल्ली के प्रति हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

फ़ोटोग्राफ़ के लिए राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नयी दिल्ली, सरदार पटेल विद्यालय, नयी दिल्ली, पर्यावरण एवं वन विभाग और रेल मंत्रालय के हम आभारी हैं।

परिषद् इसके निर्माण में तकनीकी सहयोग के लिए *डी.टी.पी. ऑपरेटर* रुचि सैनी और नरेन्द्र कुमार वर्मा की आभारी है।

Acknowledgement

We acknowledge the contribution of Ram Janam Sharma, *Professor* and *Former Head*, DEL, NCERT, New Delhi; Ranjit Saha, *Professor*, JNU, New Delhi; Ms Sanam Khanna, *Assistant Professor,* Kamala Nehru College, New Delhi; and Dr Late Nutan Jha, Mirambika School, New Delhi at various stages of the development of this book.

NCERT would like to thank the National School of Drama, New Delhi, Environment and Forests Ministry and Railway Ministry for permission to reproduce copyright pictures in this book.

The Council also acknowledges the services of Ruchi Saini and Narender Kumar Verma, *DTP Operators*.

© NCERT not to be republished

Gandhiji's Talisman

I will give you a talisman. Whenever you are in doubt or when the self becomes too much with you, apply the following test:

Recall the face of the poorest and the weakest man whom you may have seen and ask yourself if the step you contemplate is going to be of any use to him. Will he gain anything by it? Will it restore him to a control over his own life and destiny? In other words, will it lead to Swaraj for the hungry and spiritually starving millions?

Then you will find your doubts and your self melting away.

M.K. Gandhi

© NCERT not to be republished

विषय सूची/CONTENTS

आमुख ... *iii*
Foreword ... *v*

यह पुस्तक ... *vii*
About This Book ... *xi*

1. साहित्यिक लेखन/*Literary Writing* ... 1-74

I. भाव, विचार और उसकी रचावट ... *4*
II. कविता लेखन ... *5*
III. कहानी लेखन ... *19*

I. An Idea and Its Development ... *38*
II. Writing Poetry ... *39*
III. Writing a Short Story ... *56*

2. मीडिया लेखन/*Media Writing* ...75-124

I. फ़ीचर लिखना ... *78*
II. लेख लिखना ... *91*
III. स्क्रिप्ट (रेडियो, टेलीविज़न) ... *93*
IV. नए माध्यमों के लिए लिखना ... *97*

I. Feature Writing ... *100*
II. Article Writing ... *111*
III. Script (Radio, Television) ... *112*
IV. Writing for the New Media ... *122*

3. अनुवाद की प्रक्रिया/*The Process of Translation* ... 125-164

I. संक्षिप्त परिचय ... *128*
II. विश्लेषण ... *129*
III. भाषांतरण ... *132*
IV. पुनर्रचना ... *133*

I. An Introduction ... *142*
II. Analysis ... *146*
III. Transference ... *147*
IV. Restructuring ... *148*

4. संपादन/*Editing* ... 165-188

I. संपादन को जानना ... *168*
II. प्रूफ़ रीडिंग और संपादन ... *172*

I. Understanding Editing ... *176*
II. Proof Reading and Editing ... *178*

© NCERT not to be republished

हमारे सामने विभिन्नताओं को खत्म करने की चुनौती नहीं है बल्कि उनके साथ रहते हुए एक रहने की है।

– रवींद्रनाथ टैगोर

The Problem is not how to wipe out the differences but how to unite with the differences intact.

– Rabindranath Tagore

1

साहित्यिक लेखन

Literary Writing

12132CH01

© NCERT not to be republished

1. साहित्यिक लेखन

I. भाव, विचार और उसकी रचावट

II. कविता लेखन

III. कहानी लेखन

1. *Literary Writing*

I. An Idea and Its Development

II. Writing Poetry

III. Writing a Short Story

© NCERT not to be republished

सृजनात्मकता से रू-ब-रू

- दिए गए कोलाज़ को ध्यान से देखिए। इनमें से कुछ तसवीरें और खबरें आपसे कुछ कहती हैं।
- इन तसवीरों और खबरों ने जो प्रभाव आप पर छोड़ा उसे ध्यान में रखते हुए कोई एक रचना (कविता, कहानी, एकांकी आदि कुछ भी ...) लिखिए।

I. भाव, विचार और उसकी रचावट

जगत सर्व
भाषा विकल्पम्
– वाक्यपदीयम् भर्तृहरि

प्रसिद्ध कवि मायकोव्स्की ने अपनी रचनात्मक भाव-स्थिति का वर्णन इन शब्दों में किया है–

> *मैं हाथ हिलाता और शब्दों के बिना बुदबुदाता चला जा रहा। कभी अपनी चाल को धीमा कर लेता हूँ ताकि बुदबुदाने में बाधा न पड़े या कभी तेज़ी से बुदबुदाने लगता हूँ ताकि वह मेरी चाल का साथ दे सके।*

यही है भाव की उमड़न। यहाँ अपनी खास तरंगमय धुन में कवि कुछ बुदबुदा ज़रूर रहा है। लेकिन यहाँ शब्द वही नहीं है, जो कविता में आते हैं। यह तो वह उमड़न है, जो तरंग में एक खास तरह की धुन या लय में बहती चली जा रही है।

यह लय ही काव्य का आधार होती है। कविता में शब्द इसकी गूँज से आकार लेते हैं। जैसे खुद-ब-खुद उछल कर बाहर आ रहे हों। कभी एक साथ बहुत सारे शब्द उछल आते हैं और कभी बहुत कम।

यह लय अपने साथ लाती है–एक गूँज या ध्वनि। यही वह शक्ति है, जो हमारे बेतरतीब शब्दों को तरतीब में रखती है। हर कवि का अपना अनुभव, संसार होता है, जो शब्दों से अपना एक रिश्ता बनाता है। किस शब्द को कहाँ रखा जाए या हटा दिया जाए, यह तय करने का काम गूँज का छनना करता है। शब्दों को छानने का आधार होता है–भाव के साथ उसकी निकटता। शुरुआत में यह तुकबंदी की शक्ल में भी हो सकता है। लेकिन वही, कविता नहीं हो जाती।

वह कविता होती है–उस शब्द के सहयोग से, जिसमें अनुभव शामिल हो। ध्वनि इन्हीं शब्दों को व्यवस्थित करती है। इसी तरह अचानक इस गूँज के बीच में से ही एक या कुछेक शब्द एक खास लय में बंधने लगते हैं। अनुभव की यह लय ही फिर इनका विस्तार करती है। यही है–भाव से विचार में उतरना। भाव से विचार और विचार से भाव की यह आवाजाही ही रचना को आकार देती है। आकार तो दे देती है, लेकिन उसकी रचावट के बगैर रचना खिल नहीं पाती। वह खिलती है तब, जब हर भाव रचना में आए शब्द के साथ एक खास प्रवाह बना लेता है। रचना में यह प्रवाह बनना ही सबसे ज़्यादा परिश्रम का काम है। इसके लिए इस

© NCERT not to be republished

प्रक्रिया में लौट-लौट कर उसी धुन के करीब पहुँचना होता है। जहाँ से रचना की शुरुआत हुई थी। यही धुन बनाती है–वे धुनें, जिनमें शब्द स्थान बनाने लगते हैं। इस प्रकार रचनाकार का अनुभव; उसके विचार उसके मन में ध्वनित होते शब्द सब मिलकर एक रचना की शुरुआत करते हैं।

बस, यहीं से प्रारंभ होती है–रचावट की वह खास प्रक्रिया, जो रचना का रूप गढ़ने लगती है। यहीं वह अपने भाव, विचार और उसकी रचावट पर काम करता रहता है।

कहानी में यथार्थ जीवन-दृश्य बड़ा काम करते हैं। कभी उसकी शुरुआत एक दृश्य से हो सकती है, तो कभी किसी संवाद से। कोई मनःस्थिति भी कहानी लिखवा सकती है और कोई घटना या स्थिति भी। लेकिन उसे कथा के रूप में बाँधने के लिए भाव-विचार और उसकी रचावट का इत्मिनान बहुत ज़रूरी है।

यह एक कला को कहने की इच्छा से, जो कहानी के प्लॉट या कथानक के साथ जुड़ती जाती है। पर यही कहानी के अंत को पहले से तय नहीं होने देता। बस उस कथ्य को रचना के रास्ते पर धकेल-भर देता है। कहानी का कथ्य इसी रास्ते पर पकता है। कहानी के अर्थों के रंग और गहरे इसी समय होते जाते हैं। कभी यह एक नया अनुभव बन जाती है और कभी अनुभवों में सुधार। यह एक ऐसा खेल है, जिसकी गिरफ़्त में आते ही हम दुनिया के लोगों, स्थितियों और जीवन को अपनी आँख से देखने लगते हैं। हमारे सुनने, सूंघने, छूने, खाने-पीने और स्वाद लेने का अंदाज़ कुछ अलग हो जाता है।

आगे के अध्यायों में रचनात्मक बिंदुओं को समझते हुए उपर्युक्त बातों को विस्तार से जानेंगे।

II. कविता लेखन

> कविता की मूल इकाई
> लय है। कविता ही क्यों,
> नृत्य की, संगीत की
> और ज़िंदगी की भी।
>
> *– हरभजन सिंह*
> *(चोला टाकियाँवाला)*

कविता कहना या शेर कहना आपने सुना होगा। अब हम कविता बनाएँगे यानी अब हम कविता लिखने जा रहे हैं। उर्दू में मुहावरा है– शेर कहना। यानी कविता की नहीं जाती है, कही जाती है। जब लिखने का रिवाज़ नहीं था, तब भी कविता थी। बोली जाती थी। सारे लोकगीत मौखिक हैं, बोले जाते हैं। लेकिन समय बदला। अब कविता भी लिखी जाती है–कलम से कागज़ पर या कंप्यूटर पर। पहले पेंसिल भी चलती थी। कवि भी कान पर पेंसिल रखते थे। पता नहीं, कब काम आ पड़े।

मुशायरे का एक चित्र

© NCERT not to be republished

कविता से कविता बनती है

पेंसिल, कागज़ तो उपकरण हैं–बाहर की चीज़ें। पहले तो मन में यानी भीतर कविता उपजनी चाहिए। वह कैसे होता है? लोग बताते हैं कि कविता से कविता खुलती है–निकलती है। कविताओं को पढ़ते-पढ़ते भीतर कविता बनने लगती है। लगता है, मैं भी कर सकती हूँ। ऐसा तो मैंने भी देखा है। ऐसे भाव तो मेरे मन में भी आते हैं। जैसे, नागार्जुन की यह कविता लें-

बहुत दिनों के बाद
अब की मैंने जी-भर देखी
पकी-सुनहली फ़सलों की मुसकान
बहुत दिनों के बाद
बहुत दिनों के बाद
अब की मैं जी-भर सुन पाया
धान कूटती किशोरियों की कोकिल-कंठी तान
बहुत दिनों के बाद
बहुत दिनों के बाद
अब की मैंने जी-भर सूँघे
मौलसिरी के ढेर-ढेर-से ताज़े-टटके फ़ूल
बहुत दिनों के बाद
बहुत दिनों के बाद
अब की मैं जी-भर छू पाया
अपनी गँवई पगडंडी की चंदनवर्णी धूल
बहुत दिनों के बाद
बहुत दिनों के बाद
अब की मैंने जी-भर तालमखाना खाया
गन्ने चूसे जी-भर
बहुत दिनों के बाद
बहुत दिनों के बाद
अब की मैंने जी-भर भोगे
गंध-रूप-रस-शब्द-स्पर्श सब साथ-साथ इस भू पर
बहुत दिनों के बाद

यह तो हम सब का अनुभव है। बहुत दिनों के बाद गाँव लौटने पर यही तो होता है। इस तरह एक इंसान का अनुभव सबका अनुभव हो जाता है। नागार्जुन ने अंत में लिखा–'गंध-रूप-रस-शब्द-स्पर्श सब साथ-साथ' ...। यह बात सीखने की है। ये हमारी पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, जिनसे हम संसार को देखते-सुनते-सूँघते-चखते-छूते हैं। एक कवि को लगातार चौकन्ना रहना पड़ता है। लगातार अपनी ज्ञानेन्द्रियों को जगाए रखना पड़ता है। काम के साथ कविता चलती है–ऐसा नहीं कि कविता लिखने का कोई खास क्षण होता हो। बल्कि कविता रचने का काम लगातार चलता रहता है। आपने कुछ देखा, उसे मन में टाँक लिया या फिर एक छोटी-सी डायरी में। कवि–लेखक, डायरी-कलम लेकर चलता है। कोई शब्द सुना, लिख लिया। दूसरे काम करते हुए भी भीतर-भीतर कविता की चक्की चलती रहती है। जैसे कि मुक्तिबोध कहते हैं–

विचार आते हैं–
लिखते समय नहीं
बोझ ढोते वक्त पीठ पर
सिर पर उठाते समय भार
परिश्रम करते समय
चाँद उगता है व
पानी में झलमलाने लगता है
हृदय के पानी में।

विचार आते हैं रोटियाँ सेंकते

© NCERT not to be republished

सर्वेश्वरदयाल 'सक्सेना' की मशहूर कविता '*बतूता का जूता*' को एक कविता-कार्यशाला में अलग-अलग अभिव्यक्ति दी गई–

बतूता का जूता

इब्न बतूता पहन के जूता
निकल पड़े तूफान में
थोड़ी हवा नाक में घुस गई
घुस गई थोड़ी कान में
कभी नाक को कभी कान को
मलते इब्न बतूता
इसी बीच में निकल पड़ा
उनके पैरों का जूता
उड़ते-उड़ते जूता उनका
जा पहुँचा जापान में
इब्न बतूता खड़े रह गए
मोची की दूकान में

–सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

इब्न बतूता पहन के जूता...

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की कविता को नरेश जी ने कुछ ऐसे पेश किया

मोरक्को से चले बतूता, पैदल अपनी शान में
सात बरस में चलते-चलते पहुँचे हिन्दुस्तान में
जो देखा सो लिखा, न देखा
तो भी लम्बी हाँकी,
गोल पिरामिड लिखकर
कोई गप्प न छोड़ी बाकी
गज़ब घुमक्कड़ थे, रहते थे अपनी ही तुकतान में
मन रमता था सदा नए जूतों के अनुसंधान में
इब्न बतूता, इन्हीं गर्मियों में आए भोपाल
हाल देख भोपाल ताल का हुए बड़े बेहाल
किसने सुखा दिया यह ताल
किसने काट दिए सब जंगल
किसने फैलाया यह जाल
जब तक यह सब जान न लो तुम
रहो पूछते यही सवाल
इससे तो अच्छा होता तुम रहते रेगिस्तान में
प्यास लगी अब हमें ले चलो पानी की दूकान में

कविता-कार्यशाला में नरेश सक्सेना के साथ बच्चों ने भी कविताएँ लिखीं!

1

चमगादड़ के घर में कैसी खातिरदारी –
हम भी लटकें
तुम भी लटको...

2

कभी लाल, कभी नीला, कभी पीला
आकाश भी
गिरगिट की तरह रंग बदलता है

3

सूख गया है ताल
समझो सूख गया भोपाल!

'चकमक' से साभार

© NCERT not to be republished

पिछले पृष्ठ पर दिए गए उदाहरण को ध्यान से देखिए। नरेश सक्सेना ने सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की कविता को भोपाल से जोड़ा, खासतौर से भोपाल में ताल के सूखने और इब्न बतूता को रेगिस्तान से जोड़ा और एक नयी रचना जन्मी। इसीलिए 'मोची की दूकान' की जगह 'पानी की दूकान' लिखा। ध्यान देने की बात है कि इस कविता में 'दुकान' का 'दूकान' लिखा जाना भी सौंदर्यानुभूति कराता है। यह कविता में छंद की अहम भूमिका को भी बताता है। तभी नरेश जी ने इसे ज्यों-का-त्यों ही लिखा है। दूसरी ओर बच्चों ने जब कविता लिखी तो चमगादड़ के उल्टा लटकने वाले स्वभाव को कभी बीते समय के खेल के मैदान में या फिर स्कूल में सजा पाए बच्चों से जोड़ा। इस तरह बच्चों ने अपने देखे-सुने पुराने अनुभव को नए अनुभव से जोड़कर रचना में नया प्रभाव पैदा किया है। दूसरी कविता में आकाश के रंग को गिरगिट के रंग बदलने से जोड़ना भी नयी रचना को लिखने में सहायक रहा। तीसरी कविता में भोपाल और ताल के एक दूसरे पर निर्भरता को लयात्मक ढंग से रखा गया है। इसमें नरेश जी की कविता से रचना संकेत भी लिया गया है।

इस तरह आप देखेंगे कि एक कविता, दूसरी नयी कविता को जन्म देती है। ज़रूरी नहीं कि वह पूरी तरह एक दूसरे से जुड़ी हो। कवि भी अपनी स्मृतियों में देखी-सुनी बातों, दृश्यों को टाँकता चलता है। उसे ही कभी-कभी वर्तमान अनुभव से जोड़कर अपनी कविता के भीतर रखता चलता है। **इसीलिए कविता में स्मृतियों की बड़ी भूमिका होती है।**

प्रेरणा क्या है?

कविता का कोई एक मुहूर्त नहीं होता। यह काम साँस लेने जैसा है। तो फिर प्रेरणा क्या है? सब लोग तो कविता नहीं लिखते। लेकिन लिख सकते हैं, अगर कविता पढ़ें, जीवन को ध्यान से देखने-समझने की आदत डालें। आप जो करना चाहते हैं वही तो करते हैं। डार्विन ने लिखा है कि **संवेग यानी 'इंस्टिंक्ट' भी 'अक्वायर्ड हैबिट्' यानी हासिल की हुई आदत है।** हम कोशिश करते हैं और फिर एक दिन कविता हमारी कलम में भी उतर जाती है। यही प्रेरणा है। शमशेर बहादुर 'सिंह' कहते हैं कि उन्होंने अपनी मशहूर कविता '*टूटी हुई बिखरी हुई*' इसी तरह पहले सोच कर, कोशिश करके अपने कमरे की चीज़ों को एक-एक कर देखते हुए लिखी। चीज़ें पहले से जमा रहती हैं। वे मौका पाकर बाहर आ जाती हैं। तो क्या हर किसी के पास कविता की भाषा होती है? पहली बात तो यह कि कविता की अलग से कोई भाषा नहीं होती। भाषा तो सबकी है—एक ही है। कवि की भी वही भाषा है। वह पहले से है। उसे सिर्फ़ नए ढंग से उठाना है। शेक्सपियर कहते हैं—

> *I have been to the feast of languages and have stolen the scraps (मैं भाषा के भोज में गया और वहाँ से टुकड़े उठा लाया।)*

यही तो सब करते हैं। यही तो आप भी करेंगे। अपनी भाषा को करीब से पहचानिए। उसके शब्दों, मुहावरों, ध्वनियों को। शेक्सपियर यह भी कहते हैं—

> *So, all my best is dressing old words and spending again what is already spent. (मैंने यही तो किया—पुराने शब्दों को नये तरीके से सजाया और जो पहले से ही खर्च हो चुका था उसे फिर से खर्चा)*

© NCERT not to be republished

टूटी हुई, बिखरी हुई

टूटी हुई, बिखरी हुई चाय
की दली हुई पाँव के नीचे
पत्तियाँ मेरी कविता
बाल, झड़े हुए, मैल से रूखे, गिरे हुए, गर्दन से फिर भी चिपके
...कुछ ऐसी मेरी खाल,
मुझसे अलग-सी, मिट्टी में
मिली-सी

दोपहर-बाद की धूप-छाँह में खड़ी इंतज़ार की ठेलेगाड़ियाँ
जैसे मेरी पसलियाँ ...
खाली बोरे सूजों से रफ़ू किए जा रहे हैं ... जो
मेरी आँखों का सूनापन है
ठंड भी एक मुस्कराहट लिए हुए है
जो कि मेरी दोस्त है।

– शमशेर बहादुर सिंह

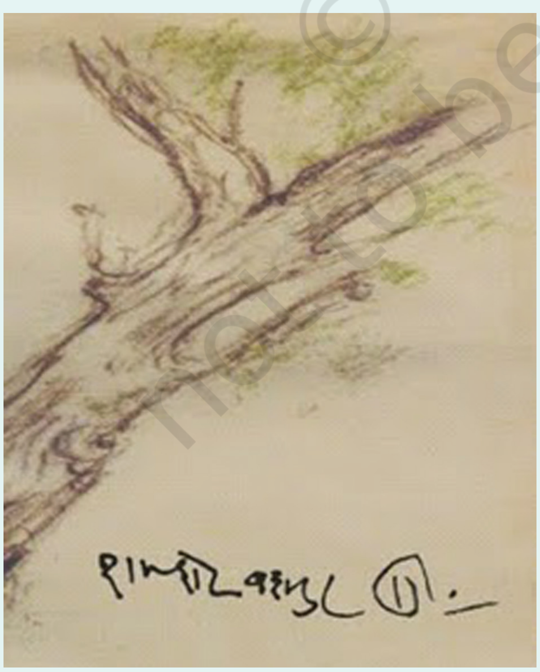

कविता का जन्म

क्या आप जानते/जानती हैं–मोती कैसे बनता है? कहीं से अचानक धूल का एक कण सीपी के कवच के भीतर राह बना ले तो उसके खुजली मच जाती है। अब उसके नाखून तो होते नहीं कि वह उसका सुखद उपयोग करे, तो खुजली की प्रतिक्रिया में उसके पूरे वजूद से एक खास तरह का द्रव निकलता है और उस मामूली–से धूल-कण के चारों तरफ लगता है मोर्चाबंदी करने। यही आंतरिक स्राव धीरे-धीरे मोती के रूप में जमने लगता है।

कविता भी प्राय: ऐसे ही बनती है–कोई एक चोट लगी, किसी धूलकण का प्रवेश हुआ, कहीं कुछ खटका या हमारे आस-पास कोई ऐसी खुशी या दुख जो परिवर्तन ले आए। तो पूरे वजूद में एक बेचैनी मच जाती है–ये कई तरह के आंतरिक उद्वेलन अंतत: एक तरह की संरचना में गुलिया-कर जम जाते हैं और चमकने भी लगते हैं!

मा निषाद! प्रतिष्ठां त्वमगम: शाश्वतीं समा:।
यत्क्रौंच मिथुनादेकमबधी: काम मोहितम्।।

– बाल्मीकि

सीपी और मनुष्य में फर्क यह है कि सीपी को स्राव गुलियाने-ज़माने में अपनी तरफ़ से कुछ मेहनत नहीं होती! जो होता है, स्वयमेव होता है किंतु मनुष्य को अपनी प्रतिक्रियाएँ गुलियाने में अपनी स्वाभाविक उमड़न को एक नियत संरचना देने में, कभी-कभी कई-कई ड्राफ़्ट बनाने होते हैं! इसीलिए वर्ड्स्वर्थ ने कविता को–"spontaneous overflow of powerful feelings ... recollected in tranquility" कहा।

© NCERT not to be republished

गतिविधि – 1 Activity–1

(कुछ आधुनिक कुछ पुरानी कविताएँ पढ़ें) इनमें आकाश, बादल, शाम, धूप, सूरज, शरद जैसे शब्द, प्रयोगों पर ध्यान दें। आप पाएँगे कि ये शब्द पुराने समय से लेकर अब तक कविताओं में तरह-तरह से प्रयुक्त होते रहे हैं, अब–

- अपने पोटफ़ोलियो के लिए ऐसी-दो कविताओं (कवि के नाम के साथ) को चुनें।
- यह ध्यान रखें कि इनमें इन शब्दों का प्रयोग अलग-अलग तरीके से किया गया हो।
- अपने इस संचयन में यह टिप्पणी भी लिखें कि ये प्रयोग कैसे अलग हैं।
- अब उन्हीं शब्दों का प्रयोग करते हुए आप भी कुछ नयी काव्य पंक्तियाँ लिखें।

Read few poems (including contemporary poems). Observe closely how the words 'sky', 'cloud', 'sun', 'daylight', 'moon' and 'evening' are used. You might have noticed that these words have been used in different ways in different poems.

- For your portfolio, select two poems (mention the Poet's name) where these words have been used in different ways.
- Observe how these words are used in different ways.
- Create a few new verses using these words.
- Include your comments and poems in your portfolio.

भाषा के साथ बर्ताव

भाषा जो सबकी है, पहले से है उसे नयी तरह से बरतना। आपने भी लोगों को ध्यान से बोलते सुना होगा। आयरिश लेखक जॉन सिंज़ अपने कमरे के एक छेद से कामगार स्त्रियों को बातें करते सुना करते थे, जिससे उन्होंने भाषा के नये ढंग सीखे। नागार्जुन की कविता में भी आप देख सकते हैं कि उन्होंने 'अबकी', 'मौलसिरी', 'टटके' जैसे बोलचाल के शब्दों का व्यवहार किया है। भवानी प्रसाद मिश्र कहते हैं कि 'जिस तरह तू बोलता है उस तरह से लिख।' नागार्जुन कहते हैं 'जो देखो वो लिखो।' लेकिन यह देखना भी कई तरह का हो सकता है। रघुवीर सहाय की इस कविता को लें–

कौंध। दूर घोर वन में मूसलाधार वृष्टि
दुपहर – घना ताल – ऊपर झुकी आम की डाल
बयार – खिड़की पर खड़े, आ गयी फ़ुहार
रात – उजली रेती के पार;
सहसा दिखी शांत नदी गहरी।

यहाँ पानी के अनेक संस्मरण हैं। सारी यादों को एक साथ जोड़ दिया गया है और इस तरह बिखरे हुए अनुभव, भटकी हुई यादें एक विषय यानी पानी से जुड़ जाती हैं। सब कुछ को स्मृति में जमा करना पड़ता है और फिर कल्पना के सहारे उन्हें जोड़ना पड़ता है। अज्ञेय की इन पंक्तियों को लें–

क्षितिज ने पलक सी खोली
तमक कर दामिनी बोली

यह बिजली चमकने का दृश्य है। लगता है जैसे– दूर धरती-आकाश दो पलकों की तरह खुले और कौंध हुई। दामिनी यानी बिजली दमक कर यानी रोष से बोली। यहाँ तुलना भी की जा रही है। एक चीज़ को दूसरी चीज़ से मिला कर देखा जा रहा है। ऐसे ही उपमाएँ बनती हैं। फिर आगे बिंब बनते हैं।

© NCERT not to be republished

निराला की पंक्तियाँ हैं–

डालियाँ बहुत सी सूख गईं,
उनकी न पत्तियाँ हुई नई,
आधे से ज्यादा घटा विटप,
बीज को चला है ज्यों क्षण-क्षण

यह पतझड़ का पूरा बिंब है, जिसमें पेड़ के फिर से बीज की ओर चलने का ज़िक्र है। लेकिन इसी 'बीज को चला' में पुन: सृष्टि की आशा भी है, जो कि वसंत है। इस तरह अपनी जटिलता में यह पद एक साथ पतझड़ और वसंत से जुड़ा है।

भाषा की कुछ बातें और नागार्जुन की कविता में हमने देखा कि कैसे सभी ज्ञानेन्द्रियाँ एक साथ काम कर रही हैं। आपको निरन्तर ध्वनियों को पकड़ना है। कबीर 'गगन घटा घहरानी' कह कर घने बादलों के घुमड़ने और उनके गर्जन को व्यक्त कर देते हैं। त्रिलोचन ने भी बरसात की ध्वनियों को पकड़ा है–

भरी रात भादों की ... पथ ... लपका वह कौंधा
दीप्ति भर उठी आँखों में इतनी, फिर हम तुम
कुछ भी पकड़ सके न डीठ से; छाया चौंधा।
तड़ तड़ तड़त्तड़ाड़ ध्राङ् ध्रा ध्राङ ध्रङ ध्रुम्

अंतिम पंक्ति की ध्वनियों, विशेषकर 'ड़' तथा 'ङ' को देखें। हर वस्तु की, हर अनुभव की अपनी ध्वनि होती है, आपको उसे ढूँढ़ना पड़ता है। पंत ने 'झरते हैं झाग भरे निर्झर' में 'झ' ध्वनि से झरने के नाद को व्यक्त किया। दूसरी और दिनकर ने नदी के किनारे की चाँदनी रात की खामोशी को इस तरह व्यक्त किया–

गंडकी सुप्त थी रेतों में
पंछी चुप नीड़ निकेतों में
था रोर शोर अग में जग में
चाँदनी सजग थी जग भर में

कविता और बिंब

आधुनिक कविता शब्द-चित्रों यानी बिंबों में ही बात करती है। बिंबों की भाषा एक कूट भाषा होती है– रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों में भी कुछ बिंब समाहित होते हैं– वस्तुओं/भावों/स्थितियों का शब्द-चित्र जिनका साम्य नाटकीय ढंग से कविता उद्घाटित करती है

कौन बूढ़ा दर्जी
बादलों की कैथी
सी रहा है ऐसे
तेज़ हवा की सुई से?
वे सुनहरे धागे
टिमक रहे जब-तब
इधर-उधर और टपक रही हैं उसकी
आँखें थकान से।

यदि आपने किसी बूढ़े दर्ज़ी को फटे सुथन्ने की मगन मरम्मत करते देखा है और बूँदा-बाँदी के बीच बिजली चमकती हुई भी देखी है, तो समझेंगे कि दो चित्र एक ही चित्र में पूर दिए गए हैं जैसे – रस्सी पूरी जाती है। दो तरह की घटनाओं में साम्य का उद्घाटन आपको थोड़ा चकित करता है, और उत्सुकता बूढ़े दर्ज़ी के विषय में जगती है– अचानक वह अपने अँधेरे कोने से उठकर कविता का नायक हो जाता है। इस पूरी प्रक्रिया में आँखे भी खुलती हैं और चित्र भी।

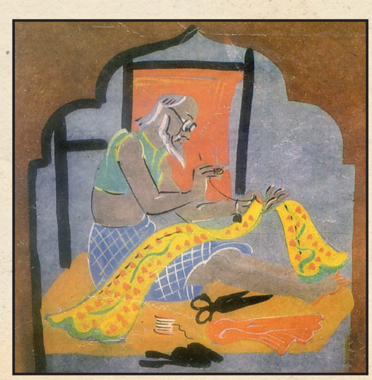

© NCERT not to be republished

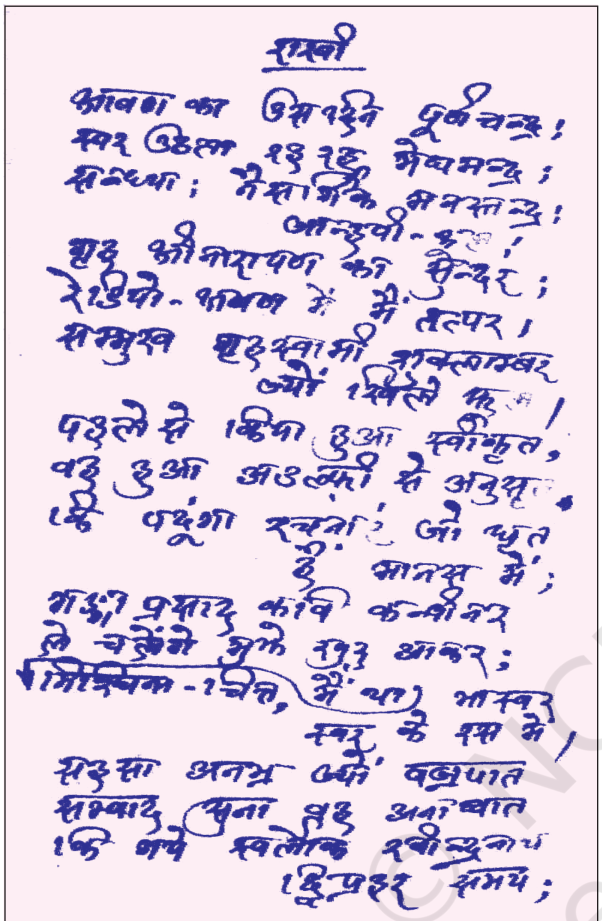

निराला की हस्तलिपि में उनकी एक असंकलित कविता 'बहुवचन' से साभार

फिर अगला सवाल छंद और तुक का भी है। ध्वनियाँ ही लय बनाती हैं। संगीत बनता है। लयों की बनी हुई पद्धति या ढाँचा छंद है। हर कवि को उन्हें सीखना पड़ता है। मेहनत करनी पड़ती है। धीरे-धीरे वे छंद इतने अपने हो जाते हैं कि खुद-ब-खुद पंक्तियाँ उन्ही साँचों में ढलने लगती हैं। फिर निराला जैसे कवि नये छंद भी बनाते हैं। लेकिन सच्चा कवि छंद के लिए रुकता नहीं। अमेरिका के कवि वाल्ट ह्विटमैन ने गद्य में महान् कविताएँ लिखीं।

हिंदी में निराला की 'नये पत्ते' की कविताएँ पढ़ कर देखिए। तब आपको यह भी लगेगा कि कविता किसी भी विषय, किसी भी चीज़ पर लिखी जा सकती है। निराला ने 'गर्म पकौड़ी' पर, नज़ीर अकबराबादी ने 'तिल के लड्डू' पर, नेरूदा ने 'टमाटर' और 'पायजामा' पर और सुकांत भट्टाचार्य ने 'माचिस की तीली' पर कविताएँ लिखीं। मराठी के नामदेव ढसाल, नारायण सुर्वे जैसे कवियों ने अपने जीवन के निजी पक्षों पर भी कविताएँ लिखीं। ज़रूरत है–उस वस्तु के भीतर जाकर सत्व को खोजने की। गालिब कहते हैं कि 'कतरे में दरिया को देखना ही वास्तव में देखना है। लेकिन इसके लिए लंबी और गहरी तैयारी ज़रूरी है। तब सिर्फ़ कविता पढ़ना काफ़ी नहीं होगा। तब सब कुछ पढ़ना-जानना होगा।'

देखें गतिविधि/Activity 2 पृष्ठ 44

दर्शन, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति और विज्ञान सब कुछ का अध्ययन ज़रूरी होगा। कबीर महान् कवि हैं और दार्शनिक भी। तुलसीदास भी कवि, दार्शनिक हैं। निराला और प्रसाद भी। मुक्तिबोध इतिहास और राजनीति के विद्वान हैं और अज्ञेय सब कुछ के ज्ञाता। इस तरह आपको भी सब कुछ जानना-समझना

© NCERT not to be republished

होगा। लेकिन जैसा कि अकबर इलाहाबादी ने लिखा है–*'इश्क को दिल में दे जगह अकबर/इल्म से शाइरी नहीं आती'*। इश्क मतलब प्रेम–सबसे प्रेम। दुनिया की छोटी-से-छोटी, तुच्छ-से-तुच्छ चीज़ और प्राणी से प्रेम और सह-अनुभूति। दूसरों के दु:ख-सुख में शामिल होना। बॉदलेयर की एक कविता 'गली के खाज भरे कुत्तों' के बारे में है। नागार्जुन की 'मादा सूअर' और उसके 'छौनों' के बारे में। मुकुटधर पाण्डे की 'खोंमचे वाले' के बारे में और कीट्स की 'मटर की छीमियों और कद्दू' के बारे में। **कविता करने का मतलब है सब कुछ से प्रेम करना। कुछ भी कविता के बाहर नहीं है।**

कविता में किसी देखी गई वस्तु या वस्तुओं, दृश्यों, घटनाओं और मन में उठने वाली भावनाओं और विचारों को इस प्रकार पिरोना होता है कि पाठक या श्रोता पर उसका प्रभाव पड़े। कविता में व्यक्त की गई भावनाएँ उसकी संवेदना को छुएँ। इसका अर्थ यह हुआ कि कविता लिखने से पहले हमें चीज़ों से, दृश्यों-घटनाओं से गहरे तक जुड़ना होता है। उस जुड़ाव की मन पर जो प्रतिक्रिया होती है, उसी से कविता बनती है और तभी वह पढ़ने या सुनने वालों को अपने से जोड़ती है।

पैने दाँतों वाली

धूप में पसरकर लेटी है
मोटी-तगड़ी, अधेड़, मादा सूअर ...

जमना-किनारे
मखमली दूबों पर
पूस की गुनगुनी धूप में
पसरकर लेटी है
यह भी तो मादरे हिंद की बेटी है
भरे-पूरे बारह थनों वाली!

लेकिन अभी इस वक्त
छौनों को पिला रही है दूध
मन-मिज़ाज़ ठीक है
कर रही है आराम
अखरती नहीं है भरे-पूरी थनों की खींच-तान
दुधमुँहे छौनों की रग-रग में
मचल रही है आखिर माँ की ही तो जान!

जमना-किनारे
मखमली दूबों पर
पसरकर लेटी है
यह भी तो मादरे हिंद की बेटी है
पैने दाँतों वाली ...

– नागार्जुन
प्रतिनिधि कविताएँ

© NCERT not to be republished

कविता का विषय

एक ज़माना था जब मानते थे कि कविता उदात्त विषयों और महाभावों के इर्द-गिर्द छंद और अलंकार के ताने-बाने से बुनी जाती है– 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया!' यह चदरिया ओढ़कर मनुष्य मन एक अलग तरह का सुख महसूस करता है, एक अलग तरह की आश्वस्ति! करीब-करीब वैसी आश्वस्ति जो आप माँ के आँचल में महसूस करते होंगे/करती होंगी। इसी सुख को 'रस' कहते हैं, नौ तरह के रस माने गए हैं– शृंगार, वीर, वात्सल्य, करूणा, शांत, वीभत्स, हास्य, रौद्र और अद्भुत! पुराने लोग मानते थे कि एक बार में एक ही रस का अवगाहन करें तो अच्छा। नयी कविता यानी विश्वयुद्ध के बाद की कविता ने बहुत-से चलन तोड़े। उसमें से एक चलन यह कि कविता का विषय कुछ भी हो सकता है, कि एक साथ कई रसों और कई विपरीत मन:स्थितियों का अवगाहन और विलयन आधुनिक कविता ने मंचित किया–इससे उसकी दूरूहता बढ़ी लेकिन वह जीवन की वास्तविकता के और करीब हुई। वास्तविक जीवन में भी ऐसा शायद ही होता है कि केवल एक भाव या एक ही रस आपके चित्त पर छाया रहे। दया, करुणा, प्रेम, घृणा, क्रोध और जुगुप्सा–कई भावों का धुँधलका-सा चित्त पर छाया रहता है। माँ की गोदी में लेटे रहने का संतोष वात्सल्य और शान्त रस का उदाहरण मानिए तो लेटे-लेटे ही परीक्षा की चिन्ता या किसी बूढ़े भिखारी की स्थिति पर क्षोभ या किसी भी अन्याय पर गुस्सा–इन भावों से भी आप पूर्णतया तो मुक्त नहीं होते।

शब्द

कविता शब्दों से बनती है। जिस तरह चित्र रंगों और रेखाओं से, संगीत ध्वनियों से, मूर्ति पत्थर और मिट्टी से, वैसे ही कविता शब्दों से बनती है। मलार्मे ने अपने एक मित्र से कहा था– 'कविता विचारों से नहीं, शब्दों से बनती है।' और हर कवि को अपनी भाषा के शब्दों से दोस्ती करनी पड़ती है। गहरी अंतरंगता बनती है, तब कविता बनती है। कालिदास ने इस अंतरंगता को 'वाक्' और 'अर्थ' की एकता कहा था। सही शब्द की तलाश से ही कई बार कविता शुरू होती है। कई बार कोई धुन, कोई एक टुकड़ा, या कोई याद। ध्रुव शुक्ल की एक कविता है 'हा'। इसमें जैसे ककहरा लिखा जाता है वैसे ही उन्होंने 'ह' अक्षर से कविता रची है। जैसे–

ह हा हि ही हु हू हे हो हौ हं ह:
ह ह ह ह ह ह ह ह ह ह ह ह ह
हा हा हा हा हा हा हा हा हा हा
हा हा ....
ह: ह: ....

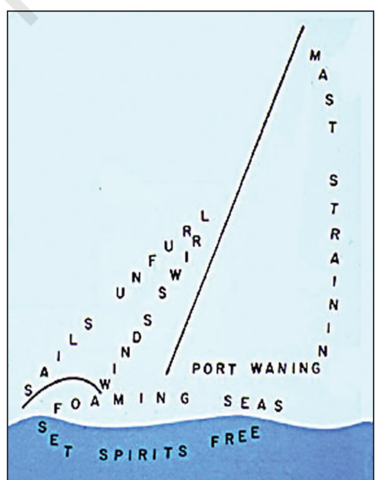

आकृति कविता का एक नमूना

यह एक अद्भुत कविता है, हँसने के इतने प्रकार हैं और अंत में एक सत्ताधीश का दंभ उभरता है। इसी तरह एक अंग्रेज़ी कविता है, जॉर्ज हर्बट की–सेल *(SAIL)*, जिसमें केवल एक ही शब्द है– *SAIL* और उसे इस तरह पूरे पृष्ठ पर सजाया गया है मानों 'एक जहाज़ समुद्र में बहुत दूर चला गया हो'

© NCERT not to be republished

गतिविधि–3 | Activity–3

- कविताओं को तरह-तरह से लिखने की परंपरा रही है। वर्णों-पंक्तियों की संख्या के आधार पर इन्हें अलग-अलग नाम दिए जाते रहे हैं। जैसे– दोहा, चौपाई, छप्पय, बरवै, हाइकू, सॉनेट।
- अपने पोर्टफ़ोलियो के लिए इनकी विशेषताएँ लिखिए। अब अलग-अलग पाँच ऐसी कविता/छंदों का संग्रह करें।

- There are various forms and styles of writing poems. They have been given different names like 'haiku', 'limerick', 'couplet', 'sonnet' 'ballad', 'ode' and 'lyric'.
- For your portfolio collect five poems (one for each) for any five forms mentioned above and describe their features.

© NCERT not to be republished

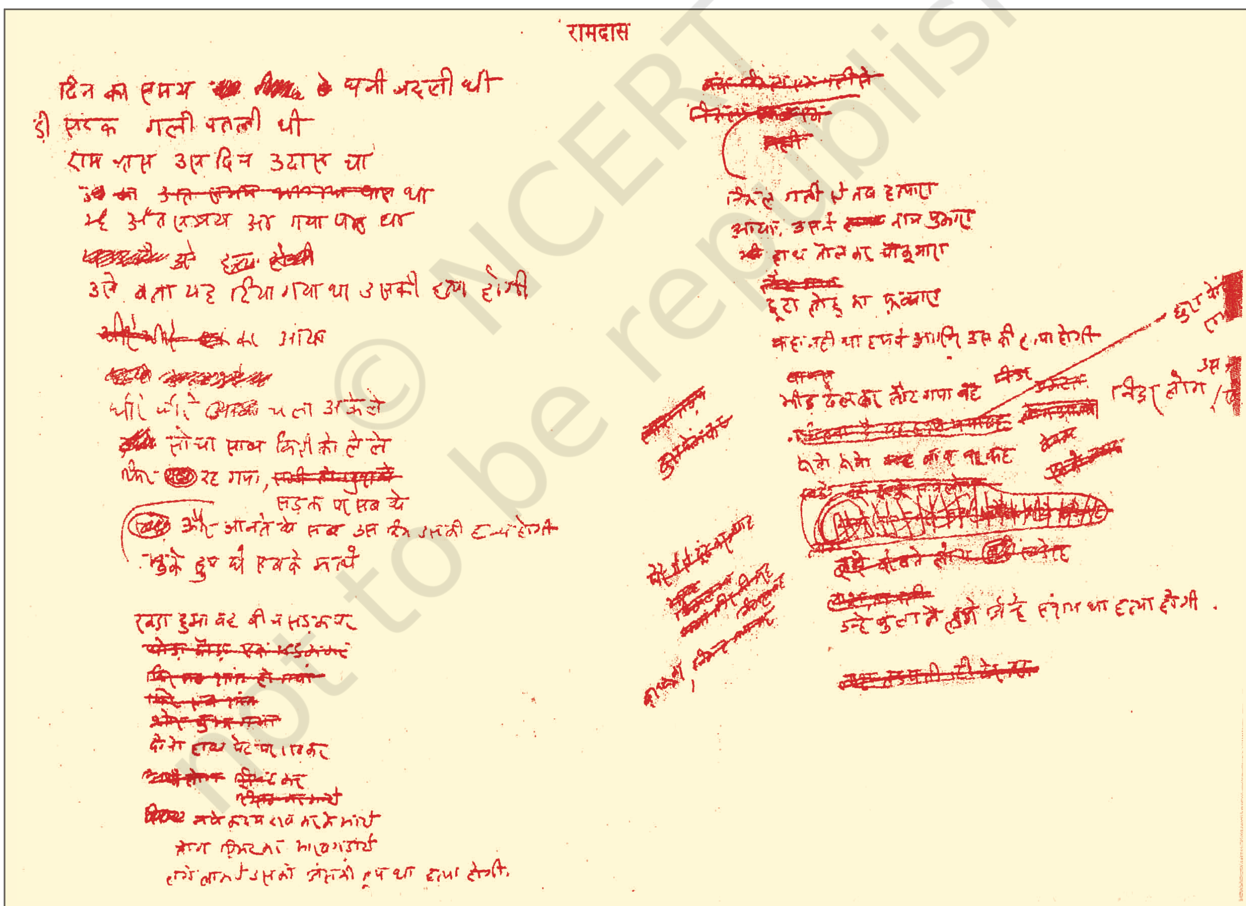

'रामदास' कविता का यह प्रथम प्रारूप है। कविता के दौरान शब्दों और वाक्यों में दिखने वाले परिवर्तन यह दिखाते हैं कि सृजन प्रक्रिया के दौरान शिल्प भी भाव और परिवेश से निर्धारित होता है।

लय

इसी तरह कोई एक धुन या कोई एक लय पूरी कविता को जन्म दे सकती है। **सूरदास** का प्रसिद्ध पद है–'आजु तो बधाइ बाजै मंदिर महर में'। इसे पढ़ते हुए लगता है जैसे कोई उन्मत्त लय आपको घेरती जा रही है और आप खुशी से भर जाते हैं, आप नाचने लगते हैं। ऐसे ही **तुलसीदास** का 'हनुमानबाहुक' आपको ओज, शक्ति और विश्वास से भर देता है। कभी-कभी कोई एक-आध पंक्ति आपके भीतर गूँजती रहती है और उससे एक नयी कविता बन जाती है। **मख्दूम** की कविता है–'आपकी याद आती रही रात भर'। इस पंक्ति को लेकर **फैज़** ने भी एक शानदार कविता लिखी। तो ऐसे भी कविता होती है। **सुभाष मुखोपाध्याय** की एक कविता है–'येते येते ......'। आप हिंदी में एक कविता बनाएँ 'चलते चलते ....' से। जैसे-

चलते चलते
दूर दूर कुछ दूर और तब
चलते चलते
नदी मिलेगी
पानी छलछल
रेती गीली
चलते चलते
नाव मिलेगी
पार मिलेगा.....

आप इसे आगे बढ़ाते जाएँ। और फिर इसे देखिए–

चल चल
घर चल
शाम हुई अब घर चल
पंछी लौटे घर चल ....

एक उदाहरण लें–'दूर है आकाश, धरती पास है'। इसे पहली पंक्ति बनाकर आप एक कविता लिखें। उसे बढ़ाते जाएँ।

आप बस लिखें। जैसे बोलते हैं वैसे लिखें। जो भी सुनते हैं उसे कविता में डाल दें। जो भी देखते हैं उसे कविता में डाल दें। कविता लिखने का नियम यही है कि इसका कोई नियम नहीं है। बस कविताएँ पढ़िए, पढ़ते रहिए और तब आपके भीतर भी एक कविता जन्म लेगी। यह कुछ ऐसा है जैसे कलम (grafting) लगाया वैसे ही कविता की भी कलम लगती है।

अब आप अपनी खिड़की पर खड़े होकर बाहर देखिए और जो भी देख रहे हों, सुन रहे हों, उसे लिखते जाइए इस तरह–

मैंने खिड़की खोली
बाहर धूप है
आकाश दूर है खूब नीला बड़ा 70 एम एम का पर्दा
हवा कम है पेड़ खड़े हैं पत्ते ज़रा-सा हिल रहे हैं
गाड़ियाँ चल रही हैं मोटर सायकिल तेज़ी से गुजरी
एक बच्चा दौड़ता जा रहा है
कोई जोर से हँसा–कौन?
घर की घंटी बजी–कौन?
एक गिलहरी मुझे देख रही है, कुछ बोली–कैसे?
एक कौआ भी है–चालाक धूर्त शातिर होशियार बुद्धिमान?
सोचता हूँ दीवार में खिड़की न हो तो?
तो क्या होगा? ...

कोई भी एक दृश्य लीजिए–उसका एक छोटा-सा रेखाचित्र शब्दों से इस तरह खींचिए कि अर्थ के पीछे एक और अर्थ झाँकता नज़र आए जैसे–

***पहेली** में–तीतर के दो आगे तीतर*
तीतर के दो पीछे तीतर

© NCERT not to be republished

आगे तीतर, पीछे तीतर
बोलो कितने तीतर।

तीतर के पीछे एक और तीतर न भी हो और अभिधा में ही बात कही जाए तो उसमें एक **नाटकीय बाँकपन** लाना होगा, तभी बात कविता की श्रेणी में आएगी।

आप विनोद कुमार शुक्ल का उपन्यास पढ़िए 'दीवार में एक खिड़की रहती थी'। कविता दीवार में खिड़की ही तो है। वह हर दीवार में हर घर में होती है। उसे कोई भी खोल सकता है। और उसके पार एक नयी दुनिया में पहुँच सकता है। केदारनाथ सिंह की इस कविता को लें–

लिखूँगा
एक न एक दिन ज़रूर लिखूँगा ......
....
एक-एक गंध
एक-एक स्पर्श को लिखूँगा
एक-एक धड़कन
एक-एक साँस को लिखूँगा
एक न एक दिन ज़रूर लिखूँगा

यह प्रभाव तभी पैदा हो सकता है, जब कवि कविता के विषय से खूब अच्छी तरह–खूब गहराई तक परिचित होता है। यह कौशल कविता लिखना शुरू करते ही किसी नये कवि में नहीं आ जाता। धीरे-धीरे, अभ्यास से विकसित होता है। लेकिन हाँ, चीज़ों को देखने, उनसे जुड़ने और उनके अंदर छिपी कविता को पहचानने की दृष्टि शुरू से ही विकसित करनी होती है।

देखें गतिविधि/Activity 4 पृष्ठ 55

महादेवी वर्मा की शुरुआती अभिव्यक्ति

तुतला उपक्रम

ठंडे पानी में नहलातीं,
ठंडा चंदन इन्हें लगातीं,
इनका भोग हमें दे जातीं,
फिर भी कभी नहीं बोले हैं।
माँ के ठाकुर जी भोले हैं।

यह तुकबन्दी उस समय की है, जब मेरी अवस्था छः वर्ष से अधिक नहीं रही होगी। ... माँ शीतकाल में भी पाँच बजे सबेरे ठंडे पानी से स्वयं स्नान कर और मुझे भी नहला कर पूजा के लिए बैठ जाती थीं। मुझे कष्ट होता था और मेरी बाल बुद्धि ने अनुमान लगा लिया था कि उनके बेचारे ठाकुर जी को भी कष्ट होता होगा। मैं सोचती थी कि यदि ठाकुर जी कुछ बोलें तो हम दोनों के कष्ट दूर हो जावें, पर वे कुछ बोलते ही नहीं थे।

साभार, महादेवी साहित्य-1

© NCERT not to be republished

कविता लिखने की शुरुआत

जितने दिनों मैं गाँव में रहा, मेरी कविता इन गुरूपर्वों का अनिवार्य अंग बनी रही। कई दिन पहले ही मुझे जैसे हौल लग जाता कि अबकी कौन-सी कविता पढूँगा। पिछले सालवाली तो खो-खवा चुकी होती। नई लिखनी पड़ती। घर से स्कूल जाते हुए, जमात में बैठे हुए, वापस आते हुए, खेलते हुए, मन सतरें जोड़ने में लगा रहता। कभी काफ़िये न मिलते; काफ़िये मिलते तो कहने योग्य बात न होती। 'फर फर फराटे कियूँ रेल पई, अज्ज शाइद वल ननकाणे दे जा रही है' जैसी सतरें उन कविताओं में होतीं।

– चोला टाकियाँवाला, हरभजन सिंह

रोज़गार और कविता

यह अनायास नहीं है कि बचपन से ही खेल-खेल में कविता बनाने की जो शुरुआत होती है। वह आगे चलकर आम आदमी की रोज़ी-रोटी का साधन भी हो जाती है, दरअसल कविता की लय जीवन के साथ घुल-मिल जाती है तो जीने का सलीका देती है–बहुत से बड़े कवियों ने बाज़ार से कविता का रिश्ता बनाने की पहल की है–

चने ज़ोर गरम
चना बनावैं घासीराम। निज की झोली में दूकान
चना चुरमुर चुरमुर बोलै। बाबू खाने को मुंह खोलै
चना खावै तौकी मैना। बोलै अच्छा बना चबैना
चना खाय गफ़ूरन मुन्ना। बोलै और नहीं कुछ सुन्ना।

– भारतेंदु हरिश्चंद्र

जाड़ों में फिर खुदा ने खिलवाये तिल के लड्डू
हर एक ख्वांचे में दिखलाये तिल के लड्डू
कूचे गली में हर जा बिकवाये तिल के लड्डू

– नज़ीर अकबराबादी, जीवनी और संकलन

क्या प्यारी-प्यारी मीठी और पतली ककड़ियाँ हैं
गन्ने की पोरियाँ हैं, रेशम की तकलियाँ हैं।
फ़रहाद की निगाहें, सिरी की हंसेलिया हैं
मजनूँ की सर्द आहें, लैला की अंगुलिया हैं।
क्या नर्मोनाज़ुक इस आगरे की ककड़ी
और जिसमें खास काफ़िर सिकंदरे की ककड़ी
जो एक बार यारों इस ज़ाकी खाये ककड़ी
फिर जा कहीं कि उसको हरगिज़ न भाये ककड़ी
दिल तो 'नज़ीर' गश है यानी मंगाये ककड़ी।
ककड़ी है या कयामत, क्या कहिये हाय ककड़ी।

– नज़ीर अकबराबादी, जीवनी और संकलन

आम आदमी भी बाज़ार से कविता को जोड़ने की खूबसूरत कोशिश करता रहता है–

कच्ची गरी ताज़ा। चार आठ आने में खाजा
ताज़गी नयी पा जा। बन जाएगा तू राजा

आपका ध्यान किधर है,
साड़ी की दुकान इधर है।

मेट्रो निर्माण में काम करने वाले मज़दूरों की सावधानी बरतने के लिए लिखी गई कविता देखिए–

पैर में जूता सिर पर टोपी
सदा सलामत उसकी रोज़ी रोटी

III. कहानी लेखन

> जीवन को अपनी आँखों से देखो और जैसा इसे पाओ वैसा ही इस पर लिखो।
>
> *– प्रेमचंद*

अनुभव जीवन में प्रायः हर समय होते रहते हैं। घर पर बैठे, आस-पास घूमते या कहीं दूर यात्रा के दौरान भी। लेकिन हर अनुभव कहानी नहीं बन जाता। प्रायः एक दृश्य कहानी का बीज-विचार बनता है। यह दृश्य हमारे रोज़मर्रा के कार्य-व्यापार पर आधारित भी हो सकता है और कभी-कभार अनायास उपस्थित हुआ भी।

अधिक प्रभावी वही दृश्य होगा जिसे आपने करीब से देखा-परखा हो। जिसकी ज़्यादा-से-ज़्यादा जानकारी आपको हो। यही होती है कहानी की कच्ची सामग्री। यही कहानीकार का अनुभव बनता है। इससे कहानी की विषय-वस्तु बनती है। इस पर आधारित कहानियों में एक आंतरिक शक्ति होती है। यही वह शक्ति है जो मर्म को छूती है।

सहृदय की नज़र

सहृदय व्यक्ति अपने चारों ओर जो कुछ देखता है, उससे प्रभावित होता है। उसे हर तरफ़ अपनी कहानी के लिए कच्ची सामग्री फैली नज़र आती है। लेकिन हर दृश्य कहानी नहीं बन जाता। कथ्य की खोज का काम पूरा करने के लिए अंतःप्रेरणा ज़रूरी है। यही रचना को आत्मा से जोड़ती है। उससे जुड़कर ही हम सत्य की अनुभूति कर पाते हैं। इसी के ज़रिये कहानी लिखने वाला व्यक्ति अंतश्चेतना की उस गहन पीड़ा तक खिंचा चला जाता है जो वह अनुभव कर चुका होता है, लेकिन उससे मुक्त नहीं हो पाता।

अक्सर, आपने लोगों को यह कहते सुना होगा कि अमुक दृश्य आज भी आँखों में बसा हुआ है। उसका यह बस जाना ही बताता है कि दृश्य में कुछ ऐसा अवश्य रहा होगा जिसकी वजह से वह अविस्मरणीय बन गया। उससे मुक्ति तभी हो सकती है जब आप कहानी में उसे उतारकर रख दें। आइए एक कहानी पढ़ें–

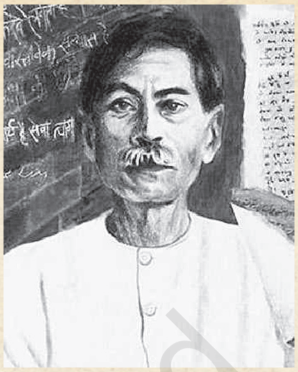

कथानक मैं इस दृष्टि से बुनता हूँ कि मानव-चरित्र में जो कुछ सुंदर है, वह उभरकर सामने आ जाए। यह एक उलझी हुई प्रक्रिया है। कभी इसकी प्रेरणा एक व्यक्ति से मिलती है या कभी किसी घटना से या किसी स्वप्न से, लेकिन मेरे लिए यह ज़रूरी है कि मेरी कहानी का कोई मनोवैज्ञानिक आधार हो।

–प्रेमचंद

© NCERT not to be republished

पार्क में रोता हुआ आदमी

जयराम पार्क के पास से गुज़र रहा था। तभी उसने किसी की रोने की आवाज़ सुनी। रोता हुआ वह आदमी कह रहा था–"हाय मैं लुट गया ... अरे मैं तो लूट गया रेऽऽ ..."

जिज्ञासावश जयराम के कदम खुद-ब-खुद उस आवाज़ की तरफ़ बढ़ गए। जब तक वह उस रोते हुए आदमी तक पहुँचता, कुछ और लोग भी इधर-उधर से वहाँ आ पहुँचे थे।

किसी ने पूछा–"अरे-अरे, क्या हो गया?"

दूसरे ने कहा–"लगता है, बेचारा बाहर से आया है।"

ऑफ़िस से घर लौटती एक महिला ने पूछा–"क्या हुआ भाई, कोई बताओ तो सही!"

जयराम ने देखा, रोते हुए आदमी ने किसी तरह खुद को सँभालते हुए कहा–"क्या बताऊँ जी, गाँव से मेरे साथ कुछ समझदार दोस्त आए थे। लेकिन शहर आकर जाने क्या हुआ, उन सबकी मत मारी गई। देखते-देखते, अपनी सारी जमा-पूँजी लुटा दी। हे राम, अब क्या होगा!"

जयराम सोचने लगा–'ऐसा जाने क्या हुआ होगा इस बेचारे के साथ!'

तभी जुट आई भीड़ में से कुछ आवाज़ें एक साथ आईं–"देखने में तो ये भी बौराया-सा ही लगता है। चलो चलें यहाँ से, अपना काम देखें! कौन जाने, यहाँ यह रोता रहे और इसे देखने के चक्कर में कोई हमारी जेब ही साफ़ कर डाले। वैसे भी किसके पास है इतना फालतू वक्त यहाँ ..."

जयराम को रोते हुए आदमी से सहानुभूति हो आई थी। उसने आगे बढ़कर उससे पूछा–"कैसे लुट गई सारी जमा-पूँजी भाई?"

वह बोला–"अरे भैया, हमें क्या मालूम था कि ऐसा गज़ब हो जाएगा! हम तो बाज़ार से गुज़र रहे थे। तभी एक आदमी सामने से आ गया। मेरे दोस्त के हाथ में नोटों की गड्डी देखकर बोला–'दस रुपये दो, बीस ले लो।' दोस्त ने उसे दस-का एक नोट निकालकर थमा दिया। बदले में उसने उसे बीस-का करारा नोट वापस कर दिया। यह देख, मेरे दूसरे साथी को भी उत्साह आ गया। उसने उस आदमी से कहा–'मेरा सौ-का नोट ले लो और बदले में दो सौ रुपये दे दो।' वह तो पहले ही तैयार था–'मुझे कहीं जाना है। लाओ जल्दी निकालो।' साथी ने उसे सौ-का नोट दिया तो उसने तुरंत दो सौ रुपये लौटा दिए।"

© NCERT not to be republished

"यह तो खूब रही!" जयराम के मुँह से निकला।

"अरे खूब क्या रही, मेरे तीसरे साथी ने जब ऐसा देखा तो उसे जाने क्या हुआ, उसने हमारी सारी जमा-पूँजी उस अनजान के हाथ में धर दी।"

"फिर क्या हुआ?" जयराम समेत कई लोगों ने एक साथ पूछा।

उसने रुँधे-गले से निकलती आवाज़ में बताया–"फिर क्या होना था जी, वह धूर्त पैसा हाथ में आते ही बोला–'यह पैसा तो बहुत ज़्यादा है। इसे दोगुना करने के लिए तो मुझे घर पर बैठकर मंतर फूँकना पड़ेगा। तुम यहीं ठहरो, मैं दस मिनट में आता हूँ।' तबसे जो गया, अभी तक नहीं लौटा। पूरे चार घंटे हो गए। अब मैं क्या करूँ। हम सब दोस्त इस शहर में आकर छले गए हैं।"

जयराम को उस पर दया हो आई। वह उससे कुछ कहता, इससे पहले ही भीड़ में से एक महिला बोली–"ये तो शहर है भैया! यहाँ ज़रा सँभल के रहना चाहिए। पैसा भी कभी बगैर कामकाज के दोगुना होता है क्या? अब तो तुम ये खैर मनाओ कि तुम्हारा सामान बचा रह गया ..."

जयराम को लगा, वह महिला ठीक ही कह रही है। उसने दस-का एक नोट रोते हुए आदमी को दिया और बोला–"लो भैया, अब शहर में ज़रा सँभल कर रहना।"

देखते-देखते, भीड़ में से कुछ और लोगों ने भी उस आदमी को कुछ-न-कुछ देना शुरू कर दिया।

जाते-जाते जयराम ने देखा, उस आदमी के पास अच्छी-खासी रकम इकट्ठा हो गई थी।

उपर्युक्त कहानी में जयराम यदि पार्क के पास से न गुज़रता तो उस रोते हुए आदमी को न देख पाता। और न देखता तो फिर कहानी का **बीज-विचार** ही न बनता।

यह आवश्यक नहीं कि कहानी में जिस तरह का वर्णन आया है, वह हू-ब-हू लेखक ने देखा ही हो। हो सकता है, कहने को यह दृश्य महज़ इतना हो कि एक लुटा-पिटा-सा व्यक्ति पार्क में बैठा रो रहा हो। लेखक को यह देखकर उस व्यक्ति के प्रति सहानुभूति हो आई हो। हो सकता है, उससे, उसने कुछ पूछ भी लिया हो। उस समय, जल्दी में होने के कारण वह वहाँ न रुक सका हो। लेकिन **कहानी का बीज-विचार यहीं से उसके साथ हो लिया हो ...** कि ऐसा क्यों और कैसे हुआ होगा भला!

गतिविधि–5   Activity–5

सुदर्शन की 'हार की जीत' या प्रेमचंद की 'ईदगाह' कहानी खोज कर पढ़ें अगर उसे आप लिखेंगे तो कैसी बनेगी? लिखकर देखिए।

(अधिकांश बड़े कहानीकार अपने शुरुआती दौर में ऐसा करते रहे हैं।)

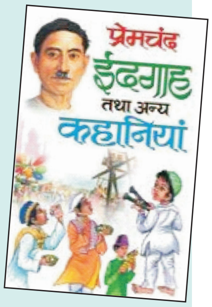

Read the story 'Idgah' by Premchand or 'The Portrait of a Lady' by Khushwant Singh. Try writing on the same themes and see how the stories turn out.

(Many accomplished authors have followed this method in their formative years)

© NCERT not to be republished

किस्सा एक बड़े लेखक का

कहानीकार जब स्वयं यह सोचता है कि उसका कहानी लिखना शुरू कैसे हुआ तो वह विस्मय से भर जाता है। क्योंकि जब तक वह 'कहानी कैसे लिखूँ?' पर विचार करता रहा और जब वह कहानी लिख चुका, इन दोनों के बीच का समय कैसे और कब निकल गया, उसे खबर ही नहीं होती।

प्रेमचंद के बाद हुए कहानीकार जैनेंद्र कुमार का किस्सा इस संदर्भ में पठनीय है–

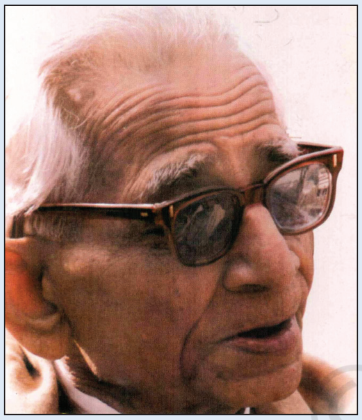

जैनेंद्र कुमार

जब तक चाहता रहा कि कहानी लिखूँ तब तक सोचता रह गया–'कैसे लिखूँ?' और जब लिखी गई, तब पता भी न था कि वह कहानी है।

बात यों हुई। वक्त खाली था और मैं नहीं जानता था कि अपना क्या बनाऊँ। दुनिया में एक माँ की मार्फ़त मेरा नाता था। शेष दुनिया थी और मैं अपने में बंद अलग था। एक बूँद अलग होकर सूख सकती है, मैं भी सूख ही रहा था। ... दिन के कुछ घंटे तो लाइब्रेरी के सहारे काटता था, बाकी कुछ खामख्याली और मटरगश्ती में।

इस हालत में जो पहली कहानी हुई वह यों कि–एक पुराने साथी थे जिनका ब्याह हुआ था। भाभी पढ़ी-लिखी थीं। पत्रिका पढ़ती थीं और चाहती थीं कि कुछ लिखें, जिससे उनका लिखा छपे और तस्वीर भी छपे। हम भी मन-ही-मन यह चाहते थे। दोनों ने सोचा कुछ लिखना चाहिए। तय हुआ कि अगले शनिवार को दोनों को अपना लिखा हुआ एक दूसरे के सामने पेश करना होगा। शनिवार आया और देखा कि उनकी कहानी तैयार थी। हमें कुछ बात पकड़ में न आ सकी थी कि कुछ, किसी विषय पर लिख जाता। ऐसे एक हफ़्ता, दो हफ़्ते निकल गए। भाभी तो भी कुछ-न-कुछ लिख जाती थीं, यहाँ दिमाग दुनिया भर में घूमकर भी कोरा-का-कोरा रहता था। हम अपनी इस हार को लेकर मन-ही-मन ओछे पड़े जा रहे थे। होते-होते हम जड़ हो गए। सोच लिया कि कुछ अपने से होने-हानेवाला नहीं है। यह अपना निकम्मापन इस तरह तय हो चुका था कि एक दिन घटी एक दिलचस्प घटना को हमने ज्यों-का-त्यों कागज़ पर उतार डाला। जाकर भाभी को सुनाया। घटना भाई-साहब और भाभी को लेकर थी। भाभी लजाई, मगर खुश भी हुई। मैं मानता हूँ कि वह पहली कहानी थी–जो फिर जाने क्या हुई?

('मैं–मेरी पहली कहानी' से साभार)

© NCERT not to be republished

यही जैनेंद्र कुमार बाद में हिंदी के अद्भुत कथाकार बने। अब चलें, रोते हुए आदमी की कहानी के साथ।

पार्क में रोते हुए आदमी के दृश्य से लेखक गहरा जुड़ाव महसूस न करता तो वह उसकी स्मृति में बसता ही नहीं। ऐसे अनेक दृश्य होते हैं, जो सामान्य रूप से आँखों के सामने आते ज़रूर हैं लेकिन प्रभावित नहीं करते। आपकी अंतःचेतना को झकझोरते नहीं।

देखें गतिविधि/Activity 6 पृष्ठ 57

कहानी की रचावट

कौन जाने, कहानीकार ने इस कहानी का कितना रूप दृश्य में सचमुच देखा है। यथार्थ में देखा दृश्य जब हमारी स्मृति में बस जाता है और रचना का बीज-विचार बनने लगता है तो उसमें हमारी कल्पना का मेल भी होने लगता है।

मान लीजिए, इस कहानी के लेखक ने पार्क में रोते हुए आदमी को तो देखा, लेकिन उसकी कहानी न सुनी। सिर्फ़ यह देखा कि लोग उसकी दयनीय हालत पर तरस खाकर कुछ सिक्के उसकी तरफ़ उछाल रहे हैं। तब, यह सच होगा कि बीच का दृश्य कहानी में लेखक की कल्पना से आया है। लेकिन अभी ज़रा ठहरिये, यह सब अनायास नहीं हो जाता।

रोते हुए आदमी को देखकर लेखक का सहृदय उससे जुड़ा। जुड़ा तो उसे लगा कि वह दुःखी है। उसे जिज्ञासा हुई कि ऐसा आखिर क्यों है?

बस, यहीं से विचार की रचावट प्रारंभ हो गई। बार-बार लेखक उसे देखते हुए दृश्य में लौटता और फिर उसकी रचावट में डूब जाता। उसे लगता है कि इस समय दुनिया का सबसे दुःखी व्यक्ति पार्क में रोता हुआ वही इंसान है जिसे उसने देखा है। उसकी वेश-भूषा और दयनीय रूप कहानी के बीज-विचार को कुछ विस्तार देता। उसमें लेखक की कल्पना भी जा जुड़ती। उसे लगता कि प्रायः गाँव-कस्बों से आए सीधे-सादे लोगों को शहर के चतुर-सुजान लुटेरे बहला-फुसलाकर लूट लेते हैं।

कल्पना के पंख जब यथार्थ दृश्य से जुड़ जाते हैं तो बीज-विचार रचनात्मक विस्तार पाने लगता है। अब तक के अर्जित अनुभवों में से कुछ और उसी के साथ आ जुड़ते हैं। जितना उस पर मनन होता जाता है, उतना ही रचाव बढ़ता जाता है। जब यह दबाव बढ़ जाता है, तब रचना-प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है। यही वह क्षण होता है, जब कहानी लिखने वाला सचमुच यह तय कर लेता है कि यह रही मेरी नयी कहानी की ज़मीन।

अनुभव या अनुभूति

अनुभव का देश-काल से बंधन नहीं है। लिखे जाने का कोई समय तो होता नहीं। कुछ क्षणों में अनुभव होता है। जो ठीक-ठीक अनुभव है वह तो उस क्षण में रह गया, इसलिए जो लिखने के काम आता है, वह अनुभूति है, अनुभव नहीं। अनुभूति के बल पर जो बाहर आता है वह आपके अंदर से मथकर आता है। इसलिए मैं कहता हूँ कि जो अनुभव का लेखन है वह यथार्थ का लेखन, आप लाख कोशिश करें, हो ही नहीं सकता। लेकिन अनुभूति में होता है और यथार्थ में अर्थ आप अपनी तरफ़ से डालते हैं। अपनी ओर से जब आप उसमें अर्थ डालेंगे, तभी आप मानेंगे कि वह आपकी रचना है।

– जैनेंद्र कुमार

© NCERT not to be republished

रचना-प्रक्रिया

पार्क में रोता हुआ व्यक्ति और कहानीकार के अर्जित अनुभवों का मेल रचना-प्रक्रिया की शुरुआत बन सकती है। यही है कहानी की असल शुरुआत। कहानी की यह शुरुआत प्रायः विचार में होती है। कागज़ पर तो यह बहुत बाद में उतरती है।

हम किसी पात्र विशेष, स्थिति, परिवेश या घटना को दृश्य में स्वयं देखकर अथवा किसी और का ऐसा अनुभव सुनकर भी किसी कहानी की रचना-प्रक्रिया प्रारंभ कर सकते हैं। पार्क में रोते हुए व्यक्ति का दृश्य कोई भी व्यक्ति किसी और को सुना सकता है। सुनाते वक्त यह संभव है कि दृश्य में वह अपनी ओर से भी कुछ जोड़कर सुना दे। यह जोड़ना ही कल्पना का यथार्थ से मेल है।

रोते हुए इस व्यक्ति की कहानी, जब लेखक के मस्तिष्क में दौड़ती है, उसे बेचैन करने लगती है। उसे लगता है कि बगैर इसे कागज़ पर उतारे या कंप्यूटर पर कंपोज किए वह रह नहीं सकता, समझ लीजिए कि कहानी अब आकार लेकर ही रहेगी। ऐसे में कहानी लिखने वाले का समूचा ध्यान फिर कहानी के कथ्य पर केंद्रित हो आता है। वह सोचने लगता है कि इसे बयान करूँ तो किस तरह! यह विचार में कहानी का दूसरा प्रारंभ है।

गतिविधि–7 Activity–7

एक कहानीकार अपने देखे-सुने संसार को कहानी में कच्चे माल की तरह इस्तेमाल करता है।

अब तक आपने भी पोर्टफ़ोलियो में बहुत सी रचनाएँ लिखी हैं। लिखने के अपने अनुभव को रचनात्मक ढंग से लिखें।

Story writers use their observations of the world around them as their raw material.

So far, you have written many creative pieces for your portfolio. Keeping in view your experience of writing, attempt a creative piece on the process of writing.

प्रस्तुति

कहानी की विषयवस्तु ही नहीं, उसे व्यक्त करने का माध्यम भी आकर्षक होना चाहिए। नए कहानीकार प्रायः पहले के कहानीकारों की नकल करने लगते हैं। इससे वह सायास उन जैसा होने की कोशिश करने लगते हैं। परंपरा और कहानी की विशेषताओं के बारे में जानकारी होना तो अच्छा है, लेकिन उस जैसा ही करने लगना ठीक नहीं।

वस्तुतः कहानी का कथ्य अपने साथ ही कहने की संभावनाएँ भी लेकर आता है। जब हम उसे प्रस्तुत करने के तरीके के बारे में आश्वस्त हो जाते हैं, बस तभी उसकी एक भाषा भी बनने लगती है और कहानी का रूप भी। प्रायः यह सब हमारे कथ्य के अनुरूप ढलता जाता है। कहीं संवादों में तो कहीं विवरण या चरित्र-चित्रण में।

लिखते-लिखते रूप बदलता भी है

यह कतई ज़रूरी नहीं कि जैसा कहानीकार ने सोचा, ठीक वैसा ही रूप कहानी भी लेती चली जाएगी। पहले से पूरी तरह सोच-समझकर लिखी गई कहानियाँ साफ़ गढ़ी हुई नज़र आती हैं। इसलिए यह ज़रूरी है कि जब आप किसी कहानी की ज़मीन पर काम करना शुरू करें, खुद को उसका एक सहृदय हमसफ़र मानें। उसके साथ चलते रहें। कहीं वह खुद आपको ले जाएगी तो कहीं आप उसकी अँगुली पकड़कर कहेंगे – 'चलो, ज़रा इधर चलते हैं।' यह कहानी की सहज प्रक्रिया है। इसमें अनेक अंत और तरीके बन सकते हैं। दरअसल, इससे जीवन, समाज

© NCERT not to be republished

फ़िल्म 'सद्‌गति' के दृश्य

और समय को समझने में सफ़लता हासिल हो सकती है। यही प्रक्रिया धीरे-धीरे कहानीकार में यह तमीज़ पैदा करती है कि किसी घटना-विशेष का विवरण दे देना भर कहानी लिखना नहीं है। हर अच्छी कहानी एक सत्य का संधान भी करती है। सामान्य-सी दिख रही घटना को कहानीकार की दृष्टि से ऐसा विस्तार मिलता है कि वह अर्थवान् हो उठती है।

प्रेमचंद की कहानी 'सद्‌गति' बताती है कि जन्म से ही कोई बड़ा नहीं हो जाता। यहाँ दुखी की मृत्यु एक तरह से पंडित घासीराम के वजूद को बेमतलब साबित करते हुए चौंकाती खबर लाती है। प्रेमचंद का कथाकार भारतीय समाज पर सिर्फ़ प्रहार ही नहीं करता, गहरी करुणा और अवसाद भी उपजाता है।

सबकी अपनी कहानी

मान लीजिए, रोते हुए इस आदमी की कहानी को कोई दूसरा कहानीकार लिखता। वह इसे यह रूप भी तो दे सकता था कि इसके साथी इसे इसलिए छोड़ गए कि यह तो लुट-पिट चुका था, अब इसे साथ रखकर क्या करें? हो सकता है, स्टेशन पर उतरते ही उसका सारा सामान लेकर कोई चंपत हो गया हो।

चलिए, यही मान लेते हैं कि दूसरा कहानीकार भी कहानी को इसी तरह आगे बढ़ाता जैसी यह सबसे पहले कहानीकार ने लिखी है। लेकिन वह अंत

बदल देता। पैसे फेंककर चले गए लोगों के बाद एक पुलिस वाला आता और उसके पूरे पैसे बटोरकर चलता बनता। धमकाता अलग, कि भीख माँगना अपराध है।

कोई भी कहानी हमारी सोच, समझ और अनुभवों के आधार पर अपना रूप बदल सकती है। क्या यह नहीं हो सकता कि भीड़ में से एक नौजवान उसे पहचानकर आगे बढ़े और रोते हुए व्यक्ति से कहे–'अरे जग्गू काका आप! चलिए मेरे साथ, अब आपको परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं।' ऐसे में यह कहानी दूसरा ही रूप ले लेती।

"कहानी के लिए वातावरण की पकड़ गहरी होनी चाहिए। सही चरित्र सही लोगों में मिलते हैं। सही लोगों की जड़ें गहरी होती हैं।"

– ***इसाक सिंगार,*** अमेरिकी कथाकार

एक लेखक की सबसे बड़ी समस्या सृजन के उचित क्षण या कण को पहचानना ही है। अपने आप वे खास क्षण हमें प्रेरित करते हैं। हम कथा-वस्तु की तलाश में नहीं भटकते। दशा और दिशा के प्रति जागरूकता ही हमारे अंतर्मन को उद्वेलित करती है। कहती है–"लो...यही वह क्षण है। छोड़ना मत...इसे थाम लो।"

– ***एम. टी. वासुदेवन नायर,*** (मलयालम कथाकार) एक साक्षात्कार में

देखें गतिविधि/Activity 8 पृष्ठ 61

कहानी का उद्देश्य और असर

कहानी का सबसे बड़ा उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह पढ़ने वाले की संवेदना को उजागर करे। उसकी सोई हुई चेतना को जगाए। उसकी भावनाओं का उन्नयन करे। वह कुछ ऐसा करे कि जीवन को गहराई से छूते हुए पाठक को उस पर विचार करने को विवश कर दे।

किसी भी नए लेखक को बँधे-बँधाए तरीके पर कहानी लिखने से बचना चाहिए। उसकी कहानी कितनी भी अनगढ़ क्यों न हो, अपनी होनी ज़रूरी है। अनुभूति को शब्दों में बाँधने की नयी कोशिश ही नयी पीढ़ी की नयी कहानी बनती है। सच बात तो यह है कि हर नयी अनुभूति अपने साथ एक नयी भाषा भी लेकर आती है।

बहुत से कहानीकार असर पैदा करने के लिए भावुकता का सहारा लेने लगते हैं। प्रायः भावुकता का अतिरेक कहानी को कमज़ोर करता है। नज़र आने लगता है कि लेखक ने प्रभाव पैदा करने के लिए अतिरिक्त प्रयास किया है। जहाँ यह प्रयास अलग से दिखा, वहीं रचना कमज़ोर हुई। (मक्सिम गोर्की ने अपने लेख 'मैंने लिखना कैसे सीखा?' में कहा है–*"लिओ तोल्सतोय ने मेरी कहानी 'छब्बीस पुरुष और एक लड़की' पढ़ने के बाद कहा था–*

'तुम्हारा तंदूर ठीक जगह पर नहीं है'। पता चला कि तंदूर की आँच से नानबाइयों का चेहरा उस तरह चमक नहीं सकता था जिस तरह मैंने उसका वर्णन किया था। मेरे 'फ़ोमा गोर्देमेव' में भेंदीस्काया की चर्चा करते हुए चेख़ोव ने कहा *'लगता है उसके तीन कान हैं–एक उसकी ठुड्डी पर भी है–देखो!'* और बात सही थी, क्योंकि वह जिस प्रकार रोशनी की ओर मुँह किए हुई थी, वह गलत था। इस प्रकार की गलतियाँ चाहे कितनी छोटी लगें, बड़े महत्त्व की होती हैं। सामान्यतः यह बहुत कठिन काम है कि आदमी *ठीक-ठीक शब्द ढूँढ ले*

© NCERT not to be republished

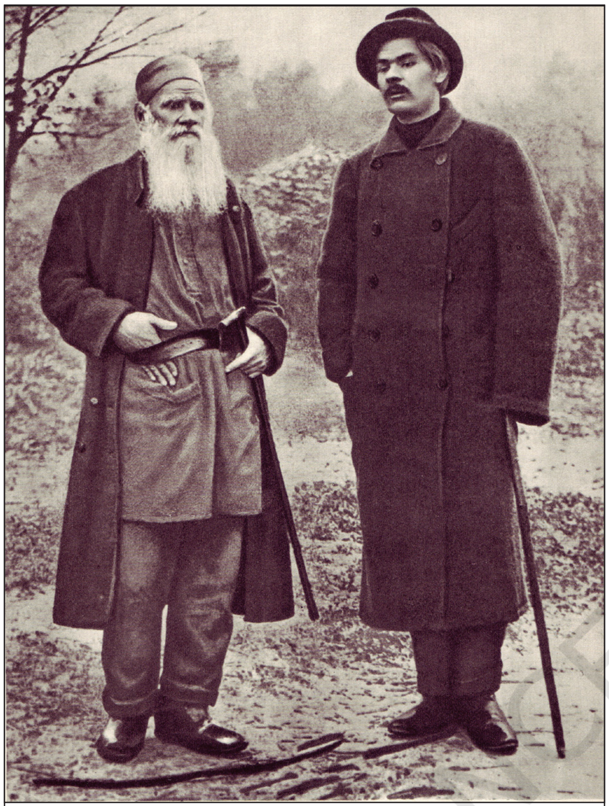

मैक्सिम गोर्की और लिओ तोल्सतोय

और उन्हें ऐसी तरतीब दे कि कम-से-कम शब्दों में बहुत कुछ व्यक्त हो जाए, कि शब्दों में किफ़ायत की जाए और चिंतन को बड़े विस्तार में निकल जाने दिया जाए, कि शब्दों के माध्यम से सजीव चित्रों की रचना की जाए और संक्षिप्त तथा सुंदर रूप से एक पात्र की मुख्य विशेषताओं की व्याख्या की जाए ...। शब्दों के माध्यम से लोगों और वस्तुओं में 'रंग भरना' एक बात है और उन्हें सजीव बनाकर; मानो तीनों आयामों में चित्रित करना, इस प्रकार कि वे शारीरिक रूप से दर्शनीय हो जाएँ जैसे कि तोल्सतोय के 'युद्ध और शांति' के पात्र हैं; बिल्कुल दूसरी बात है..."

हर कहानीकार की हर कहानी अच्छी और प्रभावशाली ही हो, यह ज़रूरी नहीं । ज़रा यह छोटी कहानी पढ़ कर देखें।

सोया हुआ बच्चा

बच्चा सो रहा है, जैसे बुद्ध का अवतार। अधमुंदी आँखें, मासूम चेहरा और कुछ न कहते हुए भी, परेशान किए दे रहा है बच्चा। जागता, तो जाने क्या कर रहा होता!

बच्चा बेखबर है इस सब से कि मैं सोच रहा हूँ उसके बारे में। या फिर निश्चित कि उसे छोड़ कर और सोचूँगा भी क्या!

बच्चे के होंठ बहुत हौले से हिले हैं। जैसे खिल रही हो दो पंखुरियाँ। झाँकते हैं गुलाबी मसूढ़े और दूधिया दाँत। बिखर गई है एक भोली गंध।

बच्चा ले रहा है साँस एक रफ़्तार। जैसे उसे किसी चीज़ की फ़िक्र ही न हो।

कितना बेफ़िक्र है वह! जैसे बच्चा ही रहेगा हमेशा।

© NCERT not to be republished

गतिविधि–9 Activity–9

पानी रे पानी –

"Water, water everywhere..."

उपर्युक्त चित्रों से संबंधित ये दोनों शीर्षक किसी कहानी के शीर्षक भी हो सकते हैं। इसी तरह आप भी कुछ अन्य शीर्षक देकर 'पानी की कहानी' लिखिए।

The titles of the pictures given above can be used as titles of stories as well. Similarly, can you think of a title for a story on water? Once you decide the title, write a short story on 'Water.'

यह कहानी आकार में छोटी ज़रूर है, लेकिन हर पाठक इसका आनंद कहानी की तरह नहीं उठा सकता। उसे इसमें कहानीपन खोया हुआ नज़र आएगा। उसे लग सकता है कि यह कहानी है या कविता? सोते हुए बच्चे को देख कर लिखा गया एक चित्र है यह। लेखक ने इसमें भोले बच्चे की बेफ़िक्री पर अपने अनुभव को रख भर दिया है। इसमें उसकी यह चिंता भी साथ चली आई है कि बड़े होने पर यह बेफ़िक्री नदारद हो जाएगी। पाठक इस उलझन में पड़ जाएगा कि बच्चा ही क्यों रहेगा वह! बड़े होकर क्यों वह सहज और निश्चिंत जीवन नहीं जी सकता! ऐसी रचनाएँ सहज दिखते हुए भी जटिल होती हैं।

शैली तो रचना का अलंकार है। **जहाँ कोई अनुभूति तीव्र होती है, वहाँ शिल्प खुद बनता चला जाएगा**। तकनीक और कथ्य घुल-मिलकर ही एक अच्छी कहानी बनाते हैं। कहानी से आप क्या और कैसे कहना चाहते हैं, यह विचार धैर्यपूर्वक करना चाहिए। दरअसल, जो कहना है वही रचना में करना भी होता है।

यदि हम इसी रोते हुए आदमी की कहानी की बात करें, तो कहना चाहने वाली यह बात ज़्यादा आसानी से समझी जा सकती है। इस कहानी का एक रूप यह भी हो सकता था कि पार्क में वह लूटेरा ग्रामीणों को बहकाकर निकल जाता। कहानीकार अपनी सारी क्षमता इसी दृश्य को प्रभावी बना देने में लगा देता था।

ऐसे में यह एक घटना का विवरण भर होकर रह जाता। **कहानी में किसी अनुभव का शामिल होना सार्थक तब होता है जब वह निजी से सार्वजनिक में बदल जाए**। गौर कीजिए, रोते हुए व्यक्ति को देख कुछ व्यक्ति तो ऐसे भी थे जो वहाँ खड़ा होना तक मुनासिब नहीं समझ रहे थे। उन्हें लग रहा था कि यह तो वक्त की बर्बादी है। दरअसल, ये ऐसे लोग थे जो किसी दूसरे या अपरिचित के दुःख-दर्द में शामिल होना वक्त की बर्बादी समझते हैं। जयराम ऐसे लोगों में से नहीं है। वह आगे बढ़कर रोते हुए आदमी से पूछता है–"कैसे लुट गई सारी जमा-पूँजी, भाई?"

उसका यह प्रश्न पूछना ही उसके दुःख के साथ जुड़ना है। उसे जुड़ता देख भीड़ में से कई और अपरिचित चेहरे भी उसमें दिलचस्पी लेने लगते हैं। जानना चाहते हैं कि जो कुछ हुआ, वह आखिर हुआ कैसे! रोते हुए आदमी से उसकी दुःखभरी कथा सुनने के बाद जयराम ही वह पहला आदमी है जो उसकी मदद करने के लिए दस रुपये का नोट देता है।

सच पूछें तो कहानी तभी सार्थक बनती है जब किसी को किसी

© NCERT not to be republished

से जोड़े। यहाँ जयराम के रूप में पहले आदमी की तलाश ही कहानी को बड़ा बनाती है। यदि वह चाहता तो सीख देने वाली उस महिला की तरह ही दो-चार शब्द कहकर रोते हुए आदमी को कुछ समझाता और चलता बनता। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।

चलिए, अब ज़रा एक दूसरे दृश्य की बातें करते हैं। यही जयराम साहब एक दिन बस से दिल्ली आर. के. पुरम् की बस में बैठे। देखते क्या हैं कि बड़ी-सी पगड़ी पहने एक आदमी पहली सीट के पास आकर खड़ा हो गया है। अच्छे-खासे डील-डौल और भारी आवाज़ में मूँछों वाला असरदार चेहरा देखकर हर कोई उसकी बात सुनने लगा। वह स्वर को कुछ करुण बनाकर कह रहा था कि मेरा सारा परिवार नीचे खड़ा है। हम लोग कल रात ही बाहर से शहर दिल्ली पहुँचे थे। सारा सामान हमारे साथ है, बस पैसे वाला थैला कोई लेकर चंपत हो गया। मैं अच्छे घर-बार का आदमी हूँ। अगर आप लोग मुझे परिवार सहित लौटने का किराया दे दो तो आपका किया जन्म भर नहीं भूलूँगा। पता दे दोगे तो आपका पैसा पहुँचते ही मनीआर्डर से भेज दूँगा।

जयराम ने उसे पहली बार देखा होता तो शायद उसकी प्रतिक्रिया कुछ और होती। उसने फ़ौरन पहचान लिया, यह तो वही आदमी है जो परसों भी इसी तरह लोगों से पैसे माँग रहा था।

क्या यह दृश्य लेखक से पहले जैसी कहानी लिखवा सकता है? नहीं। यह कहानी एक अलग ही रूप ले लेगी। यहाँ जयराम जैसा चरित्र लोगों को मूर्ख बनाने वालों का भंडाफोड़ करने के काम आ सकता है। हो सकता है, वह तुरंत खड़ा हो जाए और बस में बैठे लोगों से कहे कि इसकी बातों में मत आना। यह इसी तरह पैसे ऐंठता है। यह भी हो सकता है कि कंडक्टर से कहकर उसे बस से उतरवा दे। यानी लेखक दृश्य के भीतर की सच्चाई को पहले परखता है और फिर उसे अपनी कहानी की विषयवस्तु बनाता है। इस काम में उसकी मानव मनोविज्ञान की समझ, सहज ज्ञान, जीवन-अनुभव और सबसे ऊपर विवेक सहायक बनता है। **कहानी सच को सच की तरह तो कहती है, झूठ को भी सच की तरह कह सकती है।**

कहानी का शीर्षक

प्राय: नए कहानीकार इस गफ़लत में पड़ जाते हैं कि कहानी का शीर्षक कैसे रचें! पहले कहानी लिखें या शीर्षक?

अच्छा यही है कि पहले कहानी लिखी जाए। लिखे जाने के दौरान यदि कहानी का शीर्षक आपके साथ-साथ चलता रहा तो कहानी पूर्वनिर्धारित अंत की तरफ़ बढ़ने लगेगी। पूर्वनिर्धारित अंत उन्हीं कहानियों का होता है जो गढ़ी जाती हैं। सायास गढ़ी जाने वाली कहानियाँ अपने साथ लेखक के पूर्वाग्रह लेकर आती हैं।

कहानी निजी अनुभूति होते हुए भी ऐसी विधा है जो समाज का अनुभव बनने की क्षमता रखती है। यदि यह सर्वेक्षण किया जाए कि दुनिया के ज़्यादातर अच्छे कहानीकारों ने कहानी पहले लिखी या शीर्षक तो परिणाम यही सामने आएगा कि शीर्षक बाद में लिखे गए।

इस तसवीर को एक अच्छा सा शीर्षक दें

© NCERT not to be republished

शीर्षक कहानी के लिए पहला आकर्षण बनता है। उसमें समूची कथा का मर्म आ जाए तो वह सार्थक हो जाता है। प्रेमचंद की 'पंच-परमेश्वर' कहानी का शीर्षक इससे बेहतर क्या हो सकता था। रोते हुए इस बालक की कहानी का एक शीर्षक आप भी सोचिए।

कहानी की भाषा

कहानी का कथ्य अपने साथ एक भाषा-संकेत लेकर आता है। वह बताता है कि शब्दों की इस कला को साधा कैसे जाए! शब्द अपने साथ ध्वनियाँ भी लाते हैं। इनके सहयोग से ही अनुभूति व संवेदना की प्रस्तुति होती है। रचना के मर्म को पूरी तरह ज़ाहिर करने की हमारी तैयारी ही भाषा को संवारती है।

किसी भी लेखक के लिए यह जानना ज़रूरी है कि जब तक हम अपनी कथा-भाषा के महत्त्व को नहीं समझेंगे तब तक पठनीय रचना कर पाना संभव नहीं। हमें अपने प्रत्येक शब्द, सूक्ष्मतम मनोभाव और भाषा को अर्थवान् बनाने वाले तत्त्वों के प्रति जागरूक होना होगा ताकि रचना में उसका प्रवाह सहज और पठनीय हो सके।

-छी-ई-ई-छक्क' गाड़ी हिली। हिरामन ने अपने दाहिने पैर के अंगूठे को बाएं पैर की एड़ी से कुचल दिया। कलेजे की धड़कन ठीक हो गई। ... हीराबाई हाथ की बैंगनी साफ़ी से हाथ पोंछती है। साफ़ी हिलाकर इशारा करती हैं ... अब जाओ...। आखिरी डिब्बा गुज़रा, प्लेटफ़ार्म खाली ... सब खाली ... खोखले ... मालगाड़ी के डिब्बे! दुनिया ही खाली हो गई मानो! हिरामन अपनी गाड़ी के पास लौट आया।"

– फणीश्वर नाथ रेणु

(*तीसरी कसम*, उर्फ़ मारे गए गुलफ़ाम)

भाषा की रवानी बनती है उसके मुहावरों, व्यंजना रूपों, लय और संगीत से। इसका कथ्य के साथ घुल-मिलकर आना ही भाषा में रचना का बनना है। यह रचना की माँग के अनुरूप संकेतों में स्पष्ट, अभिधात्मक या व्यंजना प्रधान हो सकती है।

रोते हुए आदमी की कहानी को यदि चार लेखक अपने-अपने अंदाज़ में प्रस्तुत करेंगे तो भाषा के चार रूप हमारे सामने होंगे। इसमें समय, स्थान, स्थिति और चरित्रों का सम्यक् ध्यान न रखने वाला कथाकार अच्छी कथा-भाषा नहीं दे सकता।

भाषा में बहुत चीज़ें देखनी पड़ती हैं। सबसे बड़ी चीज़ जो मैं महसूस करता हूँ, वह यह है कि मेरी भाषा में 'रिअलाइज़्ड ट्रूथ' की, मेरी संवेदना की पूरी मानसिक प्रक्रिया से कही हुई भाषा है या सिर्फ़ जानी, सीखी और सुनी हुई भाषा है? इन दो चीज़ों में अंतर करना बहुत ज़रूरी है, क्योंकि भाषा को इस समय भ्रष्ट करने वाले बहुत से तत्त्व हमारे चारों तरफ़ हैं... रचनाकर्मी का भाषा के प्रति क्या 'एटीट्यूड' होना चाहिए, संवेदना की प्रक्रिया से गुज़र कर एक लेखक का शब्द किस तरह निकलता है, इसका एक उदाहरण मैं मार्खेज का देता हूँ। मार्खेज ने एक जगह बातचीत में कहा है कि मैं उपन्यास लिख रहा था। लिखते-लिखते अचानक 'अमरूद' शब्द मैंने लिखा और रुक गया। हम लोग रोज़ तरह-तरह के शब्द लिखते हैं। लेकिन उन्होंने आगे जो बात कही, वह ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है कि मुझे ऐसा लगा कि मैं 'अमरूद' शब्द लिख तो रहा हूँ पर 'अमरूद' का स्वाद और गंध मुझे अपने भीतर से आ नहीं रही है। मैं सिर्फ़ उस शब्द को लिख रहा हूँ। जब तक मैं उस चीज़–'अमरूद' को महसूस न करूँ, खाते हुए मुझे कैसा लगा था, अमरूद का स्वाद क्या था, अमरूद की गंध क्या थी, ये चीज़ जब तक

© NCERT not to be republished

अपने भीतर मैं जगा नहीं सकता, तब तक मेरी रचना में दम कहाँ से आएगा।

– ***राजेंद्र यादव,*** कहानी–अनुभव और अभिव्यक्ति

रचना के स्तर पर कहानी कहीं अधिक सुगठित विधा है। विचारों की एकता, संवेदना की एक लक्ष्यता, भाषा की कृपणता–सब कुछ भला कैसे सँभले? यही वह कसौटी है जिस पर कोई–कोई रचना ही खरी उतरती है।

– ***श्रीपतराय***

सभी लिख सकते हैं कहानी

आमतौर पर यह धारणा है कि कहानी लिखने के लिए विशेष किस्म का व्यक्ति होना अनिवार्य है। कुछ लोग तो यह भी कहते हैं कि कहानीकार जन्मजात होते हैं। यह दोनों ही बातें सौ प्रतिशत सही नहीं हैं। कोई भी व्यक्ति कहानीकार बन सकता है। इसके लिए ज़रूरी है आस-पास को बारीक नज़र से देखना, जिनसे कहानी का चित्र बनता है। जितनी मेहनत से यह काम किया जाएगा, कहानी उतनी ही प्रामाणिक और प्रभावशाली बन पाएगी।

याद कीजिए आपने अपने आपको माँ या अध्यापक की डाँट/सज़ा से बचाने के लिए कितनी ही झूठी कहानियाँ गढ़ी होंगी। यानी आपके पास वह कला पहले से मौजूद है। अब उसे एक अच्छी कहानी का रूप देकर देखिए। आप पाएँगे कि झूठी कहानी गढ़ने के लिए भी आपको कुछ सच्चे अनुभव, कुछ देखे-सुने दृश्य, कुछ कहानियों को पढ़कर जानी बातें, कुछ कहानी कहने के अलग-अलग तरीके और इसे अपनी भाषा में पिरोने की कला की ज़रूरत होगी। ज़ाहिर है इससे आप भाषा संबंधी अनेक बारीकियाँ भी सीखेंगे।

गतिविधि–10 Activity–10

कहानी में संवाद का बड़ा महत्त्व होता है। नीचे दिए गए संवादों को पढ़ें। कल्पना कीजिए कि ये पशु, पक्षियों, पेड़-पौधे के बीच हो रहे संवाद हैं। उन्हें लिखिए। अब इन संवादों को आधार बनाकर एक कहानी लिखिए।

(दृश्य दो बच्चों के बीच किताब पढ़ने को लेकर लड़ाई चल रही है)

मीना – बड़ी मुश्किल से यह किताब मेरे हाथ लगी है; इसे भी तुमने ले लिया?

शीना – हर बार कोई किताब पहले तुम्हीं क्यों पढ़ोगी?

मीना – क्योंकि मुझे पढ़ना आता है।

शीना – अच्छा! मुझे भी पढ़ना आता है।

मीना – चलो, पढ़ो तो।

शीना – एक कंप्यूटर है। इस पर दो बच्चे बैठे हैं। दोनों एक साथ कार्टून देख रहे हैं।

मीना – तुमने कैसे पढ़ा? कल वाली किताब तो तुम नहीं पढ़ पाई थीं।

शीना – इसमें चित्र जो है। मैंने अनुमान से पढ़ लिया।

मीना – अच्छा चलो, हम मिलकर पढ़ते हैं।

यहाँ दो बच्चों की बातचीत आपने पढ़ी, अगर दो पेड़ या दो पशु आपस में बात करें तो।

Dialogues form a very important part of a short story. Read the following dialogue between two girls. Now, imagine a world where animals and birds can talk. Write a short story with birds and animals as characters and use the given dialogue in their conversation.

Meena: I got this book with great difficulty and now you have taken it away?

Sheena: Why should you always get to read every book first?

Meena: Because I know how to read.

Sheena: Well, I too can read.

Meena: Oh, can you? Go ahead and read!

Sheena: There is a computer. There are two children watching some cartoons.

Meena: Hey! How did you read that? You couldn't read the book yesterday!

Sheena: That's because there are pictures in this book. I guessed what was written!

© NCERT not to be republished

मान लीजिए, आप अपने स्कूल के पास बैठे एक चाटवाले को आधार बनाकर एक कहानी लिखने की सोच रहे हैं। तो इसके लिए सबसे पहले तो यह देखना होगा कि कहानी में वह चाटवाला कैसे एक चरित्र के रूप में खड़ा हो सकता है। उसकी एक-एक हरकत, बच्चों के साथ उसका बरताव, चाट बनाते वक्त हाथों की तेज़ी, मसाला मिलाने के समय की लयात्मकता, पैसे लेना और बकाया लौटाना या ग्राहक को आकर्षित करने के उसके तौर-तरीके क्या हैं! उसकी बोली और वाणी कैसी है? आपके भीतर जब यह चरित्र कहानी में खड़ा होने लायक बन जाएगा तब आप उसकी कहानी कह सकते हैं।

कहीं चरित्र तो कहीं माहौल बनाती है कहानी। प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' को गौर से पढ़िए। देखिए कि कैसे कथाकार ने ईदगाह का जीवंत माहौल कहानी में उतारकर रख दिया है। कहीं यह विवरण में है तो कहीं संवादों में। देखिए तो ज़रा –

"उसने दुकानदार से पूछा – 'यह चिमटा कितने का है?'

दुकानदार ने उसकी ओर देखा और कोई आदमी साथ न देखकर कहा, 'वह तुम्हारे काम का नहीं है जी।'

'बिकाऊ है कि नहीं?'

'बिकाऊ क्यों नहीं है। और यहाँ क्यों लाद लाए हैं?'

'तो बताते क्यों नहीं, कै पैसे का है?'

'छै पैसे लगेंगे।'

हामिद का दिल बैठ गया।

'ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे, लेना हो तो लो, नहीं चलते बनो।'

हामिद ने कलेजा मज़बूत करके कहा – 'तीन पैसे लोगे?' यह कहता हुआ वह आगे बढ़ गया कि दुकानदार की घुड़कियाँ न सुने।

लेकिन दुकानदार ने घुड़कियाँ नहीं दीं। बुलाकर चिमटा दे दिया। हामिद ने उसे इस तरह कंधे पर रखा, मानो बंदूक है और शान से अकड़ता हुआ संगियों के साथ आया।"

जैसा दृश्य, वैसी भाषा। यह दृश्य संवादों में बना है।

हर कहानी के लिए यह ज़रूरी नहीं। कहीं-कहीं आपको कथा के लिए माहौल तैयार करना होगा। यह भाषा से दृश्य बनाने का ऐसा काम है जिसमें रस होना बहुत ज़रूरी है। सूखे दृश्य में आकर्षण नहीं होता। लेकिन दृश्य भी कहानी की कथावस्तु के अनुरूप ही बनेगा। बनेगा तभी जब कहानीकार की नज़र पहले उसे पकड़ेगी। दृश्य का यह पकड़ना ही बारीकियों की पकड़ करना कहलाता है। बड़ा कहानीकार **वही बन सकता है जो चरित्रों को खड़ा करने के साथ कथा के परिवेश को भी दृश्य में बदल दे।** पाठक को यह दृश्य ही कथा की स्मृति कराते हैं। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि कहानीकार की भाषा अपना सारा ज़ोर दृश्यात्मकता में ही लगा दे। कहानी के मर्म तक पहुँचाने के लिए भी भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका है। कभी यह संवादों में आती है तो कभी मन:स्थितियों को खोलने में। इसका संयत और आकर्षक प्रयोग ही कहानी को पहली नज़र में पठनीय बनाता है।

यह काम हममें से कोई भी कर सकता है। चाहिए बस एक संवेदनशील नज़र। संवेदनशीलता हममें से हर किसी में है। ज़रूरत उसे व्यवहार में लाने की है। इसी से उसका रचनात्मक विकास होता है।

तो फिर तैयार हो जाइए, आपको लिखनी है एक नयी कहानी। इसकी शुरुआत आप कहीं से भी कर सकते हैं क्यों न 'पंचतंत्र' की कोई कहानी लें और उसे आज के समय के हिसाब से ढाल दें।

© NCERT not to be republished

यह तो शायद शुरू से ही निश्चय था एक तरह से कि लेखक बनूँगा। बचपन में ही कुछ शब्दों का आकर्षण तो था ही। कुछ शब्दों से खिलवाड़ करने की प्रवृत्ति भी थी और कुछ तुकबन्दियाँ भी की थीं। तब यह तो नहीं कह सकता था कि तभी ऐसा सोचा था कि लेखक बनूँगा लेकिन उधर एक झुकाव था। बहुत जल्दी ही यानी कॉलेज जाने से पहले जान लिया था कि लिखूँगा।

(पृ॰ 77, कवि नायक अज्ञेय)

जब मेरी गिरफ़्तारी हुई थी उस के बाद पहले जिस तरह के आरोप मुझ पर लगे थे उससे यह संभावना बनती थी कि काफ़ी बड़ी सज़ा या फाँसी की सज़ा भी हो सकती थी। और जिस तरह के झूठे गवाह तैयार किये गये थे, जैसी शिनाख्त करवायी की गयी थी उससे भी ऐसी संभावना बनती थी। मैं तब 19 वर्ष का था। 19 वर्ष के जवान के लिए यह सवाल ज़रूर बनता है कि अगर 20 वाँ वर्ष पूरा होने तक उस को फाँसी हो जाती है तो मेरे जीवन का अस्तित्व क्या है, भले ही क्रांतिकारी रहा हो या जो भी रहा हो। उस दौरान मैंने इसी प्रश्न को लेकर बहुत कुछ सोचा और एक तरह से 'शेखर– एक जीवनी' जो है वह इसी सवाल का जवाब है। हवालात से जेल पहुँचते ही जब लिखने की सामग्री मिली और जब मुकदमा शुरू होने लगा तो मैंने सबसे पहले यही काम भी किया कि 3-4 दिन-रात जैसे-तैसे पेंसिल या पुरानी घिसी हुई कॉपी में एक मसविदा लिख डाला जो कि अनन्तर 'शेखर – एक जीवनी' का पूर्ण रूप बना। बल्कि उस समय जो लिखा तो खिचड़ी भाषा में लिखा। तो बात जैसी मन में आयी अंग्रेज़ी में, हिंदी में या मिली-जुली भाषा में वैसा ही लिखता गया। क्योंकि तब उद्देश्य यह था कि जल्दी-से-जल्दी इस चीज़ को, इस तपे हुए लोहे को, पिघले हुए लोहे को जमने से पहले मैं एक आकार में ढाल दूँ।

(पृ॰ 81-82, कवि नायक अज्ञेय)

'नदी के द्वीप' में तो कई जगह ज़िक्र आता है। घटनास्थल ही कुमाऊँ प्रदेश से जुड़ा हुआ है और कविताओं में मसलन 'असाध्य वीणा' में प्रियंवद जो ध्वनियाँ याद करता है वह बहुत कुछ कुमाऊँ से जुड़ी ध्वनियाँ हैं। कुमाऊँ का नाम लिया गया है लेकिन वे आवाज़ें अधिकतर तो यहाँ सुनी गयी हैं चाहे वह पर्वतीय गाँव के ढोलक की आवाज़ हो, चाहे झरने की धार की आवाज़ हो, चाहे पहाड़ों के टूट कर गिरने की आवाज़ हो, चाहे बिजली की गड़गड़ाहट हो।

(पृ॰ 93, कवि नायक अज्ञेय)

© NCERT not to be republished

कहानी का अंत

कहानी लिखना शुरू करते वक्त ही यदि आपने उसका अंत सोच या तय कर लिया तो वह एकरेखीय हो सकती है। कहानी का अंत जितना खुला होगा उतना ही अच्छा रहेगा। कभी-कभी तो आप पाठक के लिए भी इस काम को छोड़ सकते हैं। इससे उसकी कल्पनाओं का तो विस्तार होगा ही, वह कहानी से गहरे में जुड़ेगा भी। ऐसे में आपकी लिखी कहानी में उसका भी रचनात्मक योगदान हो सकेगा।

दुनिया के अनेक कहानीकारों के अनुभव इस दिशा में एक दिलचस्प अध्ययन का विषय हो सकते हैं।

जब कोई विचार पूरी तरह से मन को आक्रांत कर लेता है, तभी ऐसा लिखने लगता हूँ। उपन्यास में आने वाले कथानक को मैंने कई बार एक कहानी के रूप में लिखा है।

– ***जयकांतन,*** तमिल रचनाकार

सात वर्ष की उम्र से ही मैं विभिन्न कोणों से सोचती रहती थी। मैं मानती हूँ कि क्यों और क्या जैसे प्रश्न ही एक लेखक का सृजन करते हैं।

– ***वासिरेड्डी सीतादेवी,*** तेलुगु रचनाकार

मैंने देखा है और जानता हूँ कि पृथ्वी पर जीने की अपनी क्षमता बनाए रखते हुए लोग बहुत अच्छे और सुखी-सौभाग्यशाली हो सकते हैं। मैं इस बात पर विश्वास करना नहीं चाहता और कर भी नहीं सकता कि बुराई लोगों के जीवन की सामान्य स्थिति है।

–***फ़्योदोर दोस्तोएव्स्की*** की कहानी
'एक हास्यास्पद व्यक्ति का सपना' से

कहानी लिखने के बाद

कहानी लिखना एक बात है और उसका संपादन एक अलग बात। लिखने के बाद, कहानी को कुछ रोज़ के लिए रख दें। फिर एक दिन उसे इस तरह पढ़ें, जैसे वह किसी और की लिखी हो। हो सकता है, उसमें बहुत कुछ ऐसा नज़र आए जिसकी ज़रूरत ही न हो। ऐसे में आप उसे संपादित कर सकते हैं। यदि कहानी दोबारा पढ़ने पर भी अच्छी लगे तो समझ लें कि उसमें रचना की शक्ति है। दुनिया के अनेक प्रसिद्ध रचनाकारों का कहना है कि उन्होंने *काफ़्का* की 'मेटामार्फोसिस' कई-कई बार पढ़ी है। कई कहानियाँ फिर-फिर पढ़ी जाने को आमंत्रित करती हैं। कई बार ऐसा भी लगता है कि कहानी तो पढ़ ली, लेकिन वह खत्म नहीं हुई। बल्कि हमारे भीतर फिर से शुरू हो गई। यही अच्छी कहानी की असल पहचान है। किसी भी नए लेखक को सबसे पहले यह समझना ज़रूरी है कि पहली बार लिख ली गई कहानी ही उसका अंतिम ड्राफ़्ट नहीं होती।

क्या आपने 'उर्दू-पंजाबी' के कथाकार राजेंद्र सिंह बेदी का किस्सा सुना है? बेदी साहब ने उर्दू में अपनी पहली कहानी सन् 1936 में लिखी थी। 'महारानी का तोहफ़ा' शीर्षक यह कहानी तब वर्ष की सर्वश्रेष्ठ कहानी के रूप में पुरस्कृत भी हुई थी। फिर भी उन्होंने इस कहानी को अपने किसी संग्रह में शामिल नहीं किया। बेदी साहब कहते हैं–"यह इस बात का सबूत है कि मेरे होशोहवास शुरू से ही कायम थे।"

कहानीकार को किसी कहानी की प्रशंसा से फूलकर कुप्पा नहीं हो जाना चाहिए। ऐसा होने पर आगे लिखने का सिलसिला थम जाता है।

सही उठान अगर ले कहानी तो चाहे वह पचास पेज की हो, चाहे वह दो पेज की हो और उस

© NCERT not to be republished

चंद्रधर शर्मा गुलेरी

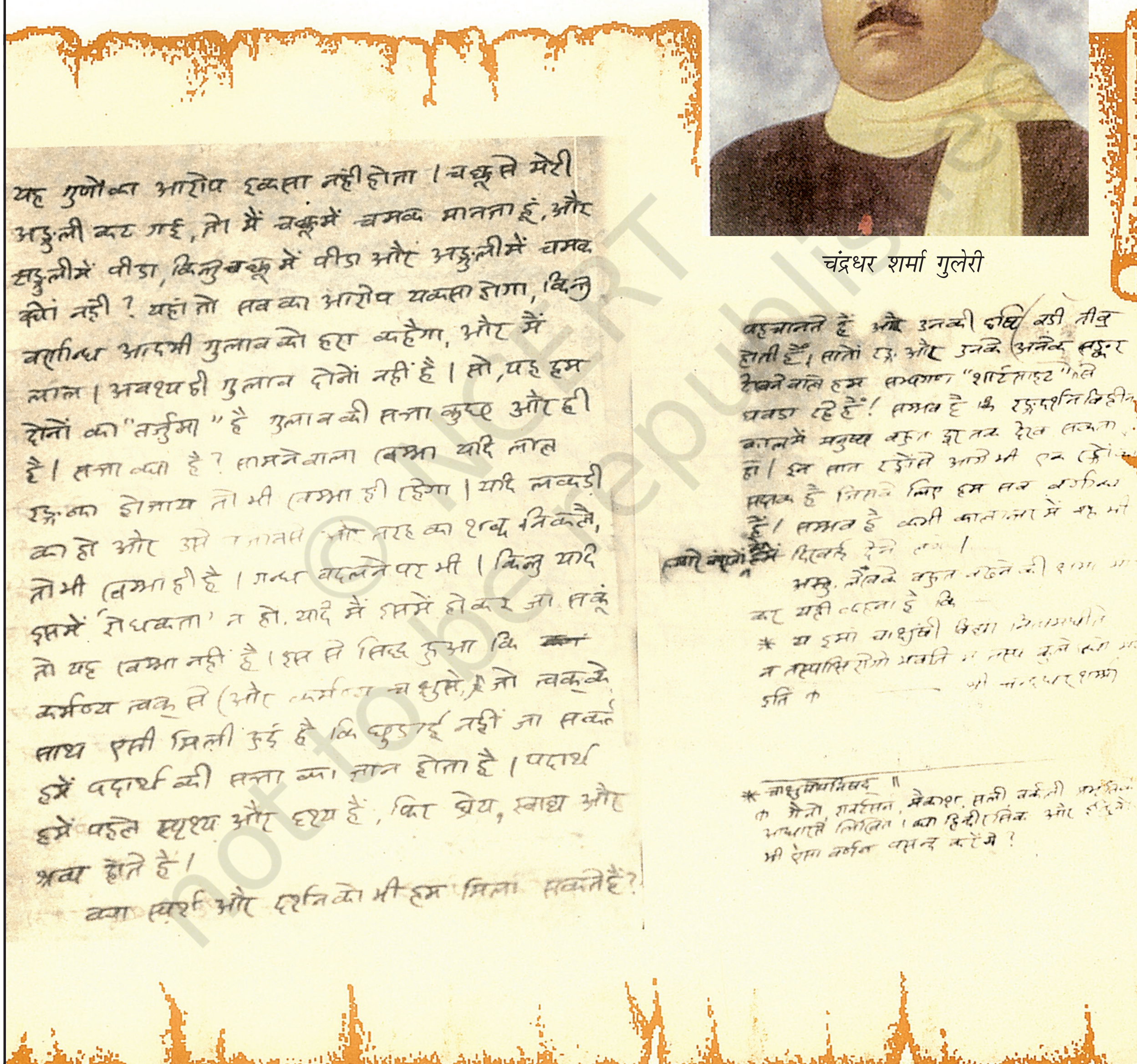

यह गुणों का आरोप इकसा नहीं होता। चक्कू से मेरी
अङ्गुली कट गई, तो मैं चक्कू में चमक मानता हूं, और
अङ्गुली में पीडा, किन्तु चक्कू में पीडा और अङ्गुली में चमक
क्यों नहीं? यहां तो सब का आरोप यकसा होगा, किन्तु
वर्णान्ध आदमी गुलाब को हरा कहैगा, और मैं
लाल। अवश्य ही गुलाब दोनों नहीं है। तो, यह हम
दोनों का "तर्जुमा" है गुलाब की सत्ता कुछ और ही
है। सत्ता क्या है? सामनेवाला खम्भा यदि लोह
रङ्ग का होजाय तो भी खम्भा ही होगा। यदि लक्कडी
का हो और उसे [illegible] और तरह का शब्द निकले,
तो भी खम्भा ही है। गन्ध बदलने पर भी। किन्तु यदि
इसमें 'रोधकता' न हो, यदि मैं इसमें होकर जा सकूं
तो यह खम्भा नहीं है। इस से सिद्ध हुआ कि
कर्मण्य त्वक् से (और कर्मण्य चक्षु से,) जो त्वक् के
साथ ऐसी मिली हुई है कि छुड़ाई नहीं जा सकती
हमें पदार्थ की सत्ता का ज्ञान होता है। पदार्थ
हमें पहले स्पृश्य और दृश्य हैं, फिर घ्रेय, स्वाद्य और
श्रव्य होते हैं।
क्या स्पर्श और दृष्टि को भी हम मिला सकते हैं?

हस्तलिपि

उठान को आप ठीक अंत तक ले जाएँ। जिसको निर्वाह करना कहते हैं।

– ***नामवर सिंह*** (एक साक्षात्कार में)

हर कहानी को अपने-आप में एक मुकम्मल कृति मानकर पहले देखें कि कहानी क्या कहती है? फिर देखें कि कहानी जो कुछ कहती है, क्या ऐसी बात कहती है जिसकी ओर औरों का ध्यान नहीं गया था? पहली बार क्या लेखक ने एक नए सच की ओर इशारा किया है? और फिर देखें कि यह नया सच जो है वह इतिहास के संदर्भ में कोई बड़ी बात है या एक छोटा-सा, खाली एक खिलवाड़ है? मज़ा लेने के लिए यानी चिकोटी काटने वाली बात है या उस चिकोटी में गहरा दर्द है? और वह एक-एक बहुत बड़े संदर्भ को आलोकित करता है। यदि केवल वह फुलझड़ी नहीं है बल्कि उससे एक रोशनी मिलती है अपनी ज़िंदगी के आज के किसी बड़े सच को देखने की, तब लगेगा कि एक बड़ी कहानी है।

– ***नामवर सिंह***

अच्छी रचनाएँ पढ़ें

पढ़ने से अधिक रचनात्मक कुछ नहीं। दरअसल, रचना का संसार इसी से खुलता है। आप रेणु, प्रेमचंद, मोपांसा, तोल्सतोय, चेखव, मंटो या राजेंद्र सिंह बेदी, कृष्णा सोबती की कोई कहानी पढ़ते-पढ़ते पाएँगे कि एक नयी दुनिया ही आपके भीतर खुलती जा रही है। लगेगा जैसे बहुत कुछ अपने अनुभव जगत में से भी ऐसा है जो उस रचना को पढ़ने से अनायास स्मरण आने लगा है। ऐसा तो अपने साथ भी हुआ था न! बस, यहीं से शुरू होता है आपकी रचना का एक नया रास्ता।

कहानी का एक रास्ता यह भी है कि अपने साथियों को गौर से देखिए! देखिए कि वह किस तरह अपने झूठ को सच बताने के लिए अनंत किस्से गढ़ते हैं। झूठ को कलात्मक अंदाज़ में सामने रखने वाला क्लास में ही नहीं, घर पर भी अपना सिक्का जमा लेता है। लेकिन गौर से देखें तो आप पाएँगे कि झूठ बोलने में ज़रा-सी चूक हुई नहीं कि आप पकड़े गए। क्लास में टीचर और घर पर माँ आपको फ़ौरन पकड़ लेंगी। आपके बहुत से दोस्त होंगे जो मनगढ़ंत कहानियाँ सुनाकर अपने-आपको बचा ले जाते होंगे। उस समय उनका आत्मविश्वास देखने लायक होता होगा। क्योंकि तब वह अपनी सारी ऊर्जा उसी में लगा देते होंगे। कहानीकार को भी अपनी बात कहने में पूरी ताकत लगा देनी होती है। लेकिन यह ध्यान रखना ज़रूरी है कि पात्र खुद बोलें, कहानीकार नहीं। पात्रों के बोलने पर ही कहानी असरदार होती है।

प्रेमचंद जैसे कथाकार ने भी ब्रिटेन के चार्ल्स डिकेंस और रूस के लेव तोल्सतोय की रचनाएँ पढ़ी थीं। कन्नड़ रचनाकार शिवराम कारंत ने एक साक्षात्कार में कहा– "जब कभी कोई अच्छी कहानी या निबंध पढ़ता, तो लिखने का मन करता। जब मैं विद्यार्थी था, तभी से लिखने लगा था।"

चित्र को देखकर कहानी के बिंदुओं पर कक्षा में चर्चा करें

© NCERT not to be republished

Everest ice core to study climate change

May 21, 2013 | PTI

Scientists have obtained the longest ice core ever from the Mount Everest, measuring 142 metres, along with two other samples to aid in the study of climate change and provide new insight into global warming.

During the expedition that lasted more than a month, scientists drilled the ice cores at a mountain pass near the East Rongbuk glacier, which covers the north collar of Everest, said Kang Shichang, an expedition leader.

What happens to those planted saplings?

Chennai, May 25, 2013

Environment groups are going to town with plant-a-sapling campaigns. And everybody seems to have joined in. From college events to government functions and wedding planners, people give away saplings as return gifts. The campaign has also gone digital: sometimes, an SMS is all it takes to have someone deliver a sapling at your doorstep, free-of-cost.

But, the sad truth is that the initiative often 'dries up' mid-way. In the absence of care and watering, many saplings wither and die much before they could grow into sturdy and imposing trees.

Thankfully, certain NGOs, residents' welfare associations and individuals are now taking action: they adopt these saplings, see them through the tough initial years and try to help them in other ways, when they have grown up.

Understanding Creativity

- Look at the given collage. Some pictures and news items may have caught your attention.
- Attempt a creative piece — a poem or short story on any one of these.

© NCERT not to be republished

I. An Idea and Its Development

Like butterflies in spring
Poetry awakens the spirit,
Stirs the imagination and explores
The possibilities with each stroke of its rhythmic wings.

— Jamie Lynn Morris

When you are standing alone on a mountain staring at millions of stars in the middle of the night or are observing something as small as ants carrying specs of sugar tirelessly one by one rhythmically, or if your friend has hurt you, the experience makes you pause and reflect amidst everyday activity. There is some murmuring at first and then some kind of knocking at one's consciousness deep within, as if seeking some outlet for expression. The sound, the feeling, the pain or the joy demands attention and articulation. This is where the seed of the "urge to express creatively" lies. Many a time we suppress, ignore or dismiss these experiences. If one pauses and meditates upon such an experience, it begins to take shape. The sounds acquire a rhythm and the process of creative expression may trigger off at this moment.

The desire to express, to communicate, takes over! But then, one may ask, how does one express oneself? The nature of the experience usually becomes the nature of expression. If the medium of expression is to be "words" and the expression finds itself in narrating a sequence of events, usually a story is born in which characters emerge; a description of the experience or the scene, felt or imagined, can become an essay or a report. But it becomes a poem if the nature of the experience, in a way, is more like a revelation or an insight. The flow of emotion felt at this time finds expression through some rhythm, not necessarily through the use of any rhyme scheme or specific form of poetry. 'Inspiration' takes over and you may write a line or two around which the poem grows. This is your own specific experience and your authentic perception of it will be unique, as unique as you are! The style and form most appropriate for one's expression generally manifests itself during the very process of writing. In this unit we will discuss about poetry and short story writing.

© NCERT not to be republished

II. Writing Poetry

> *Poetry is when an emotion has found its thought and the thought has found word.*
>
> — ***Robert Frost***

Poetry has been intrinsic in our oral tradition for long and all our folk songs were sung/recited before they were written. The question is what makes a poet write.

In *Letters to a Young Poet*, the poet Rainer Maria Rilke, offers deep insights into this question. To begin with, in the most silent hour of the night, he says, ask yourself: *must* I write? If you want to write a poem, then try to say what you see and feel and love and lose.

This may sound very simple but we must understand that we fail to write good poetry because we do not attend to our experiences honestly and genuinely. First, we may not be able to sensitively feel or really explore the truth of a situation, and if we do, we hasten to distract ourselves. We need to stay with the experience to recognise what truly stirs one's heart or mind. One must listen, feel, see and perceive, and identify.

Writing a poem is all about observing the world within you and also around you. You can write about anything from describing an emotion to the concerns

Valmiki, known as the first poet in Sanskrit, recited the following *shloka* on the separation of the *Kronch* couple. This is also known as the first *shloka* in Sanskrit poetry.

काव्यस्यात्मा स एवार्थः तथा चादिकवेः पुरा।
क्रौञ्चद्वन्द्ववियोगोत्थः शोकः श्लोकत्वमागतः ।।

प्राचीन काल में क्रौञ्च जोड़े में से एक के
(मारे जाने पर) विरह से उठा हुआ दूसरे का
शोक, आदि कवि वाल्मीकि के श्लोक रुप में
जो परिणत है वही काव्य की आत्मा है अर्थात् रचनाधर्मिता की आत्मा है।

The feeling of extreme pain at the separation of the *Kronch* couple led to the passionate rendering of the *shloka*, which is the core of poetic expression.

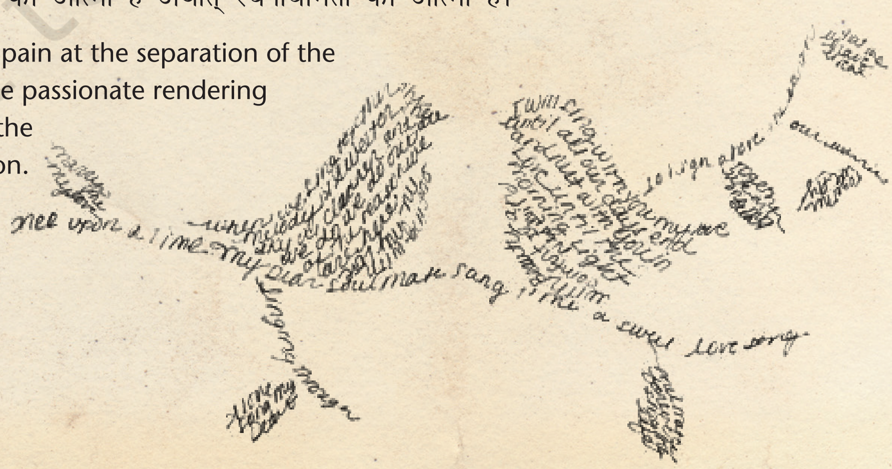

© NCERT not to be republished

A tribute in philately to Subramania Bharati

> *"Poetry is an echo, asking a shadow to dance."*
>
> **— Carl Sandburg**

about the environment. Write down your thoughts as they come to you.

Sometimes it is just an image. It could be a hurt, an experience of beauty or may be a thought or an idea that might inspire one to write. In other words, one is stirred or moved into saying something, which ordinary expression may not be able to communicate. The same stimulus can stir the emotions of different people at different times; therefore, the renderings also vary. For example, Subramania Bharati and P.B. Shelley have both written poems on the subject 'Wind'. See how their inspiration has taken form.

Read the following excerpt from the poem 'Wind' by Subramania Bharati translated from Tamil by A.K. Ramanujan.

Wind, come softly.
Don't break the shutters of the windows.
Don't scatter the papers.
Don't throw down the books on the shelf.
There, look what you did – you threw them all down.
You tore the pages of the books.
You brought rain again …

Subramania Bharati has percieved wind as a destructive force when it blows strongly and causes harm. The same wind can be turned into a friend if we become as strong as the wind, according to the poet.

In the poem '*Ode to the West Wind*', P.B. Shelley sees the wind as a powerful force that functions as both destroyer and preserver. He appreciates the fact that the wind which is a harbinger of autumn, also heralds the spring and the beauty and rebirth associated with it. Here is an excerpt—

O wild West Wind, thou breath of Autumn's being,
Thou, from whose unseen presence the leaves dead
Are driven, like ghosts from an enchanter fleeing, …

Wild Spirit, which art moving everywhere;
Destroyer and preserver; hear, O hear!

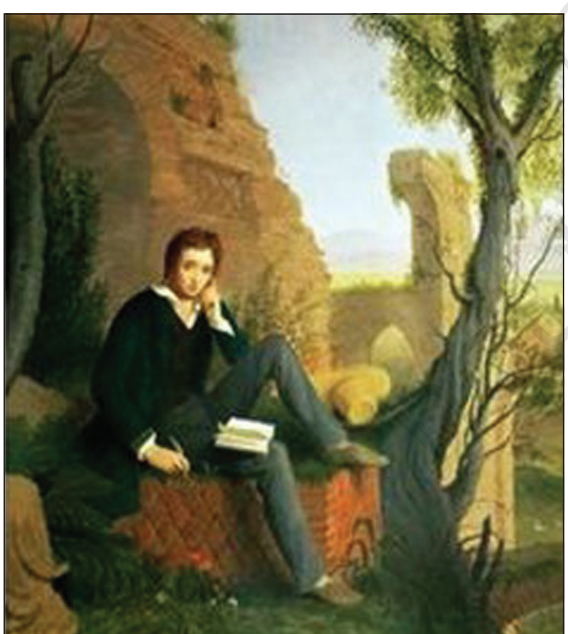

A portrait of P.B. Shelley

© NCERT not to be republished

Shelley has also recorded how he was inspired to write the poem.

> The poem was conceived and chiefly written in a wood that skirts the Arno, near Florence, on a day when that tempestuous wind, whose temperature is at once mild and animating, was collecting the vapours to pour down the autumnal rains. They begin, as I foresaw, at sunset, with a violent tempest of hail and rain, attended by that magnificent thunder and lightning peculiar to the Cisalpine regions.
>
> – ***Shelley, 239***

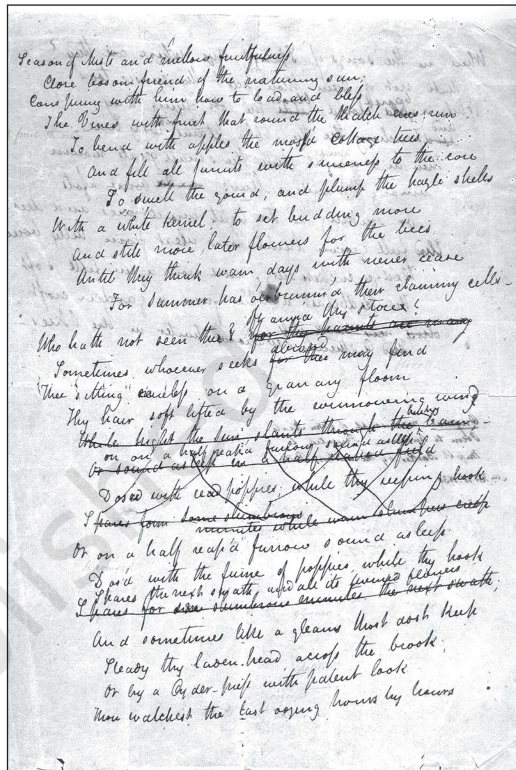

A draft of John Keats' 'Ode to Autumn'

Similarly you will find that 'Autumn' has been the subject for many poets. For example, John Keats' poem '*Ode to Autumn*' and Sarojini Naidu's '*On Autumn*' have been developed in accordance with the poets' perception of the things around them.

Read poems written on the same topic/theme by different poets and add them to your portfolio.

A poem may be born out of an idea or just a line that suddenly occurs to you. That is what is usually called inspiration. Once you have that beginning, you need to flesh it out and build the rest of the poem around it. If you want to write about a specific object or idea, write down all the words and phrases that come to your mind when you think of the object or idea. Allow yourself to put all your thoughts into words. Write them down as quickly as possible and when you're done, go through the list and look for connections and images that will aid your creativity.

According to John Keats, 'The poetry of the earth is never dead'. Pay attention to the world around you—what you see, hear, taste, smell or feel. Use your imagination, your own way of looking at things and write. There is an abundance of ideas around us.

India's nightingale Sarojini Naidu

See गतिविधि/Activity 1 on Page 10

© NCERT not to be republished

The poet Emily Dickinson said,
"There's a deep meaning to a poem that really stays in your head and keeps you thinking, some quality to it that keeps you waiting to return to it, to read it over and over again, like hearing a song. Every time you read it, the words are somehow still new and somehow still able to call up to that deep feeling."

"Poetry is the rhythmical creation of beauty in words."

— Edgar Allan Poe

Japanese poet Bashô – A master of haiku

Words as a Medium of Poetry

It's been said that if a novel is "words in the best order," then a poem is "the best words in the best order." Words are like a jigsaw puzzle. While writing a poem you will find that some words fit and some don't. Choose your words carefully as the differences between similar meaning words or synonyms can lead to interesting word play. Use only those words that are necessary; those that enhance the meaning of the poem.

Words acquire a strange power in a poem. Each word, if carefully chosen, presents the sense, the colour and the feel of the experience. While a poem may leave one wonder-struck with insights otherwise inaccessible, strangely, the experience presented also appears familiar!

The Japanese poet Bashô composed the following Gloss Haiku during the planting season, when he heard the field workers singing as they planted rice in their fields he wrote:

beginnings of Poetry–
the rice planting songs
of the interior

(Translated by Shirane)

You too must have observed farmers singing folk songs while working in the fields. The same ethos has been captured by Bashô.

There is something about poetry that seems in-definable but attractive and almost magical in the way it affects us. A good poem functions at multiple levels of meaning and experience. While there may be surface meanings, the poem also yields meanings that lie beneath the literal meaning.

In our folk heritage many songs and poems have been written that express the sentiments of the people. The following song expresses the people's desire to save trees. This is the song that travels through the valleys of Garhwal, beyond the legendary villages of Reni and Lata in Henwalghati, the place where the first epic *Chipko* (Hug the Trees) Movement was born.

© NCERT not to be republished

Maatu hamru, paani hamru,
hamra hi chhan yi baun bhi…
Pitron na lagai baun,
hamunahi ta bachon bhi

Soil ours, water ours,
ours are these forests.
Our forefathers raised them,
it's we who must protect them.

How do words in a poem acquire power or magic?

As the Konkani poet, M. L. Sardesai puts it: "Poetry is born when words start dancing." Words, when strung together in the form of poetry, acquire life and dynamism. They present visuals in the form of images, make music through rhyme and rhythm and yield sense in a variety of ways. As infants, we are brought up on simple jingles and nursery rhymes such as — "*Machli jal ki rani hai, jeevan uska pani hai, haath lagao dar jayegi, bahar nikalo mar jayegi*" or "Ba ba black sheep, have you any wool, yes sir, yes sir, three bags full …". We respond to all those rhymes and lullabies easily and cheerfully even if we do not understand them. Such rhymes and rhythms come as naturally to all of us as the chirping of the birds or the whistling of the breeze. It is as if there is a poet in each one of us.

If we are willing to respond to life-experiences sensitively and with alertness, the sense of wonder in us remains as alive as that of a child. Life has endless possibilities from within and without, in relating to the other and to one's own self!

Writing poetry is one of the ways of exploring the world around you. You will notice that a poem does not lead to any finality of meaning, nor does it offer merely one single meaning. Words and expressions are used in such a way that

Nature inspires many

© NCERT not to be republished

they are open to varied meanings. General ambiguity of expression is considered to be a flaw, however in poetry and in some prose forms it is used as a literary device. These layers of meanings lend a scope for multiple interpretations. This is not to say that a poem becomes a riddle. In fact, it opens up varied dimensions of the same experience to varied minds in presenting multiple shades of meaning.

To be able to create such a poem, it is helpful to build up a rich resource of vocabulary along with studying the etymology (origin and history) and usage of as many words as possible. Familiarity with words gradually leads to a deeper bonding with them; one learns to play with them, juggle them and sometimes even give them new meanings through skillful and creative usage. Jibanananda Das's '*Windy Night*' is one such example. In this poem, the poet has used words and expressions that are commonly used by everyone. He has strung them into a poem. Here is an excerpt.

Last night it was an intensely windy
night—a night of countless stars;
An expansive wind played around my
mosquito net;
At times billowing it like the belly of a
monsoon sea,
At times tearing it off the bed as if to
cast to the stars;
Sometimes I felt—may be in half-sleep—
that there was no net on my bed,
That it was drifting like a white heron
in an ocean of blue winds alongside
the Swati star.
It was such a wonderful night, last
night— ...

(Translated from Bangla by Faizul Latif Chowdhary)

गतिविधि–2 Activity–2

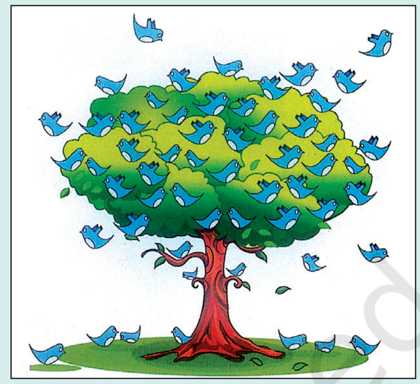

दिए गए चित्र को देखिए। आपने इस चित्र में क्या देखा है?

- उसे एक नाम दें।
- उस शब्द को दो विशेषणों से जोड़िए।
- इस शब्द को तीन क्रियाओं से जोड़िए।
- पुनः पहले शब्द को दो और विशेषणों से जोड़िए।
- पहले शब्द के लिए कोई समानार्थक शब्द दीजिए।

आपकी छोटी-सी कविता तैयार है। (यह कविता जिस तरह से आकार ले पाई है, इसे 'सिनक्विन' कहा जाता है। यह फ्रांसीसी शब्द है जिसका मतलब है – 'पाँच') अब आप इस तरह से किसी भी संज्ञा शब्द से कविता बना सकते हैं। आप निर्देशों को बदल भी सकते हैं।

Look at the picture. What do you see in it?

- Give it a name (noun).
- Write two describing words (adjectives) related to it in line 2.
- Write three action words (verbs with - ing) related to it in line 3.
- Write two more describing words (adjectives) related to it in line 4.
- In line 5 write a word with a meaning similar to the word given in line 1 (synonym).

Now you have a short poem. This is a 'Cinquain' poem (cinquain means 'five' in French). You can write more poems of this type and add them to your portfolio. You may change the sequence.

© NCERT not to be republished

Devices Used in Writing Poetry

Poets use some figures of speech frequently to make their poems more effective. For instance, **metaphors** are extremely useful in poetry. They evoke a sense of many meanings and sometimes also present a concrete visual experience to express abstract ideas; for example, the expression "silent as stone" or "fierce as tiger". Such expressions help in condensing language. A metaphor in itself stands for something else. Also, the whole poem could be a metaphor to represent a certain experience or feeling. In the following poem '*Fog*', Carl Sandburg compares the fog to a cat. The poem is an example of a long metaphor. A metaphor campares two things by transfering a feature of one thing to the other.

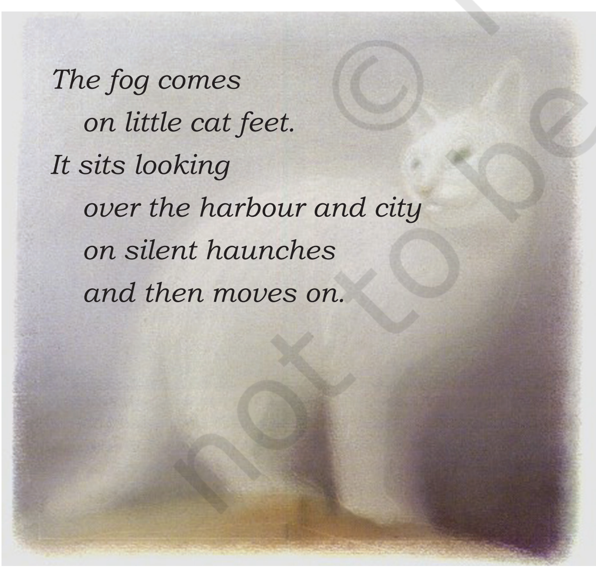

Similes too help in adding meaning to a poem, if used skillfully. Love, happiness, hate etc., are all abstract concepts. While writing poetry you can use concrete images to describe abstract emotions, and also describe them vividly. For example, Robert Burn's well-known simile comparing love to "a red, red rose" describes the sentiment it evokes through the richness of the image used.

Images, whether as metaphors, similes or literally as images, are very useful since they help in visualising thought or emotion in a poem. Images have a photographic power in representing reality. While it is important to consciously avoid cliché (oft-repeated) images, we must understand that it is through effective use of imagery that a distinct atmosphere and mood can be created. For a new world to be created in a poem, fresh imagery has to be used.

Poets also use **irony** to evolve "meaning between the lines". In that the poet skillfully uses language to create an effect that might mean the opposite of what may be expected. For instance, the famous lines from S.T. Coleridge's poem '*The Ancient Mariner*'—Water, water everywhere,/Not a drop to drink. The first line produces an expectation quite contrary to the second line! Such use of language can be developed through practice. Such a felicity of expression can also be acquired by reading a lot of poetry. The originality evolves from making a conscious effort in avoiding images, words and expressions that are commonplace. Finally indeed, it is the thematic content and intent, which ultimately dictate the use of certain devices for their articulation.

The beauty of a poem sometimes comes from the **symbols** woven into it. Again, symbols too must be new and refreshing. The pleasure they yield depends on how they are used. See how Rabindranath

© NCERT not to be republished

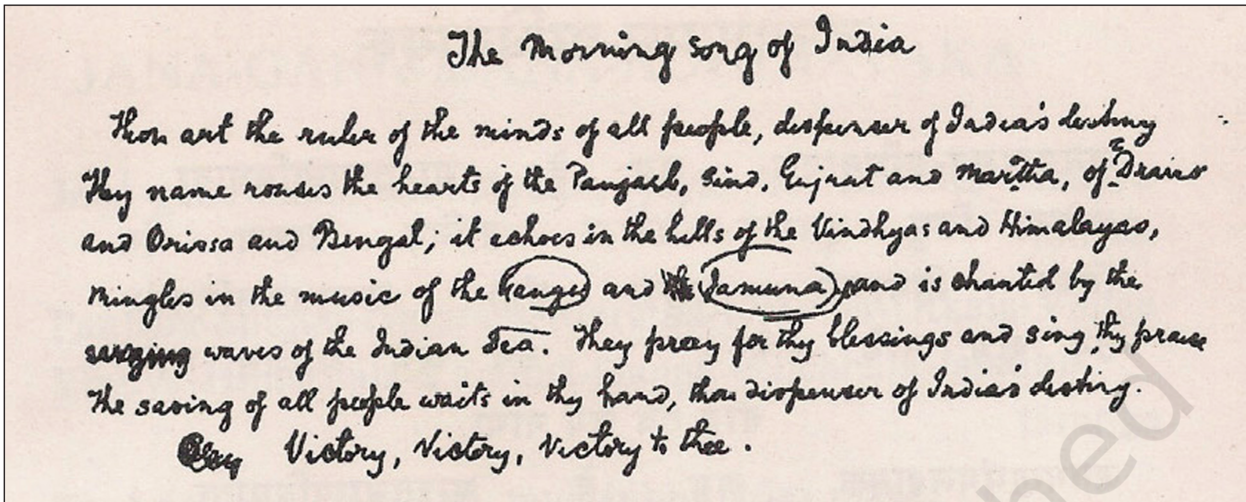

The Morning song of India

Thou art the ruler of the minds of all people, dispenser of India's destiny
Thy name rouses the hearts of the Panjab, Sind, Gujrat and Maratha, of Dravid
and Orissa and Bengal; it echoes in the hills of the Vindhyas and Himalayas,
mingles in the music of the Ganges and Jamuna and is chanted by the
surging waves of the Indian Sea. They pray for thy blessings and sing thy praise
The saving of all people waits in thy hand, thou dispenser of India's destiny.
Victory, Victory, Victory to thee.

The poet and his verse

Tagore uses the symbol in the poem '*Golden Boat*'.

No room, no room, the boat is too small.
Loaded with my gold paddy, the boat is full.
Across the rain-sky clouds heave to and fro,
On the bare river-bank, I remain alone—
What I had has gone: the golden boat took it all.

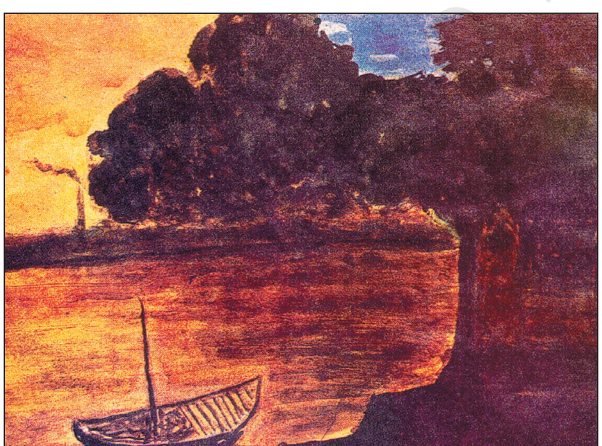

A painting by Rabindranath Tagore

The golden boat is a metaphor for the ephemeral nature of life and achievement. Nothing is permanent, neither our achievements nor our conditions or fates.

You will find that in an allegorical poem a lot of symbols are used. The allegorical form is popular because it allows meanings to be flexible and somewhat free.

Adrienne Rich's poem 'The Trees' is one such example. The poet is suggesting that plants and trees are used in the interiors of homes in cities while forests are cut down. Imprisoned in these houses, the trees need to come out. Read the excerpt,

… All night the roots work to disengage themselves from the cracks in the veranda floor.
The leaves strain toward the glass
Small twigs stiff with exertion
Long-cramped boughs shuffling under the roof
Half-dazed, moving to the clinic doors …

© NCERT not to be republished

Personification is another poetic device wherein human-like qualities are given to inanimate objects. In the following lines 'dandelions' are given the qualities of young people—

Some young and saucy dandelions
Stood laughing in the sun;
They were brimming full of happiness,
And running over with fun …

Alliteration and **rhyme** lend rhythm to the poem. Alliteration is the use of similar sounding words. This enhances the musical quality of the poem as well as lays emphasis on the idea. Here is an example of both alliteration and rhyme from Ogden Nash's poem '*The Tale of Custard the Dragon*'—

Belinda was as brave as a barrel full of bears
And Ink and Blink chased lions down the stairs,
Mustard was as brave as a tiger in a rage,
But Custard cried for a nice safe cage …

Underline the words that are used for alliteration and as rhyming words. The rhyme scheme is presented as a-a-b-b. It changes as per the use of words.

Be careful not to allow the rhyme to cover your message or even change it. A good thesaurus will help you chose the right word.

Writing a poem is not only about receiving new experiences or being open to new ideas, but it also requires the ability to nourish them. You can keep noting down ideas in your diary. According to Sylvia Plath, an American poet, one must keep writing regularly as an exercise in "flow": What may seem spontaneous is actually the result of emotional, intellectual and linguistic resources built over time, which comes with regular reading and the desire to express oneself.

"Poetry is the music of the soul, and,
above all, of great and feeling souls."

— Voltaire

Writing as an Exercise in Flow

Sylvia Plath would everyday no matter what, as soon as breakfast was over and no matter where she was in the world, sit down with her notebook and just start to write—about absolutely anything at all.

As she explains, this was NOT in order to create a wondrous new poem, but ONLY in order to keep the channels open, keep in the flow.

It wasn't about practising either, but simply an exercise in FLOW—and she was very adamant about doing this, put it before many others if not all other things because she considered it so very important because if a good idea came along or an insight at any time of the day which was to come afterwards, the channels would be open and a super poem would just simply glide out and through and become, there and then.

So she would write about anything whatsoever, no holds barred—a shadow on the windowsill, a bit of lettuce, an old mushroom she'd found on a walk and brought back to her room. About the table cloth, about her hands, about a little pool of light on the carpet or about her feelings of having nothing whatsoever new to say—and just let it go from there for her "morning exercise"—no expectations of it other than knowing the ACT of doing it was what did the trick.

© NCERT not to be republished

One of the best ways of seeing whether the poem is reading well or not is to read the poem aloud after having written it. Philip Larkin, the English poet, stressed on the importance of the auditory aspect of poetry when in an interview he said, on *reading* the poem "the reader should 'hear' it just as clearly as if you were in the room saying it to him". The sound of the words always adds an inner meaning to the poem. Earlier, we talked about how words 'dance'. In fact, they also make music! Words, then, have to be carefully chosen to suit the mood, atmosphere and tone of the poem being written. Alliteration, repetition and assonance too are devices used to enhance the music of the poem. Here is a poem about 'Rain' by Bruce Lansky. The poet has used what is called "onomatopoeia", i.e., when the sound of the word itself projects its meaning.

Poetry is not just about an individual situation but is also a tool/medium to creatively explore socio-political dynamics. In his poem '*Old Woman*', Arun Kolatkar narrates a tourist's encounter with an old woman. Though one expects the young man to have more authority, it is the old beggar whose will prevails. The poem forces one to rethink how we perceive those who aren't as privileged as us.

When you hear her say,
'What else can an old woman do
on hills as wretched as these?'

You look right at the sky.
Clear through the bullet holes
she has for her eyes.

And as you look on,
the cracks that begin around her
eyes spread beyond her skin.

And the hills crack.
And the temples crack,
And the sky falls

With a plate-glass clatter
Around the shatterproof crone
who stands alone

And you are reduced
to so much small change
in her hand.

Did you observe how the poet is able to create a visual image of the old woman? It is no wonder that poetry is described as painting with words.

Spanish poet Pablo Neruda too explores the beauty and wonder in everyday objects that we often tend to overlook. '*Odes to Common Things*' is a collection of poems that was written toward the end of Neruda's life. In these poems common things like a table, a chair, flowers, socks, and even soap are transformed and elevated to metaphors and vehicles for greater questions.

© NCERT not to be republished

Given below is an excerpt form '*Ode to a Soap*' by Pablo Neruda.

This is what
you are,
soap: you are pure delight,
the passing fragrance
that slithers
and sinks like a
blind fish
to the bottom of the bathtub ...

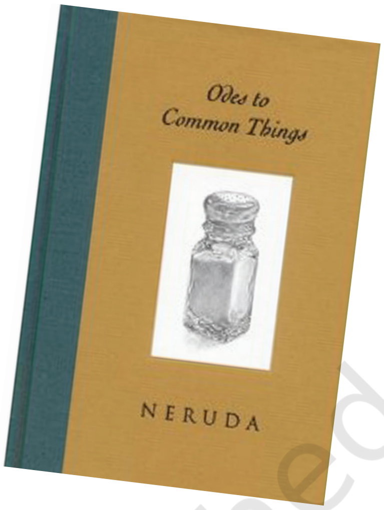

Talking about subjective poetry, one thinks of an ***elegy,*** *which is reflective and sad, written in memory of someone who has passed away. There are many such poems in English literature. For instance, the famous English poet, Alfred Tennyson's poem 'In Memorium A.H.H.', or John Milton's poem 'Lysidas', or even the American poet, Walt Whitman's poem 'O Captain, O Captain!' to name a few. An* ***idyll,*** *on the other hand, is a rather idealised presentation of the countryside, like a pastoral song written in appreciation of the harmony and peace of the non-city environs and landscape.* ***Sonnet*** *is a lyric poem of fourteen lines with a rhyme scheme. Shakespeare's sonnets written for "a dark lady" are also well known.*

You can write the poem in any way you like and it may be categorised as a ballad, sonnet, dramatic monologue etc. While a ***ballad*** *narrates a story with a repeated refrain and is self-contained, a* ***dramatic monologue*** *is a type of poem, spoken as though to a listener. An* ***epic*** *too is a serious long poem that narrates the story about a heroic figure. The most well known Indian examples of epics are the Mahabharata and the Ramayana.* ***Chorus*** *also comes in the category of poetry.*

Haiku *is a form of poetry which originated in Japan and has become popular worldwide. Written in 3 unrhymed lines, known for its condensed form and poignant images, haikus are now written in many languages, in India and many other countries. The popularity of another essentially non-English form, the* ghazal, *too, must be mentioned here. This lyrical form emerged from Urdu and Persian, has five to fifteen couplets and is usually connected with themes of love and separation. One of the most well known Urdu poets who wrote* ghazals *is Mirza Ghalib. In Hindi the traditional forms of poetry have been* doha *and* pada.

Here is an example of a doha.

गुरु कुम्हार शिष्य कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।
भीतर हाथ सहार दे, बाहर मारे चोट।।

© NCERT not to be republished

Then, there is also poetry that is playful and amusing, where there is wordplay or a clever and skillful play of meaning and humour sometimes emerging from nonsense. Such a popular form is that of a limerick. A **limerick** is a form of poetry that has a specific, set rhyme scheme. It is humorous and light and usually composed in a verse form of five lines. Here's a limerick by Edward Lear.

There was a Young Lady whose chin,
Resembled the point of a pin;
So she had it made sharp,
And purchased a harp,
And played several tunes with her chin.

Since a poem is also *seen* and read as much as heard and felt, to many poets then, one of the significant elements of poetry is the visual. *What does the poem look like?* e. e. cummings felt that the pattern given to the words of a poem is important because the pattern itself can add to the meaning of the poem. For instance, the message of his poem '*A Leaf Falls*' is conveyed visually in the way the letters of the words are placed on the page. Different poets in fact use different ways of using space around the words of the poems to make the poem "look" in harmony with what it may be saying. Poets exercise individual choices in this matter and are not bound by any rules or conventions in this regard. e. e. cumming's many poems are written in a different manner.

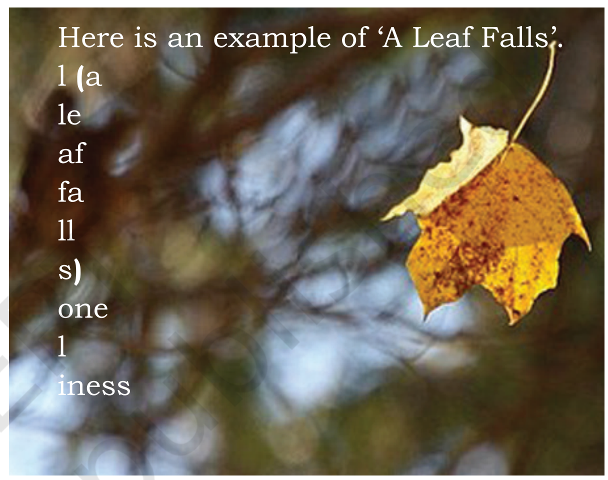

This unique poem has 'loneliness' with a parentheses saying 'a leaf falls'. It is a metaphorical reflection on isolation and the bittersweet sadness in autumn when leaves fall. One is also reminded of the visual imagery of a leaf falling down when one reads the poem.

In modern times however, the poets use blank verse. Free verse became the most popular form of poetic expression. However, a good sense of rhythm and sound are still considered to enhance the beauty of poetry.

See गतिविधि/Activity 3 on Page 15

© NCERT not to be republished

Look at the poem below which is an example of free verse. The poem 'My Mother at Sixty-six' written by Kamala Das is about the feelings of a daughter for her mother.

Driving from my parent's home to Cochin
last Friday morning, I saw my mother,
beside me,
doze, open mouthed, her face
ashen like that
of a corpse and realised with
pain
that she that thought away, and looked
but soon
put that thought away, and
looked out at young
trees sprinting, the merry children
spilling out of their homes, but after the
airport's security check, standing a
few yards
away, I looked again at her, wan,
pale
as a late winter's moon and felt that
old
familiar ache, my childhood's fear,
but all I said was, see you soon,
Amma,
all I did was smile and smile and
smile…

This whole poem is in a single sentence, punctuated by commas. It indicates a single thread of thought interspersed with observations of the real world around and the way these are connected to the main idea.

A. K. Ramanujan has written a poem On the '*Death of a Poem*'. The poet puns on the word "sentence". Once a sentence is formed and a semblance of a poem is achieved, the creative process too comes to an end. Read the poem below:

Images consult
one
another
a conscience-
stricken
jury,
and come
slowly
to a sentence.

When a poem comes out of a deep dialogue, as it were, between an individual self and the poem-in-the-making, it becomes a workshop: the theme looks for the right form and the form in

turn modulates the subject. The poem begins to take some shape. The structure begins to emerge through lines, rhythm, diction, stanzas etc. Metaphors, images and sounds are conjured up from various levels of consciousness and memory and association of ideas play a great role. The poem becomes a lyric, sometimes after a number of rounds of editing and rewriting.

A poem can also be a meditation expressed as a narrative. Here is an example of the poem '*Song in Space*' by Adrian Mitchell—

When man first flew beyond the sky
He looked back into the world's blue eye.
Man said: What makes your eye so blue?
Earth said: The tears in the ocean do.
Why are the seas so full of tears?
Because I've wept so many thousand years.
Why do you weep as you dance through space?
Because I am the mother of the human race.

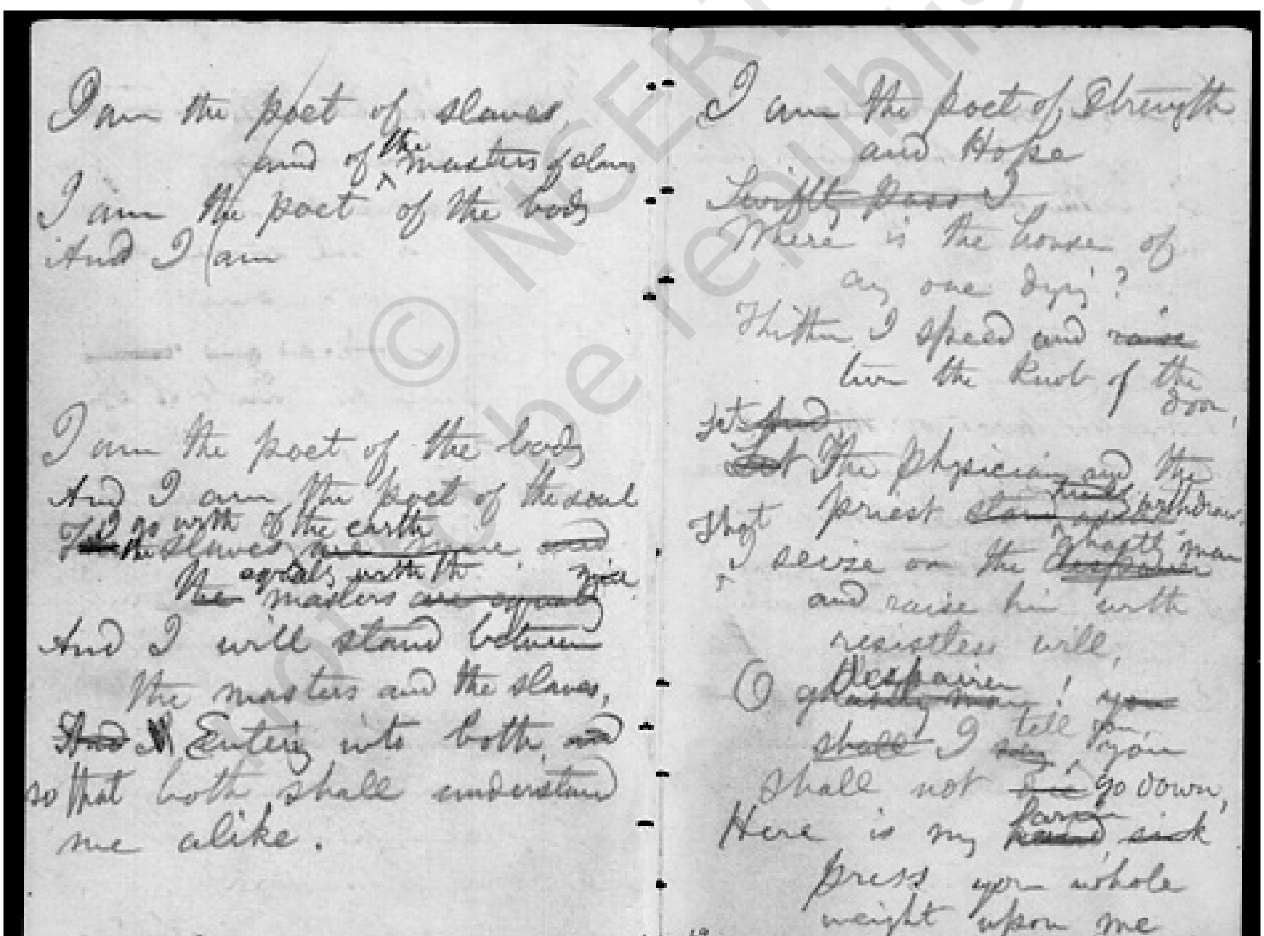

Walt Whitman's manuscript drafts of 'Song of Myself', 1855

© NCERT not to be republished

What makes a poem a good poem? Indeed, one that comes out of sincerity, emotion, imagination and thought, and most importantly, a good grasp of the medium of expression i.e., words, along with an engagement with reality. It is not an escape into some unreal realm of imagination. Only then does it come together as "special knowledge about life-experience".

A number of revisions/editing may happen before the poem is completed. You only have to see the original manuscripts of some famous poets to realise how much writing and rewriting can happen before the poem takes its final shape. There is indeed no formula to decide when the poem gets to be "final" and each poem is really an act of discovery!

Look at Whitman's engagement with the creative process while he wrote his famous poem 'Songs of Myself':

You can see how much labour and diligence went into the making of that beautiful poem. Large portions of the poem were written and then slashed; words and sometimes lines too, were changed. Notice how on the page above the "ghastly man" is interchanged with "despairer", thus changing both the rhythm of the lines as well as the meaning.

One can learn by observing, writing, rewriting, editing and the deletions that go into the making of a poem. Usually, it is difficult to get access to the making of these poems. But efforts are made by researchers and scholars to locate drafts and manuscripts of poems by famous poets, if only to understand the creative process that evolved good poems. That is why drafts of the works of great poets are procured by libraries and various institutions and preserved as valuable documents. They reveal the deliberations of the poets. A poet picks every word or phrase finally used, very consciously. To understand how and why those choices are made also help reveal the deeper meanings of the poems.

Editing one's own poem sometimes can lead to a complete rewriting of the poem. The first draft may get totally transformed into another poem by the end of the process.

Genesis of a Poem

Question: How do you start writing a poem?

W.H. Auden: At any given time, I have two things on my mind: a theme that interests me and a problem of verbal form, meter, diction, etc. The theme looks for the right form, the form looks for the right theme. When the two come together, I am able to start writing.

Question: Do you start your poems at the beginning?

Auden: Usually of course one starts at the beginning and works through to the end. Sometimes, though, one starts with a certain line in mind, perhaps a last line. One starts, I think, with a certain idea of thematic organisation but this usually alters during the process of writing.

"When I am most deeply absorbed in writing a poem I feel that I am 'translating' images, and sounds, rhythms and an emotional 'tone' into words."

— Sujatha Bhatt

© NCERT not to be republished

Between the first draft and the final one there are other versions as well, and Esther Morgan, a contemporary British poet, points out on her website: "It was an important stage for me in my development as a writer to realise that poems don't just land on the page, word perfect first time." Some poems may arrive at their final form faster than others, but usually, after the initial spurt of inspiration when thoughts and images flow quickly, the poet gets down to work on the poem as a "wordsmith". There may be several drafts of the poem before the poet is satisfied. The first attempt at a poem to the finished poem may be long journey.

> *"A Poem begins in delight and ends in wisdom"*
>
> — ***Robert Frost***

Poets on Poetry

Let us look at the renowned Malayalam poet Ayyappa Panniker's comment... "Every good poem makes a new departure". This statement stresses on the uniqueness of each good poem. This is a pointer to the power of the individual poet's creativity. In this context, the Noble laureate Lithuanian poet Czeslaw Milosz brings one's attention to the peculiar fusion of the individual and the historical when he points out how events burdening a whole community are perceived by a poet as touching him in a most personal manner.

Read the poem 'Encounter' by him—

We were riding through frozen fields in a wagon at dawn.
A red wing rose in the darkness.
And suddenly a hare ran across the road.
One of us pointed to it with his hand.
That was long ago. Today neither of them is alive,
Not the hare, nor the man who made the gesture.
O my love, where are they, where are they going
The flash of a hand, streak of movement, rustle of pebbles.
I ask not out of sorrow, but in wonder.

William Wordsworth described poetry as a "spontaneous overflow of powerful feelings and emotions recollected in tranquility". Usually the last part of this statement, "recollected in tranquility" is overlooked and the emphasis in defining poetry falls on "spontaneity" and "overflow of feelings".

> The poem within a poet suffers the danger of neglect when overpowered by routine matters of living. In the words of Gulzar:
>
> *Thousands of routine, mundane matters*
> *With sharp pointed swords*
> *Come chasing the poor little poem*
> *Into deserted spaces of my scattered mind*
> *The beloved princess of dastaans*
> *Dressed in tattered apparel*
> *– the helpless one –*
> *comes huffing and puffing*
> *seeking refuge with me*
> *Here, the poor thing's honour*
> *And there, countless*
> *Occupational matters.*

© NCERT not to be republished

Points to Ponder

- A poem emerges from a deep human impulse to express and share what the poet may have experienced in actuality or in imagination.
- The essential elements that go into the making of poetry are observation emotion, thought, imagination and appropriate words.
- Allow yourself to get into a reverie, free yourself from routine thinking and let your imagination soar, you will discover "unknown pastures" within yourself.
- For the poem to have an inner life of its own, emotions need to synthesise with thought.
- The poem in itself is an experience with its own dynamism without any finality of meaning, revealing something that may have otherwise been always hidden.
- The process/poem should offer some sort of pleasure or joy. This is what is called aesthetic pleasure.
- For language to contain and express something fresh, new expressions have to be created by the poet. In this the poet is facilitated in having what has come to be known as a poetic license, that is, freedom to change language, create fresh words and new idiom. Poets help us discover the power words are capable of.

गतिविधि–4 Activity–4

- अपनी पसंद की कोई कविता चुनें।
- कक्षा में कविता पाठ का आयोजन करें।
- साथियों को पढ़ते हुए ध्यान से सुनें।
- किसी शब्द विशेष/वाक्य/लय/बिंब आदि की अनुगूँज आपके ज़ेहन में रह जाती है।
- उसे ध्यान में रखते हुए कविता बनाने की कोशिश कीजिए।
- कक्षा में फिर से पाठ का आयोजन करें।
- पोटफ़ोलियो में लगाएँ।

- Select any poem of your choice.
- Organise a recitation session in your class.
- Listen to others carefully as they recite.
- Note any word/sentence/rhythm/image that echoes in your mind.
- Keeping that in mind compose a poem on the topic of your choice.
- Organise another recitation session in the class.
- Put the poem in your portfolio.

"Painting is poetry that is seen rather than felt, and poetry is painting that is felt rather than seen."

— Leonardo do Vinci

© NCERT not to be republished

III. Writing a Short Story

> *"Storytelling is the most powerful way to put ideas into the world today."*
> **— Robert McKee**

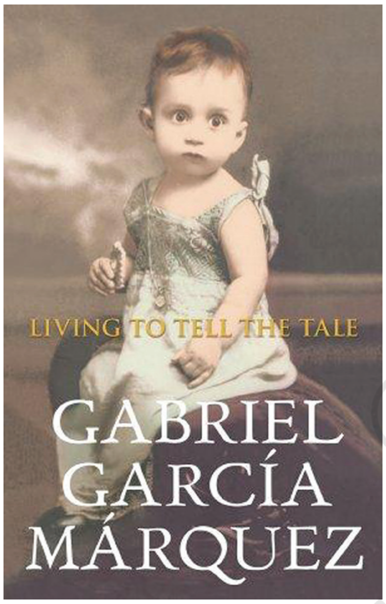

> *"A good writer is basically a storyteller, not a scholar or a redeemer of mankind."*
> **— Isaac Singer**

Latin American writer Gabrial Garcia Marquez's autobiography titled '*Living to Tell the Tale*' echoes the fact that we are all storytellers in one way or the other. Storytelling is natural to human beings. We use stories as a way of understanding ourselves, be it in a narrative, history, philosophy or even day-to-day gossip.

Storytelling has been practiced ever since human beings became articulate. Every country in the world has its culture of storytelling. In the accounts of travellers trying to relieve the boredom of a tedious journey; people conveying their ideas as allegories like fables, as well as warriors reliving old battles and celebrating heroes on the strings of lutes, harps or *ektaras*, stories have flowered. They have often been models of what a society has cherished.

You must have heard stories from your grandparents and parents. The stories that we have grown up with have their own stories. Many of them existed on the lips of generations of people before they were eventually written down.

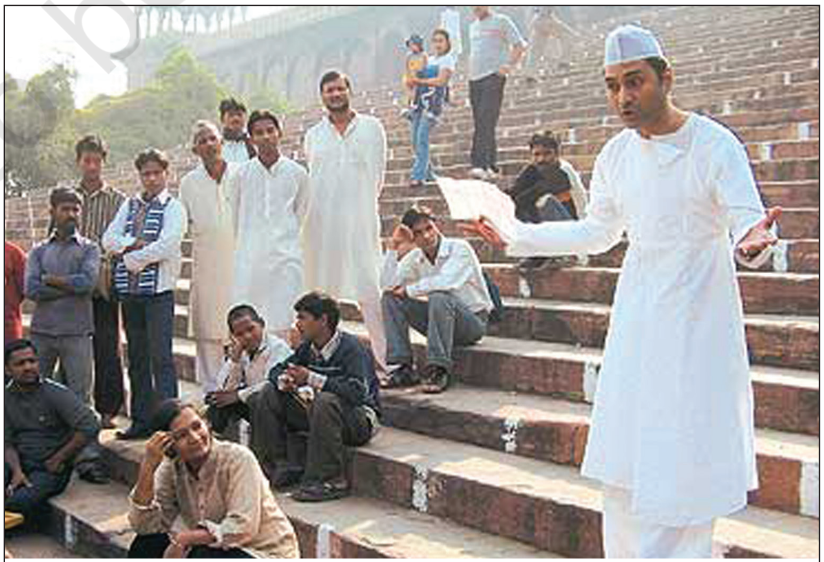

Dastangoi – the art of storytelling

© NCERT not to be republished

Oral Traditions: Poet singers from Rajasthan with their Phad *(scroll)*

Musada *singers from Himachal Pradesh*

Actually, you tell stories every day. Often, when you share with someone things that you have experienced or that you have seen or read about, you are telling the story of 'what happened', you have created a story! Now you must also be able to write it down.

A story is a string of connected happenings. Stories draw upon experiences, adventures, achievements, observations and imagination. In the process of telling stories, storytellers establish a connection with their audience, however temporary that connection might be. This is why we like hearing stories. They help us share the storyteller's experience and imagination through words.

When you read stories, keep a journal that records what you like or dislike in the stories you have read. What features do you see appearing again and again in these stories? What do you feel makes these stories powerful and interesting or uninteresting and ineffective?

© NCERT not to be republished

गतिविधि–6 Activity–6

एक अच्छी कहानी अपने भीतर कई विशेषताओं को समेटे होती है। आप अपनी पंसद की कोई ऐसी कहानी पढ़ें और उसकी उन सभी विशेषताओं को लिखें जो उसे एक अच्छी कहानी बनाती है।

A good story is a combination of various elements. Read any story that you like and list the elements which make it a good story.

See गतिविधि/Activity 5 on Page 21

Preparing Ourselves to Write

If you look around, you will find how everything has a story— people, places, trees, animals and emotions. The world does seem to be a very rich and promising place, full of stories waiting to be understood, sorted out and told. There is so much that we can observe, imagine; so much that is interesting, enjoyable and enlightening. The wide world is a treasure trove of stories waiting to be written.

Any sensitive and reflective person can write stories. A writer may or may not be born with a gift for writing but it is quite certain that effort and training are important. Expose yourself to the sights and sounds and flavours around you and do it all with great attention. Be conscious. Enjoy the finer nuances of language and what it can do and practice converting what you see and hear and experience into words. Start writing small passages that capture these experiences or aspects of them. A writer is a writer full-time, not just when he or she formally sits down to write. Tune the mind to regard the world with a writer's eye. Be alert and receptive to the narratives of others. Observe things as a storyteller or a narrator and organise what you perceive in patterns if you can see any. Read good stories written by other writers. Think about human situations and issues. Articulate what you have learnt, preferably in your diary. And always question yourself and the world you see. Do not hesitate to speak about what seems to be simple. When you write a story all of this self-preparation will help you write.

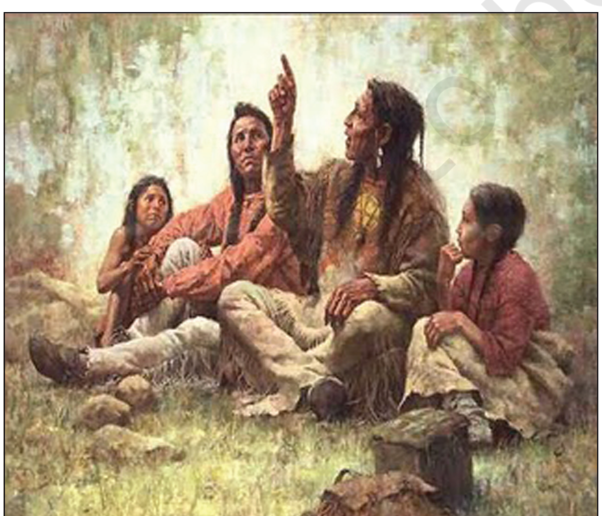

Storytelling binds generations

Dawn of an Idea

How does a short story originate in the mind? A short story starts when a sensitised mind notices something promising or disturbing or thought-provoking in the environment. Even things read or heard can initiate the creative process. You will find that stories are a combination of the

See गतिविधि/Activity 7 on Page 24

"It is the function of art to renew our perception. What we are familiar with we cease to see.
The writer shakes up the familiar scene, and as if by magic, we see a new meaning in it."

— Anaias Ñin

© NCERT not to be republished

Storytelling knows no boundaries

real and the imagined put together to form something new. When a seed is sown in the ground, it is only a tiny, round, pebble-like thing. But even at that instant, the gardener can visualise the massive tree that will sprout from the tiny seed. He/she does not know the exact height of the trunk or the curve and arch of the branches or the density of the foliage, but his/her imagination creates an imagined tree different from the real tree that will later physically emerge. The soil in which the seed is planted, that is the mind of the writer, must be fertile, by which we mean, be open, receptive, sensitive, reflective and also capable of empathising and identifying with others. Also, develop the ability to see the lighter side of situations.

Once in a while, a story just explodes into being, in an instant. However, often there is a period of creative waiting which appears to be passive but which is unconsciously very active as the idea develops. Meditate on the idea for short spells of time and let it go, only to return to it later. Don't be in a hurry to write it down. Give it time to grow. You will find that situations, characters and episodes are constructed by memory and imagination.

A story is often unified and centered around a single situation, anecdote or episode. It can be self-sufficient, or a 'slice of life'. Like a cinema shot, it must deal in quick images rather than extended treatment, 'the swift glance rather than the slow stare'.

How I write a Short Story

By Prem Chand

My stories are generally based on some observation or experience, and I try to inject into it an element of the drama. I never write a story to portray an event. Instead, I attempt to inject some philosophical or emotional truth into my stories... A study of history at times suggests plots. But no single event constitutes a story, unless it gives expression to some psychological truth. In fact, I do not actually sit down to write a short story till the time I have worked out the outline of the story from beginning till end... In these few lines I cannot describe all the aspects of the short story. It is an intellectual exercise. People can learn the art of writing a short story... It is the nature that creates plots, that imparts dramatic element, makes it motivational, and creates literary qualities.

Of course, when the story is completed, I read it carefully. If I find that it has elements of originality, or freshness, and it moves one, I consider it a successful story.

(Excerpts from a letter written in February, 1934, to the Editor, *Nairang-i-Khayal*, Lahore)

© NCERT not to be republished

Looking at the elements of a story

Let us analyse the story '*Vanka*' by Anton Chekhov.

Anton Chekhov

Vanka is the name of a nine-year-old child who has been sent away from his village to Moscow to be apprenticed to a shoemaker. As the story unfolds, we learn that Vanka is an orphan, the child of a maid servant who used to work at the house of a wealthy family in the country. Now that she is no more, Vanka's only living relative is his grandfather who works as a night watchman for the same family. It is obvious that this grandfather has no special love for Vanka and aimlessly whiles away his time. He also has made no effort to keep the orphaned child in his protection. But he is Vanka's only hope. In the shoemaker's household, Vanka is beaten, underfed and overworked. His misery is so great that he constantly longs to return to his village. He learns from hearsay that letters can be written and put in postboxes and that these letters reach the people they are sent to. So he manages to find paper and pen and with great caution and secrecy, writes an emotional letter to his grandfather, describing his wretched existence, the cruelty of his masters, his hunger and terror. He makes pathetic appeals to his grandfather to come and take him back, promising to be a good child who would love him and pray for him. Having written this childish letter, he addresses it to his grandfather.

At this point comes the principal catch in the story and one that tugs at the reader's heart strings: Vanka does not know the name of his village, nor the fact that there are such things as postal addresses, being young and rustic. He posts the letter, hopeful and happy, dreaming of home. But we, who read the story, know that the letter will never reach. This helpless child will remain a captive of his circumstances, a labourer in an unfeeling household. Even in the village, no one had really cared for him. His grandfather was self-centered and indifferent. One of the ladies of the rich household had pampered him for a while as a whim, then forgotten about him when his mother died.

Vanka is a lost soul in an uncaring world; a little life doomed to a dark future. We picture him waiting, endlessly waiting, for the protective figure of the grandfather to come and take him away. We know that this will never happen. At the back of our minds is the uncomfortable thought that all over the world, in every age, nameless,

© NCERT not to be republished

numberless such children have suffered, and all those who accepted the system have been equally responsible for it. The large issues of child-labour, poverty, illiteracy and sheer human callousness are all themes of the story.

Our reaction to the situation is an emotional response first and a social protest later. This is exactly how a would-be story dawns in the mind—as an emotional response to a moving situation and an intellectual working-out later. Chekhov picked up a common situation, imagined beyond the observed into the possible background facts. He threw himself into the child's place, summoned up the resources of his memory of people and landscapes and his knowledge of human nature and asked himself what would happen to the child's cry for help. He shared his compassion and his troubled heart with the reader in the form of this story. It is as if he diverts Vanka's cry for help to us. This story was written in 1886 but more than a hundred years later Vanka's innocent letter moves us. Do we wake up to the existence of all the Vankas who surround us and feel for them? If we do, then Chekhov's story has moved you.

You must have also read Guy de Maupassant's story '*The Necklace*'. He leaves the reader to take a deep breath and grasp the many meanings of this story: One is that if we mistake false things for real, we may have to pay a very heavy price. If we are greedy, we might lose even the good things we own. Often human beings do not appreciate the treasures they possess. What Matilda just did not notice at the start of the events was her husband's kind and accommodating nature. Despite being a modest clerk, he did not resent his wife buying an expensive dress. He wanted her to go out and enjoy herself the way she had dreamt of doing. Not once did he blame her for losing the necklace or putting him through so much trouble—the sacrifice of all his inheritance and the long hours of hardwork to repay their debt. He is a gentleman. This seems to be something his silly wife did not realise. But the author leaves a little window open for another possibility: Matilda too does not complain but pays the price bravely. She accepts her fall in social status, her

© NCERT not to be republished

गतिविधि–8 **Activity–8**

- अपने किसी एक मित्र की गतिविधियों का लगातार एक हफ़्ते तक अवलोकन करें और उसे अपनी डायरी में भी नोट करें।
- अपनी अवलोकनात्मक टिप्पणियों को पढ़ें और मित्र को मुख्य पात्र मानते हुए उनके आधार पर कहानी तैयार करें। (आप खुद भी उस कहानी के पात्र हो सकते हैं।)

- Observe a friend for a period of one week and note your observations daily in your diary.
- Based on these observations, create a short story with your friend as the main character. (You can also be a character in the story)

hours of exhausting toil as well as the loss of youth and beauty with inner strength. Maybe, in her silence lies a new respect for her husband. All these things are hinted at, never overtly stated. In literature, as in life, an understanding of truths comes from inference, not in readymade instant statements. The best stories do this. As a writer, we must learn to look beneath the surface of things and ask the deeper questions.

See गतिविधि/Activity 9 on Page 28

Plot and Story

Before you start writing, make a mental map of the story. This is a sort of blueprint, a frame or outline of events and forces that contribute to the story's dramatic essence. In conventional terms, it is called a plot—the skeletal outline that we shall proceed to flesh out as we write. The **plot** is a clear spelling out of causal connections between beginning, middle and end.

Within the borders of this mental map, there is an enormous margin of freedom. The map is only an initial creative tool. Once you start writing, the story gets a direction, scene by scene and episode by episode. Once it has gathered momentum, the writer can enjoy the freedom of breaking out of the pre-decided map and allow the story to shape itself. The operative words here are 'direction' and 'momentum'. The short story must not lose sight of the direction in which it is proceeding and it must not waste time and space in digressing or wandering away along irrelevant channels. In Chekhov's

© NCERT not to be republished

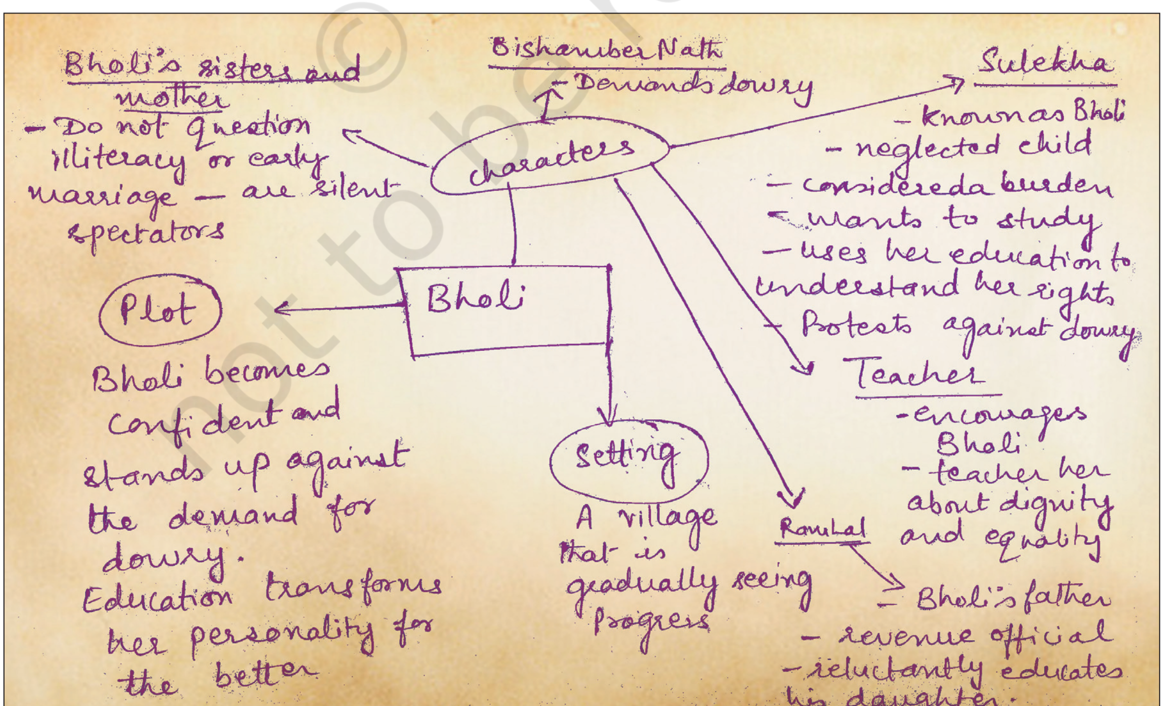

story 'Vanka', there is a simple plot. If we take the story apart and break it up into its component parts, what are the links in the chain of events?

- A child writes to his grandfather, sending a distress call to come and take him home.
- He does not know the name of his native village and does not know how to address letters.
- He posts the letter.

These are the facts on the face of it. But if we look for connectivity between the links of the chain, a different sequence emerges.

- A child is left orphaned when his mother dies.
- He is sent to Moscow as an apprentice to a shoemaker.
- He is ill-treated and is miserable.
- He learns that there are such things as letters.
- He writes a letter.
- But the letter goes astray because he does not know the name of his village.

This is the structural map or diagram of Chekhov's story. Once we have a situation to write about, we must carefully put it into logical sequences, a cause-and-effect layout and then proceed to flesh it out.

Maupassant's story has a straight plot:

A silly young woman borrows a necklace of imitation diamonds, thinking it to be real. She loses it. She and her husband then borrow the money to replace the necklace. They lose many precious years of their life, toiling to repay their debts. Then, when the debt is repaid, they discover that the necklace was false and that they had bought and returned a necklace of real diamonds in place of a false one.

Viewed like this, the event-links in the chain depend on a certain logical continuity of happenings and this is the plot.

The classic example of the difference between story and plot is: The King died. The Queen died. This simple narrative is a story and does not state the cause and effect relationship. But if we say: The King died and therefore the Queen died of grief, we have discovered a scheme, a logical connection. This is known as the plot because it states the cause and effect relationship. So, before we write the story

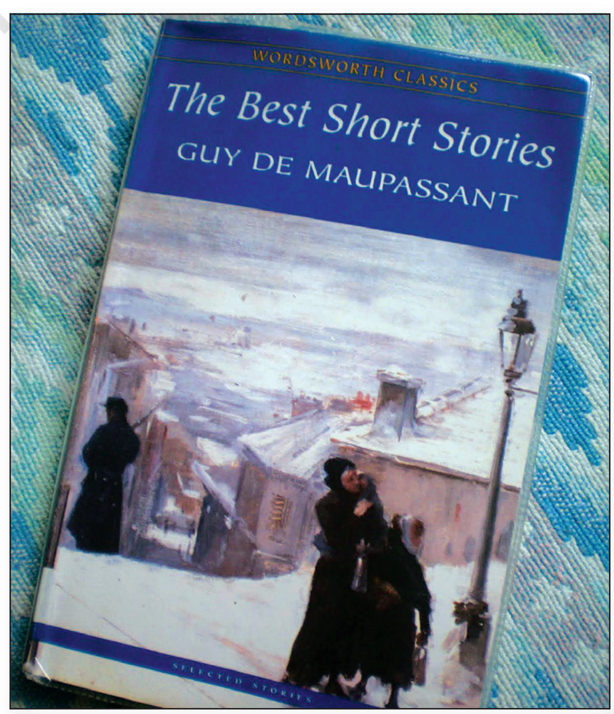

© NCERT not to be republished

we have to create a general design that clearly states the cause and effect and this design is the plot.

Structuring a Story

How does a writer develop a story episode by episode? The best way to do this is to trust one's own imagination completely, listen to the story in one's heart and watch one's mind gradually spin all the details one by one out of its stored reserves. There is really no theoretical way to develop a story except to let one's imagination go far and beyond. Relax and wait and constantly revisit the story and keep track of all the possible ideas coming up. A lot of impractical ideas will come up and also a lot of possibilities that one might reject. Out of these multiple choices offered by the mind, the writer is called upon to make a creative choice.

A humorous story will have a different line of development, a detective story a different one, a socially committed story a different one. Here, the writer has to choose a point of view or perspective, which will be most effective in telling the story. Suppose Chekhov's Vanka had been caught writing his letter by his master. Suppose his master had read it and been moved and sent the child back. Suppose he had been enraged and beaten the child to death. Suppose somebody saw Vanka trying to post an unaddressed letter and stopped him from posting it, questioned him and found out the name of the village. The story could have taken many different turns. Perhaps Chekhov chose this direction because this made Vanka's plight universal, whereas any of the other alternatives would have made it just a story of a particular child. You have to know exactly what you want your story to convey and what effects alternative versions could have.

The core ideas behind a story are its **themes**. Each story has its own energy centre both in terms of structure and theme. Its organisation is determined by the writer's internal urge to give expression to his/her feelings and ideas. What could be the central energy zone of this story? The fulcrum lies at the point at which the child writes down the name of his grandfather and adds 'The Village, full stop'. This is where the reader's pulse quickens. This is the central point on which the story turns. The climax of the story and the resolution of the complication forms another energy centre. Chekhov's story seems to locate itself towards the close of its plot. The child's history lies in the past. Only the fact of his distress call comprises the present, and the future of the letter, is implied in silence.

When you read stories analyse them and keep records of this in your journal. Notice the sequence of these elements.

But one thing must be stressed here. The writer must be able to step into the situations of other people, see the world through their eyes. If you feel for others, their stories, real or possible, offer themselves easily to your receptive imagination. Also, every person's story has many alternative stories accompanying it, depending on the exploration of other options at each point of choice.

© NCERT not to be republished

Character

Since we are here talking of sharing other people's lives, we come to an important item on our story writing agenda called **character**. As individuals we may or may not be social by nature but when we write fiction, we must be deeply interested in other people. We must watch and store mental pictures/portraits of people. We must observe faces, gait, dress, voices, mannerisms and moods. Our memories must be trained to hold minute details about others and if we are lucky to have a good visual and auditory memory, that will amount to having an in-built movie camera in one's head—a great creative aid for the writer.

What is the place of 'character' in a story? A story founded on an original 'situation' will need the creation of suitable characters. There are character-oriented stories in which our interest is in a special sort of human being and here the situation is woven around the character. The central character of the story is known as the **protagonist**. The personality or character telling the story is called a **narrator**. Since we are human beings, our interest, as writers and as readers, lies in human characters. Even the non-human characters that our inventive faculty may create are given human characteristics and their situations are such that human beings can relate to and identify with them.

In the creation of characters memory and imagination once again work together. There may be actual persons we may choose to write about and for these we have to delve into our memories. Our reading and exposure to films, TV programmes and even photographs help us to make these combinations.

Finally, as with energy centres in our stories, our created characters too acquire their own energy. Our characters must grow with the story and this growth is revealed through actions and dialogues. As we visualise our characters, we must be able to hear their voices, keep them company in their inner lives and enter their minds. Our past observations of heard voices and known persons, whether actual or in art, will help us in this and very soon the final miracle will take place—the characters in all their rounded psychological fullness will take over. The better our characters, the less apparent will be our own intervention in the story. When the personality of the writer becomes unnoticeable and the personalities of the characters come alive completely empowered, we can say that we have succeeded in creating real characters on the page.

How did Chekhov visualise and bring to life his characters? Let us go back to the story. This is how Chekhov describes Vanka's grandfather:

> *"He was a small, lean old man about sixty-five, but remarkably lively and agile, with a smiling face and eyes bleary with drink. In the day-time he either slept in the back kitchen, or sat joking with the cook and the kitchen-maids, and in the night, wrapped in a great sheepskin coat, he walked round and round the estate, sounding his rattle... Granddad was probably standing at the gate at this moment, screwing up his eyes to look at the bright red light coming*

© NCERT not to be republished

from the church windows, or stomping about in his felt boots, fooling with the servants. His rattle would be fastened to his belt. He would be throwing out his arms and hugging himself against the cold, or, with his old man's titter, pinching one of the cooks ...”

Notice the pictorial nature of this sketch. There is a line of description and after that, it is not how he looks but what he keeps doing that conveys the nature of the man for us. This is not still photography but a moving, soul-revealing image.

Find and analyse such extracts from stories that introduce and build up a character. What makes them effective?

Dialogue

It is not just how characters look and what they do, but how they speak that defines the human beings that they are. Dialogues must be true to the characters we are portraying. The way in which members of different ethnicities, regions, religious categories and social classes speak must be as close to reality as possible, but we must be careful not to use words and phrases that have become too common or stereotyped. In other words, clichés must be avoided. It is always better to do some practical homework, seek out real models and pay careful attention to their style of speaking. There is no replacement for reality and nowhere is this truth more evident than in the writing of dialogue. The language of dialogue need not follow grammatical rules and slang is often a great enrichment. Regional and folk characteristics are also very attractive and make the narration come alive. Here is a small extract from John Galsworthy's story *'Quality'* where the shoemaker is describing his thought about the Industrial Revolution due to which, the crafts and arts were dying.

“Dey get id all,” he said, *“dey get id by advertisement, nod by work. Dey take id away from us, who lofe our books. Id gomes to dis—bresently I haf no work. Every year id gets less. You will see.”* And looking at his lined face I saw things I had never noticed before, bitter things and bitter struggle and what a lot of grey hairs there seemed suddenly in his red beard!

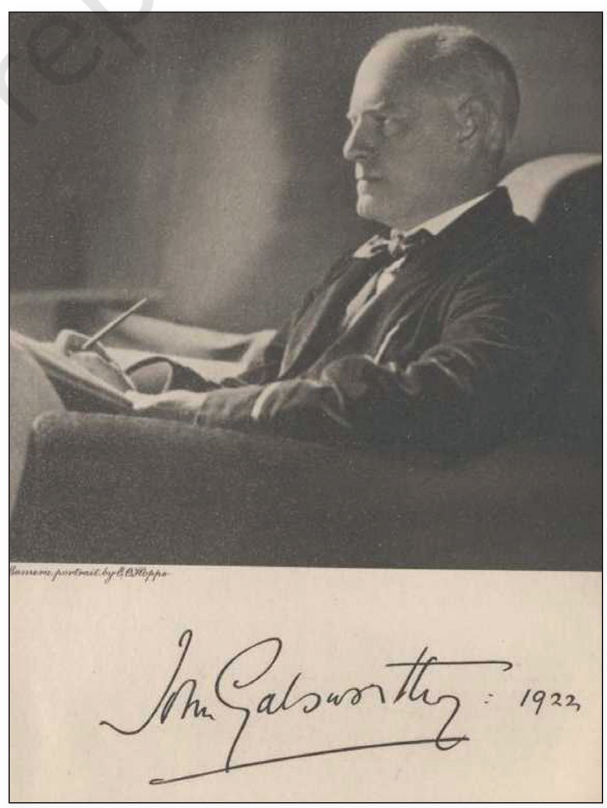

© NCERT not to be republished

The writer has replicated an exact tone of voice and manner of speaking. Normally, when we write dialogue, our sentences must be short and must follow the thought pauses, rush and stumble of natural speech. A stage comes when our characters begin chattering in our heads fulltime, even when we are not engaged in writing, and we have to constantly stop and trap their words on the page. A writer must always carry a notebook because so much of writing happens round the clock even when one is doing other things. A lot of good writing is done when one is multi-tasking and one must be ready for those wonderful inspirational flashes, which come like gifts out of the air, for the writer.

Often dialogue is also a great aid for narrating events, which may seem too flat if written in reported speech. In Maupassant's 'The Necklace' the dialogues given at the end are powerful.

"Yes, I have had some hard days since I saw you; and some miserable ones-and all because of you …."

"Because of me? How is that?"

"You recall the diamond necklace that you loaned me to wear to the Minister's ball?"

"Yes, very well."

"Well, I lost it."

"How is that, since you returned it to me?"

"I returned another to you exactly like it. And it has taken us ten years to pay for it. You can understand that it was not easy for us who have nothing. But it is finished and I am dencengly content."

Mme. Forestier stopped short. She said, "You say that you bought a diamond necklace to replace mine?"

"Yes. You did not perceive it then? They were just alike."

And she smiled with proud and simple joy. Mme. Forestier was touched and took both her hands as she replied, "Oh! My poor Matilda! Mine were false. They were not worth over five hundred francs!"

The story ends there. We have come to know that Matilda had lost her necklace. She didn't know that she toiled hard to repay for an imitation. The end captures the past and the present, and the implications of it.

Make notes in your journal about dialogues that have impressed you or that you felt needed improvement.

See गतिविधि/Activity 10 on Page 31

Atmosphere

In writing a short story, we must also learn how to create atmosphere. A story must have its atmosphere and general mood, which is useful for fixing the story in place and time. It serves as a capsule holding the story together. How is atmosphere to be created? First, a bit of essential homework is needed. The location must be studied, the period in which the story is to be framed, the extra events, which might serve as markers of time; for example, the moon-landing might give readers an idea that 1969 is meant. All these things

© NCERT not to be republished

must be explored in great detail. When we actually write the story we may not use all the material we have collected.

Ambience can be generated by using elements such as:

- an incidental but telling detail.
- a phrase
- visual effect
- a reference to a specific period
- local nuances.

Find examples of the use of each of these features. What features have you come across that help build up ambience?

> *'Those were the days when a single breadwinner supported a horde of children, a wife or two, some odd brothers and sisters and frequently half a dozen cousins and mates of the village, all on a salary of forty or fifty rupees a month. All were welcome and all were accommodated, for did not milk then sell at a paisa a* seer *(and that included a crust of cream, one-finger-thick) and silk at a rupee a yard, and a pair of the finest Flex shoes at five rupees a pair? Did I say 'welcome'? Forgive me, in our house there were some that were not. For when* Bade Chacha *Imam Bux came to stay, quite without notice and for months at a stretch, it was only the children who rejoiced.'*

What is the picture that rises before the mind's eye? That of a poor, crowded quarter of a city—wet alleys, chickens, dogs and mouldy surfaces. The mother is a brisk, emotional housewife, energetically preparing meals and aggressively airing her views. The guest is a small-built, assertive man, dressed in unwashed and torn clothes. And the age is about a century ago. The salary, the size of households, the cost of goods and even the Flex shoes, tell us that this is some time in the early-twentieth century when the British presence was dimly felt but did not penetrate the enclosed world of the lanes and courtyards of Old Delhi or Lucknow or Aligarh or any U.P. town. In short, this was the atmosphere of a modest home in North India a century ago. Many little details have gone into the creation of this ambience in this story called '*Grey Pigeon*' by Neelam Saran Gaur in the 1980s, when, obviously the world described no longer existed. Nor had it been a world to which the author personally belonged. It had been created by empathetic observation and the selection of telling or striking details. Atmosphere must never appear to be consciously created. It must be built up in tune with the background of the characters and plot.

Style

We now come to style. Stories, which are deeply felt, bring their own style with them. The language most natural to the atmosphere, characters and situation must be used. Ruskin Bond has used simple sentences in '*The Thief's Story*' yet it brings home the message that despite knowing about the theft Anil does not let it show.

> *I awoke late next morning to find that Anil had already made the tea. He*

© NCERT not to be republished

stretched out his hand towards me. There was a fifty-rupee note between his fingers. My heart sank. I thought I had been discovered."I made some money yesterday," he explained. "Now you'll be paid regularly." My spirits rose. But when I took the note, I saw it was still wet from the night's rain.

"Today we'll start writing sentences," he said. He knew. But neither his lips nor his eyes showed anything. I smile at Anil in my most appearing way. And the smile came by itself, without any effort.

Deeply felt stories find their own style, if we sink our minds into the world about which we are writing and if we become alert to the usage of language. For this we must read, listen and observe.

Masks: Props for storytelling

> *"Story writing is not photography, it's oil painting."*
>
> ***— Robertson Davies***

Clarity and brevity are time-tested qualities. There should be no unnecessary self-indulgence in language. In short, for stories 'less is more'. Also, the writer must not waste time and effort expressing his or her personal theories and opinions. Whatever these happen to be, they must appear indirectly, if at all, and not directly as a moral principle uttered by the writer. Where necessary or considered valuable, they may be thrown in as a sentence or two but never in a didactic manner.

Theme: Meaning and Message

Stories have always been used as vehicles of education and moral instruction, for example, in parables and myths. However, in the case of the modern short story, the hidden message of the story must make its impact on the reader not only as truth but also as an appeal to head and heart. The abstract ideas around which a story revolves are called its themes. They are central to the meaning and message of the story.

Let us take the example of—'*Idgah*' by Munshi Premchand. I am sure that most of you have read this story. How would you express the meaning embedded in the story? It is a story with many meanings. The first one that suggests itself is the self-restraint of a poor child, who bought a pair of iron tongs for his old grandmother. This had powerful consequences as compared to the selfish choices of his friends. It is a moral signal but the author does not attempt to preach or teach. There are other embedded meanings; for example, the idea that the clay toys bought by the child's friends are temporary attractions;

© NCERT not to be republished

that the *sipahi*, the *vakil* and the other symbols of social authority too are ultimately powerless, even a bit ridiculous; that ordinary people tend to do what they see others doing, but are quick to change their loyalties and opinions as soon as someone with the courage of his convictions stands up to them. There can be other possible interpretations as well. The greatness of the story lies in the way fun and compassion mingle; the fun so enjoyable and the pathos so dignified and controlled.

Language and Humour

There is a special point to consider now. Since those who are studying this chapter probably wish to write in English, we have to come to terms with the fact that most of us in India are bilingual, if not multilingual. How should we use the English language to yield best results? There have been writers like Raja Rao, who successfully gave English a Kannada and even a Sanskrit

A still from the screen adaptation of Malgudi Days

rhythm when he wished. The passage from '*Grey Pigeon*' gave English a whiff of Urdu. This is one way to adapt English creatively to Indian requirements. English can quite adequately receive and communicate the echos of other languages. But there is another way out, the approach that writers like R.K. Narayan and Ruskin Bond took and that is to choose a culture-neutral, transparent, functional English. This choice works very well too as we shall see.

Let us analyse one of Narayan's stories, '*Lawley Road*'. This is a story in which Narayan displays his gentle, under-played sense of humour to best effect, using a light, matter-of-fact language.

> *'For years people were not aware of the existence of a Municipality in Malgudi.' Narayan tells us, tongue-in-cheek. 'The town was none the worse for it. Diseases, if they started, ran their course and disappeared, for even diseases must end someday. Dust and rubbish were blown away by the wind out of sight …'*

Observe the soft irony of it. Narayan is telling us that all the arrangements for the maintenance of hygiene in the city were neglected, that the city was filthy and polluted, but he is doing it with a wink at the reader. He is portraying the carelessness of Malgudi's civic institutions and their fitful, crazy bursts of misjudged action. The Municipality of Malgudi emerged from oblivion to demonstrate its joyful participation in the country's independence. Streets were swept, drains cleaned, and flags hoisted. The Municipal Chairman surveyed the

© NCERT not to be republished

scene and declared with satisfaction that Malgudi had contributed to the grandeur of the occasion.

Narayan tells us something about this Municipal Chairman. '*He was a man who had done well for himself as a supplier of blankets to the army during the war, later spending a great deal of his gains in securing the chairmanship.'* In other words, the Chairman is corrupt. Narayan has cast an airy glance at filth and corruption. Although he has done it with a twinkle in his eye, he has not condoned it. He shows us the sheer absurdity of many large issues as we go on reading the story. The Chairman soon begins to feel that Malgudi has not done enough, so he has all the street names changed. Members of the Municipal Council almost come to blows because several people claim the names of the same national leaders for their own streets. We can observe Narayan having a hearty laugh.

> *'Mahatma Gandhi Road was the most sought-after title. Eight different councillors were after it. There were six others who wanted to call the roads in front of their houses Nehru Road or Netaji Subhash Bose Road .... There came a point when, I believe, the Council just went mad. It decided to give the same name to four different streets. Well, sir, even in the most democratic or patriotic town it is not feasible to have two roads bearing the same name ...'*

Title

Quite often the writer wonders whether he/she should write the story or should think of a title first and then proceed. Sometimes the writer's experience may be the experience of many people. The story becomes a medium to express the experiences and feelings of people. The title is an important part of a story. The title is effective, if it can capture and hold the attention of the reader, thus luring him/her to read on.

It can be the other way also. You may start with the title, which becomes the seed from which the story develops. The title is often linked to central ideas in the story, e.g., 'Vanka' is the name of the protagonist or the central character in the story. The title of Maupassant's story indicates that it revolves around a necklace.

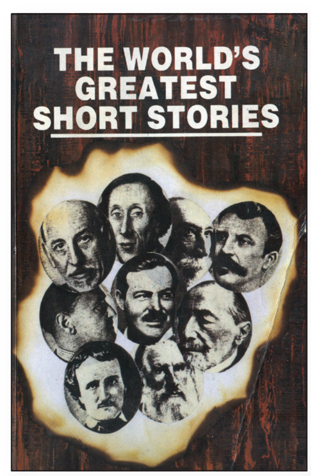

> *"When you do enough research, the story almost writes itself. Lines of development spring loose and you'll have choices galore."*
>
> — ***Robert Mckee***

© NCERT not to be republished

Points to Remember

Preparing yourself to write:

- The world is vibrant with happenings around us. You just have to observe this. Look around and you will find so much that can be told. Paying attention to the world around you is the first step in developing ideas.
- Read the works of great writers. The more you read the better it is.
- Listen to others carefully. This will help you become a better writer because when you start writing, the words or ideas that you have gathered will fall in place and make a story.
- Make a note when you see something interesting or when something happens. Your notes will help you develop a story from ideas.

© NCERT not to be republished

संवाद / *Excercise*

1. अपने आस-पास की आवाज़ों को ध्यान से सुनिए तथा उसके लिए अपनी समझ से शब्द भी दीजिए। उदाहरण के लिए– सर..... सर....., टिप..... टिप....., डिर्र....डिर्र...। ऐसे ही कुछ शब्द हवा, पानी और यातायात की आवाज़ से संबंधित बनाइए।

   We hear many sounds around us and use different words to express these sounds. For example, we say *pitter – patter, vroom – vroom, whoosh – whoosh.* Write a few words that convey the sound of water, wind and modes of transportation.

2. दिए गए लयात्मक शब्दों पर ध्यान दें–

   अंत-बसंत, इच्छा-परीक्षा, आशा-बताशा, फूल-शूल, काश-पाश, हॉल-बॉल,
   गली-कली, कंप्यूटर-स्कूटर, शान-मान, हजूर-खजूर, डाली-माली, पूना-लूना

   इनमें से कम-से-कम तीन जोड़े लेकर कुछ काव्यात्मक पंक्तियाँ लिखिए।

   Look at the following pairs of rhyming words—

   sing – ring, moon – boon, sun – fun, well – shell, matter – scatter,
   dread – spread, crop – drop, cherry – merry, mouse – house, mind – kind,

   Select at least three pairs of rhyming words from above and write verses using these pairs.

3. दिए गए चित्रों को देखकर आपको किसी पढ़ी या सुनी कविता की पंक्ति याद आ रही होगी, उसे लिखें। न याद आ रही हो तो स्वयं कोई पंक्ति बनाएँ।

Look at the pictures. Are you reminded of any lines/verses from a poem? If you do not recall any lines, write a few lines yourself.

4. कवि से ताल मिलाएँ।

(क) बहुत दिनों के बाद

(ख) बादल को घिरते देखा है

(ग) अभी न होगा मेरा अंत

(घ) बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर

(ङ) दूध जलेबी जग्गगा

(च) अक्कड़ बक्कड़ बंबे बो ...

ऊपर कुछ कविताओं की एक-एक पंक्ति दी गई है, उनकी अगली पंक्ति अपनी कल्पना से आप खुद बनाएँ और कवि के साथ ताल मिलाएँ।

Read the following lines from some poems.

(a) Twinkle, twinkle little star ...

(b) Tiger tiger burning bright ...

(c) I wandered lonely as a cloud ...

(d) All things great and small ...

(e) Trees are for birds ...

(f) Woods are lovely dark and deep ...

(g) Beauty is seen in the sunlight ...

Using your imagination, rhyme with the poet write a succeeding line for each of the above and the line/lines you have added should be in sync with the ones given.

© NCERT not to be republished

5. नीचे दी गई स्थितियों को ध्यान में रखकर कहानी लिखें–

(क) कल्पना कीजिए कि एक आदमी पेड़ पर चढ़ा है।

(ख) किन्हीं कारणों से वह पेड़ पर से नहीं उतर पा रहा है।

(ग) उसका समाधान ढूँढ़ें और नीचे उतरने में उसकी सहायता करें।

Write a story using the following prompts—

(a) imagine a man is climbing a tree

(b) due to some reasons he is unable to climb down

(c) find a solution to help him come down.

6. दिए गए चित्रों को ध्यान में रखकर एक रचना (कहानी या कविता) की रूपरेखा तैयार करें।

Look at the pictures. Think of an outline for a creative piece (short story or poem) linking these pictures.

7. आपने अक्सर यह स्लोगन पढ़ा होगा कि–***जल बचाओ, पेड़ बचाओ***। अगर आपको कभी 'कविता बचाओ' जैसे विषय पर कुछ लिखना पड़े तो वह कैसा होगा? लिखकर देखिए।

You must have come across many slogans, advertisements and poems on the topics 'Save the Trees' and 'Save the Tiger'. Write a short poem entitled 'Save Poetry'.

8. ***जागो ग्राहक जागो!/दो बूँद ज़िंदगी की*** इनमें से किसी एक पर कोई एक कहानी लिखनी हो तो आप क्या-क्या तैयारियाँ करेंगे।

Jaago Grahak Jaago!/Do Boond Zindagi ki

What steps would you follow in order to develop a short story on any one of the above.

9. कोई दस ऐसे शीर्षक लिखें जिन पर आप छोटी-छोटी कहानियाँ लिखना चाहेंगे।

Think of any ten titles which you would like to develop into short stories.

© NCERT not to be republished

2
मीडिया लेखन
Media Writing

12132CH02

© NCERT not to be republished

2. मीडिया लेखन

I. फ़ीचर लिखना

II. लेख लिखना

III. स्क्रिप्ट (रेडियो, टेलीविज़न)

IV. नए माध्यमों के लिए लिखना

2. *Media Writing*

I. Feature Writing

II. Article Writing

III. Script (Radio, Television)

IV. Writing for New Media

© NCERT not to be republished

एक बार फिरः मेरा रंग दे बसंती चोला

आजादी का जश्न हर साल मनाया जाता है। मगर वास्तविक आजादी को लेकर उठ रहा सवाल लगातार बड़ा होता जा रहा है। क्या यह सिर्फ मंत्रियों, अफसरों और प्रभावशाली तबकों तक सीमित है या इसका कोई अलग मतलब है। सपनों और खुशफहमियों के मिट जाने के बाद उठ रही आजादी की नई पुकार की तरफ इशारा कर रहे हैं राजकिशोर।

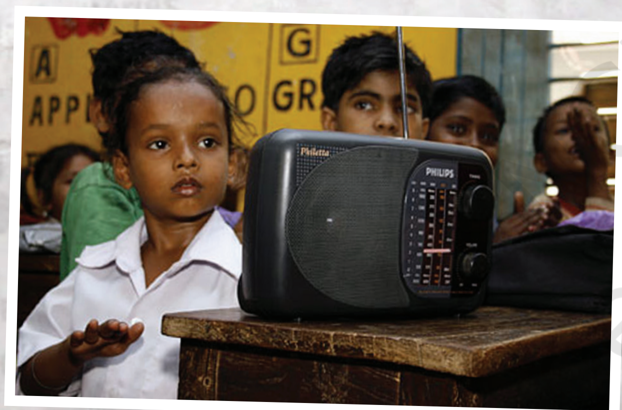

मीडिया से रू-ब-रू

पिछली इकाई में और इस पृष्ठ पर आपने कोलाज़ देखें। अब आप भी एक कोलाज़ तैयार करने की कोशिश कीजिए।

- कोलाज़ बनाने की प्रक्रिया के दौरान आपके जो भी अनुभव रहे, उन्हें विस्तार से लिखिए।
- इस कोलाज़ को नाम भी दीजिए।
- अपने साथी के साथ मिलकर एक दूसरे के कोलाज़ को ग़ौर से देखें और फ़िर मिलकर एक और शीर्षक दें।
- कक्षा में अपने इन अनुभवों को सुनाएँ।

© NCERT not to be republished

I. फ़ीचर लिखना

> सहज मनुष्य ही सहज भाषा बोल सकता है।
>
> –हजारी प्रसाद द्विवेदी

समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में आपको सबसे अधिक क्या भाता है? निश्चय ही, आप में से अधिकांश लोगों का उत्तर होगा, रिपोर्ट और आलेख, जिनमें न सिर्फ़ सूचनाएँ और जानकारियाँ होती हैं बल्कि मनोरंजक भी होते हैं। इन रिपोर्टों और आलेखों की लेखन शैली और भाषा, समाचारों और लेखों की भाषा और शैली से अलग रूपात्मक, रंजक और मन को छूने वाली होती है। इन रिपोर्टों और आलेखों को पसंद किए जाने की सबसे बड़ी वजह यह है कि ये सीधे पाठकों के अंतर्मन को छूती हैं। उन्हें गुदगुदाती, रुलाती, उदास या उत्साहित करती हैं। समाचार रिपोर्टों की एकरस, खास ढर्रे वाली और कभी-कभी उबाऊ शैली के बीच अपने नएपन और सृजनात्मक शैली के कारण ताज़ा हवा के झोंके की तरह महसूस होती हैं।

समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में इन मनोरंजक लेकिन सूचना और शिक्षाप्रद रिपोर्टों और आलेखों को फ़ीचर (रूपक) कहा जाता है।

वह सचमुच संगीत के भीमसेन थे

जहां प्रतिभा, साधना और निष्ठा मिलती है, वही पंडित भीमसेन जोशी हैं। पंडितजी अपने युग के महान गायक तो थे ही, अपने आप में एक परंपरा भी थे। जब उन्होंने संगीत की शुरुआत की, तो ऐसा रियाज किया कि संगीत का कोई भी पहलू, चाहे वह शास्त्रीय हो, सुगम संगीत हो या लोक संगीत, कुछ भी नहीं छूटा। संगीत की शक्ति उनकी गायकी की बड़ी विशेषता थी और जब वह गाते थे, तो वाकई ऐसा लगता कि जमीन हिला देंगे। वह सचमुच संगीत के भीमसेन थे। पंडितजी ने देश के कोने-कोने में जाकर संगीत सीखा था। कर्नाटक में तो खैर वह पैदा ही हुए थे, लेकिन उन्होंने पंजाब, लखनऊ, रामपुर, कोलकाता जाकर और फिर अपने गांव लौटकर भी संगीत सीखा। उन्होंने गुरुओं की सेवा की, वह उनके घर में रहे और इन सबका असर उनके गायन पर पड़ा। किराना घराना की गायकी पर पड़ा।

किराना घराना दरअसल उत्तर प्रदेश का है। मुजफ्फरनगर के समीप किराना गांव है, वहीं पर पैदा हुए उस्ताद अब्दुल करीम खान और उस्ताद अब्दुल वहीद खान ने इस संगीत घराने की नींव डाली। आगे चलकर इस घराने की दो शाखाएं हो गईं। उस्ताद करीम खान के शागिर्द थे पंडित सवाई गंधर्व, जिन्होंने पंडित भीमसेन जोशी को अपना शिष्य बनाया। किराना घराना भावना प्रधान था, पर उसमें शक्ति का संचार पंडित भीमसेन जोशी ने किया। पंडितजी के पास एक सधी हुई साफ, खनकदार आवाज थी, जिसमें वह एक सांस में पूरी तान गा सकते थे। उनकी मुरकियां विभोर कर देती थीं। पंडितजी ने घराने की शुद्धता से कोई समझौता किए बिना उसमें अपनी चीजें जोड़ीं, लेकिन यह परिवर्तन घराने को समृद्ध करने वाला था और मेरा मानना है कि आपको किराना घराना गाना है, तो आपका सीधा संबंध उस्ताद अब्दुल करीम खान और पंडित भीमसेन जोशी से होगा। उन्हें अपने सामने रखे बिना इस घराने को कोई गा ही नहीं सकता।

वैसे घराने का सिस्टम अब टूट रहा है। संगीत बदल रहा है। गुरु-शिष्य परंपरा भी बदल गई है। शिष्य, गायक बहुआयामी हो गया है। उस पर घराने की पाबंदियां नहीं हैं, लेकिन इस आजादी से उसे कुछ क्षति भी हुई है। दरअसल आज प्रतिभा तो है, पर उसके पास न तो पंडितजी जैसी निष्ठा है और न ही समय। आजकल शॉर्टकट का जमाना है। 'पैकेजिंग ऑफ म्यूजिक' जैसे जुमले सुनने को मिलते हैं यानी आज गायकों का लक्ष्य है संगीत को बेचना सीखो। उस्ताद अब्दुल करीम खान, पंडित सवाई गंधर्व और पंडित भीमसेन जोशी जैसे संत गायकों ने इसे साधना के रूप में गाया। इसलिए उनके गायन की गहराई और ऊंचाई अप्रतिम हैं।

स्कूल-कॉलेज के जमाने से ही मैं पंडितजी की गायकी का मुरीद रहा हूं। जब कभी भी उनका कार्यक्रम हुआ, उन्हें सुनने के लिए मैं स्कूल की क्लास छोड़कर भाग जाता था। यहां तक कि सालाना इम्तिहान भी मैंने छोड़ी। मैं वह दिन कभी नहीं भूल सकता, जब उन्होंने सिंह बंधुओं यानी तेजपाल सिंहजी और मुझे उन्होंने 'सवाई गंधर्व फेस्टिवल' में गाने का मौका दिया। अपने गुरु की याद में वह पुणे में इस समारोह का आयोजन करते थे और इसमें पूरे महाराष्ट्र के संगीत श्रोता शामिल होते थे। उस समारोह की प्रतिष्ठा का आलम यह रहा कि हमारा वह पहला कार्यक्रम देर रात में खत्म हुआ और अगली सुबह वहां के अखबारों में पहले पन्ने पर हमारी तस्वीर सहित बड़ी-बड़ी खबरें छपीं। सिंह बंधुओं को उसी मंच ने नाम दिया। हमें उस एक कार्यक्रम की वजह से महीनों तक कई काम मिले। हम दोनों भाई पंडितजी के इस ऋण से कभी मुक्त नहीं हो पाएंगे।

पंडितजी ने फिल्मों में भी गाया, हालांकि उन्होंने या बड़े गुलाम अली साहब ने वहां जो भी गाया है, वह अपना ही गाया है। फिल्म बसंत बहार में पंडितजी ने बसंत की बंदिश गाई है। नाट्य संगीत भी वह बेजोड़ गाते थे। कर्नाटक का भक्ति संगीत वचन भी पंडितजी अद्भुत गाते थे। इस समय के वह एकमात्र गवैया थे, जिन्होंने खयाल, सुगम संगीत, ठुमरी, जिस भी विधा पर हाथ डाला, उसमें चार चांद लगा दिए।

उनके गायन की एक बड़ी खूबी यह थी कि जब वह अभंग गाते, तो ऐसा लगता कि वह महाराष्ट्रीयन हैं, जोगिया राग गाते, तो जालंधर वाले उन्हें अपना मानते और वचन गाते, तो वह खालिस कर्नाटक के लगते। उनमें यह खूबी पंडित गंधर्व जैसी थी। पंडितजी का सबसे प्रिय राग था शुद्ध कल्याण। मैंने उनको पहली बार इसी राग में गाते सुना था। उन्हें मैंने दिल्ली में तीन बार शुद्ध कल्याण गाते हुए सुना और हर बार पहले से अनोखा। मालकौंस राग में गाया पंडितजी का 'पग लगन दे' सुनिए, वह आपको दूसरी दुनिया में ले जाता है। इसी तरह जोगिया में 'मनवा हरि का भेद न पायो' अद्भुत है। इसी तरह ठुमरी 'पिया मिलन की आस' भी विस्मृत कर देती है।

सुरिंदर सिंह सचदेव

इस दौर में उनसे आगे कोई है भी नहीं। एक पूरी पीढ़ी उन्हें सुनते हुए जवान हुई है और इस पीढ़ी की आंखों में सुर-साधना में डूबे साधक की छवि हमेशा रहेगी। उनके सुर तो अनगिनत पीढ़ियों को मुग्ध करेंगे।

पंडित भीमसेन जोशी ने कई समकालीनों के साथ जुगलबंदी की है। कर्नाटक संगीत के एम. बालमुरलीकृष्णन के साथ उनकी जुगलबंदी को शास्त्रीय संगीत के विद्यार्थी एक ग्रंथ के रूप में देखते हैं। राग शंकरा में उन्होंने राशिद खान के साथ जुगलबंदी की। पंडितजी की एक बड़ी खूबी थी कि वह नए गायकों को भरपूर स्नेह देते थे, लेकिन यदि कोई बात उन्हें बुरी लगती, तो तत्काल क्रोधित भी हो जाते थे। आज जब वह नहीं हैं, तो उनसे जुड़े लोगों को उनका प्रेम और नाराजगी, दोनों सालती है।

शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने में उनका योगदान भुलाया नहीं जा सकता। घर-घर में बच्चे-बच्चे तक शास्त्रीय संगीत को जिस एक टीवी कार्यक्रम ने पहुंचाया है, वह 'मिले सुर मेरा-तुम्हारा' है और यह संयोग मात्र नहीं है कि इसकी शुरुआत पंडितजी की आवाज से हुई है। इस दौर में उनसे आगे कोई है भी नहीं। सरकार ने तो उन्हें काफी बाद में भारत रत्न से नवाजा, पर वह बहुत पहले ही भारत रत्न बन चुके थे। एक पूरी पीढ़ी इसे सुनते हुए जवान हुई है और इस पीढ़ी की आंखों में अपनी साधना में डूबे साधक की छवि हमेशा रहेगी। उनके सुर तो अनगिनत पीढ़ियों को मुग्ध करेंगे। दुनिया से उनकी विदाई की इस घड़ी में मेरी आंखों में आंसू और जुबान पर उनकी ठुमरी के बोल हैं- पिया मिलन की आस।

लेखक प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक हैं

फ़ीचर का एक नमूना, (जनसत्ता से साभार)

हालाँकि समाचारपत्रों और पत्रिकाओं का मुख्य कार्य अपने पाठकों को तात्कालिक घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों के बारे में सूचनाएँ यानी समाचार देना है लेकिन इसके साथ ही उनका एक और महत्वपूर्ण काम अपने पाठकों का मनोरंजन करना भी है। इस तरह की सामग्री यानी फ़ीचर की सबसे बड़ी खासियत यह होती है कि यह समाचार लेखन के एक निश्चित ढाँचे से अलग हटकर लेखन में कुछ नया और प्रयोग करने की आज़ादी और अवसर देता है।

क्या नहीं है फ़ीचर?

याद रखिए एक अच्छा फ़ीचर किसी बैठक या सभा का विवरण नहीं है। फ़ीचर बड़ी घटनाओं, कार्यक्रमों और समारोहों का निर्जीव ब्यौरा नहीं है। फ़ीचर गंभीर और सूखी शोध रिपोर्ट भी नहीं है। फ़ीचर किसी घटना, मुद्दे, समस्या और विषय का बोझिल सारांश भी नहीं है। फ़ीचर समाचार नहीं है और ना ही समाचार की तरह लिखा जाता है। फ़ीचर संपादकीय या अग्रलेख की तरह किसी घटना, मुद्दे या समस्या का गंभीर विश्लेषण भी नहीं है।

क्या है फ़ीचर?

एक अच्छा फ़ीचर वास्तव में एक तथ्यात्मक कहानी है, जिसमें सृजनात्मक ऊर्जा भरी होती है। इसका मुख्य उद्देश्य पाठकों का मनोरंजन होता है और भाषा-शैली सजीव, सरस और मन को छूने वाली होती है। समाचार लेखन की तुलना में फ़ीचर लेखन कम वस्तुनिष्ठ होता है क्योंकि इसके लेखक को अपने विचार या व्यक्तिगत दृष्टि रखने के साथ-साथ स्रोतों के चयन, लेखन शैली और प्रस्तुति में पर्याप्त आज़ादी होती है।

इस मायने में फ़ीचर एक सृजनात्मक लेखन है। फ़ीचर किसी भी विषय या मुद्दे पर लिखा जा सकता है। वह गंभीर भी हो सकता है और हल्का-फुल्का भी लेकिन उसकी सबसे बड़ी खूबी यह होती है कि उसमें मानवीय रुचियों और संवेदनाओं का पूरा ध्यान रखा जाता है। समाचारों के विपरीत उसमें कल्पनाशीलता और अपने मनोभावों को ज़ाहिर करने की जगह होती है। फ़ीचर में लेखक को शब्दों के ज़रिए चित्र खींचने और रूपक गढ़ने की आज़ादी होती है। अपनी इन्हीं खूबियों के कारण फ़ीचर को पाठक बहुत पसंद करते हैं। फ़ीचर की इस बढ़ती लोकप्रियता के कारण ही समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में फ़ीचर को अधिक-से-अधिक जगह मिल रही है। अधिकांश समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में फ़ीचर सामग्री के लिए न सिर्फ़ अलग पृष्ठ निर्धारित हैं बल्कि फ़ीचर आधारित परिशिष्ट भी नियमित रूप से प्रकाशित हो रहे हैं।

फ़ीचर की प्रमुख विशेषताएँ

एक अच्छे और प्रभावशाली फ़ीचर लेखन के लिए ज़रूरी है कि पहले एक अच्छे और आकर्षक फ़ीचर की विशेषताओं को समझा जाए। वास्तव में एक अच्छा और प्रभावपूर्ण फ़ीचर कई तत्त्वों से मिलकर बना एक ऐसा पैकेज है, जिसमें भाषा और शैली के स्तर पर कई रंग शामिल हैं।

एक अच्छे फ़ीचर में निम्नलिखित बातों का होना ज़रूरी है–

1. **सृजनात्मक ऊर्जा** – एक अच्छे फ़ीचर में सृजनात्मक ऊर्जा का होना बहुत ज़रूरी है। यह ऊर्जा भाषा, शैली और प्रस्तुति के बीच बेहतर तालमेल से पैदा होती है। फ़ीचर लेखन में विषय के अनुरूप शब्दों के चयन, छोटे और सरल वाक्यों, प्रभावशाली अवलोकन और

© NCERT not to be republished

दिलचस्प विवरणों, उदाहरणों, वृत्तांतों के ज़रिए यह सृजनात्मक ऊर्जा पैदा की जा सकती है।

2. **पाठकों को आकृष्ट करने वाला** – एक अच्छे फ़ीचर की सबसे बड़ी खूबी यह होती है कि वह सीधे पाठकों को छूने वाला होना चाहिए। विषय के चयन और प्रस्तुति के ज़रिए फ़ीचर को पाठकों के लिए प्रासंगिक और उपयोगी बनाकर उनके दिल और दिमाग को छुआ जा सकता है।

3. **तथ्यों और व्यक्तियों को महत्त्व** – कोई भी फ़ीचर तथ्यों यानी सूचनाओं और जानकारियों के बिना बेमानी है। इसी तरह कोई भी सूचना या जानकारी अगर व्यक्तियों के ज़रिए दी जाए तो पाठक उसे आसानी से समझ पाते हैं और उसके साथ जुड़ाव महसूस कर पाते हैं। असल में फ़ीचर एक ऐसी तथ्यात्मक कहानी है जो व्यक्तियों यानी कथा के पात्रों के बिना निर्जीव, उबाऊ और बोझिल हो जाती है।

4. **कोण (एंगल)** – हर विषय के कई कोण होते हैं। ऐसे में जिस भी विषय पर फ़ीचर लिखना हो, उसका एक आकर्षक और प्रासंगिक कोण तलाशना बहुत ज़रूरी है। यह कोण ही किसी फ़ीचर को सबसे अलग और दिलचस्प बनाता है। फ़ीचर का कोण सामयिक, नया, दिलचस्प और उपयोगी होना चाहिए।

5. **गतिविधि** – फ़ीचर को सजीव बनाने के लिए उसमें गतिविधि को जगह देनी चाहिए। कोई भी कहानी तभी रोचक बनती है जब उसमें गतिविधि हो।

6. **भाषा** – फ़ीचर एक तरह का रूपात्मक लेखन है। इसके लिए ज़रूरी है कि फ़ीचर की भाषा जीवंत, दिलचस्प और आकर्षक हो। इसके अलावा भी फ़ीचर की कई विशेषताएँ हैं जिनमें प्रमुख हैं—फ़ीचर के साथ दिए जाने वाले छायाचित्र (फ़ोटोग्राफ़्स), रेखांकन और ग्राफ़िक्स आदि। एक अच्छे फ़ीचर की तस्वीरों या रेखांकन/ग्राफ़िक्स के बिना कल्पना नहीं की जा सकती है। इनसे फ़ीचर न सिर्फ़ और अधिक दिलचस्प और पठनीय हो जाता है बल्कि प्रस्तुति के स्तर पर और भी प्रभावी बन जाता है।

COP15 COPENHAGEN
कोपेनहेगन 7–18 दिसंबर

पिघलते ग्लेशियर

इसरो ने गुरुवार को चेतावनी के लहजे में कहा कि गंगोत्री का ग्लेशियर गत तीस वर्षों में 1.5 कि.मी. घट गया है। इस अध्ययन में चौंकाने वाली बात ये है कि नासा द्वारा दिए गए साक्ष्यों के मुकाबले ये ग्लेशियर कहीं अधिक तेजी से पिघल रहा है। हिन्दू मान्यताओं में बेहद पवित्र माने जाने वाले इस ग्लेशियर की रक्षा की जिम्मेदारी भारत सरकार की है, लेकिन पर्यावरण संतुलन बनाए रखने का काम सरकार और गैर-सरकारी दोनों स्तरों पर किए जाने की आवश्यकता है।

औद्योगिक प्रदूषण

यह दृश्य है पोलेंड का जहां काला धुआं उगलती चिमनियों के आगे खड़ी पुलिसकर्मी। पोलेंड के पोजनान शहर के 80 कि.मी. पूर्व में ग्रीनपीस कार्यकर्ता धरने पर बैठे थे। उनकी मांग थी कि सरकार यूरोपियन पर्यावरण परिवर्तनों पर सहमति लागू करे।

...ये कार्बन उत्सर्जन

अगर भारत में ट्रैफिक के ऐसे दृश्य रोजमर्रा देखने को मिलते हैं तो विदेशी शहर भी कुछ अलग नहीं। ट्रैफिक का धुआं प्रदूषण का एक बड़ा कारण है। यह दृश्य है लाओस का जो दुनिया की सबसे घनी आबादी वाले शहरों में से एक है।

शहरों को

फ़ीचर लेखन से पूर्व की तैयारी

फ़ीचर की प्रमुख विशेषताओं से परिचित होने के बाद उसे लिखने की कला सीखने की बारी आती है। लेकिन फ़ीचर लिखने की कला सीखने से पहले यह जानना ज़रूरी है कि लेखन से पहले क्या और कैसी तैयारी की जानी चाहिए? इससे फ़ीचर लेखन न सिर्फ़ आसान हो जाता है बल्कि फ़ीचर दिलचस्प और बेहतर बन जाता है। फ़ीचर लेखन की शुरुआत से पहले तैयारी ज़रूरी है–

1. **विषय का चयन** – एक फ़ीचर लेखक के सामने सबसे पहली और बड़ी चुनौती सामयिक, उपयोगी, दिलचस्प और प्रासंगिक विषय के चुनाव को लेकर होती है। अधिकांश नए लेखकों को सबसे अधिक समस्या विषय के चुनाव की होती है और उसके सबसे दिलचस्प और सामयिक कोण की खोज में ही करनी पड़ती है। समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में फ़ीचर लेखन के लिए विषय का चयन कई बार लेखक भी करता है और कई बार फ़ीचर संपादक भी अपनी ज़रूरत के अनुसार विषय सुझाते हैं।

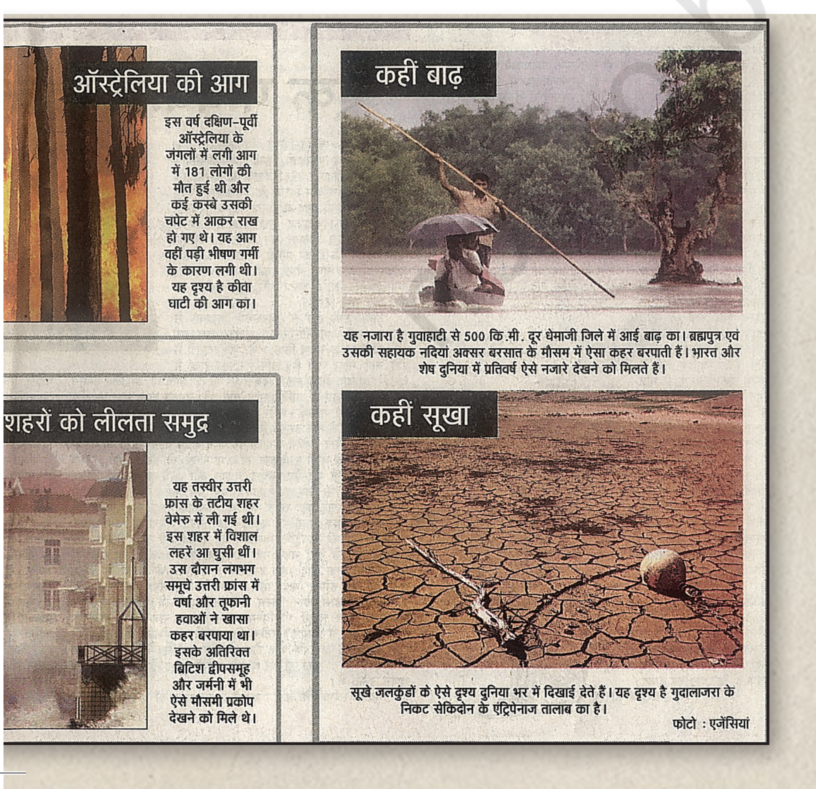
ऑस्ट्रेलिया की आग

इस वर्ष दक्षिण-पूर्वी ऑस्ट्रेलिया के जंगलों में लगी आग में 181 लोगों की मौत हुई थी और कई कस्बे उसकी चपेट में आकर राख हो गए थे। यह आग वहीं पड़ी भीषण गर्मी के कारण लगी थी। यह दृश्य है कीवा घाटी की आग का।

कहीं बाढ़

यह नजारा है गुवाहाटी से 500 कि.मी. दूर धेमाजी जिले में आई बाढ़ का। ब्रह्मपुत्र एवं उसकी सहायक नदियां अक्सर बरसात के मौसम में ऐसा कहर बरपाती हैं। भारत और शेष दुनिया में प्रतिवर्ष ऐसे नजारे देखने को मिलते हैं।

शहरों को लीलता समुद्र

यह तस्वीर उत्तरी फ्रांस के तटीय शहर वेमेरु में ली गई थी। इस शहर में विशाल लहरें आ घुसी थीं। उस दौरान लगभग समूचे उत्तरी फ्रांस में वर्षा और तूफानी हवाओं ने खासा कहर बरपाया था। इसके अतिरिक्त ब्रिटिश द्वीपसमूह और जर्मनी में भी ऐसे मौसमी प्रकोप देखने को मिले थे।

कहीं सूखा

सूखे जलकुंडों के ऐसे दृश्य दुनिया भर में दिखाई देते हैं। यह दृश्य है गुदालाजरा के निकट सेकिदोन के एंट्रिपेनाज तालाब का है।

फोटो : एजेंसियां

2. **शोध** – विषय के चुनाव के बाद उसके बारे में सामग्री इकट्ठा करने के लिए शोध करना पड़ता है। शोध के तहत फ़ीचर के विषय से जुड़े विभिन्न पहलुओं के बारे में पुस्तकालय और इंटरनेट से सामग्री जुटाई जाती है। दस्तावेज़ों, रिपोर्टों, पुस्तकों, पत्रिकाओं और समाचारपत्रों की फाइलों को खंगालने पर उस विषय के बारे में काफ़ी जानकारी मिल जाती है। इसी तरह इंटरनेट जानकारियों और सूचनाओं का एक महासागर है। लेकिन इंटरनेट के इस्तेमाल में सावधानी बरतनी ज़रूरी है क्योंकि वहाँ सामग्री इतनी अधिक होती है कि उसकी विश्वसनीयता की जाँच और छंटाई बहुत मुश्किल हो जाती है।
3. **साक्षात्कार और भ्रमण** – एक अच्छे और दिलचस्प फ़ीचर के लिए सामग्री जुटाने के वास्ते उस विषय से जुड़े लोगों, विशेषज्ञों और जानकारों से मिलना, उनका साक्षात्कार लेना और उन स्थानों की यात्रा ज़रूरी है। इससे फ़ीचर जीवंत और दिलचस्प हो जाता है।
4. **फ़ोटो, रेखांकन और ग्राफ़िक्स** – आप जिस विषय पर भी फ़ीचर लिख रहे हों, उससे जुड़े फ़ोटोग्राफ़्स, रेखांकन या ग्राफ़िक्स के बारे में भी पहले से योजना बनाकर उन्हें इकट्ठा करना शुरू कर देना चाहिए। एक अच्छे फ़ीचर के लिए आलेख पर जितनी मेहनत की जाती है, उससे कम मेहनत फ़ोटो, रेखांकन और ग्राफ़िक्स पर नहीं होनी चाहिए। इनका इतना अधिक महत्त्व है कि आलेख के बराबर या उससे अधिक जगह फ़ोटो, रेखांकन और ग्राफ़िक्स को दी जाती है।

पर्यावरण पर आधारित इस फ़ोटो फ़ीचर को देखिए और एक अच्छा विषय चुनकर एक फ़ीचर लिखिए

अगर आप कुतुब मीनार पर एक फ़ीचर लिख रहे हैं तो कुतुब मीनार की भव्यता के विवरण से फ़ीचर की शुरुआत हो सकती है। इसी तरह अगर आप किसी दुर्घटना पर फ़ीचर लिख रहे हों तो उसकी शुरुआत घटनास्थल के विवरण से कर सकते हैं। इसके बाद आप उस पूरी घटना के बाकी तथ्यों और विवरणों को प्रस्तुत कर सकते हैं। इसी तरह अगर आप अपने इलाके की किसी नदी या झील के प्रदूषण की ओर लोगों का ध्यान खींचने के लिए फ़ीचर लिखना चाहते हैं तो उसकी शुरुआत उस नदी या झील के किसी खास विवरण से हो सकती है जिससे प्रदूषण की व्यापकता का पता चलता हो। ऐसा करते हुए यह ध्यान ज़रूर रखना चाहिए कि फ़ीचर की शुरुआत दिलचस्प होने के साथ-साथ उसमें नयापन और विषय की झलक हो।

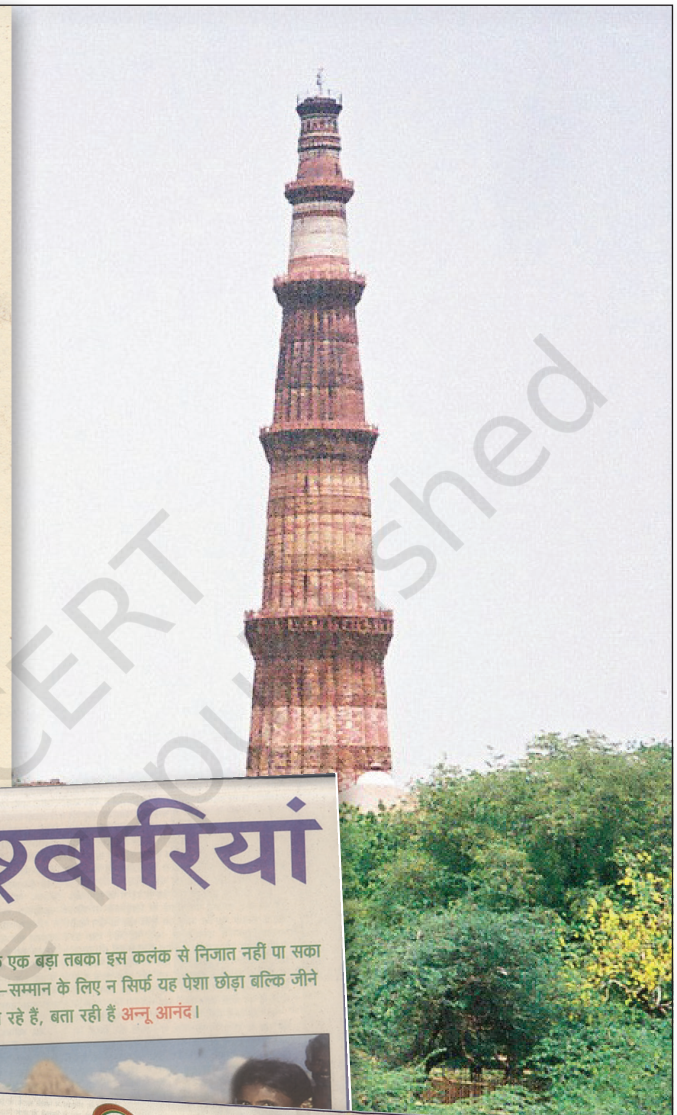

नई राह की दुश्वारियां

मैला ढोने की कुप्रथा आज भी कई इलाकों में जारी है। यही वजह है कि एक बड़ा तबका इस कलंक से निजात नहीं पा सका है। लेकिन मध्य प्रदेश के देवास जिले में मैला ढोने वालों ने अपने मान-सम्मान के लिए न सिर्फ यह पेशा छोड़ा बल्कि जीने की नई राह थामी। उनकी इस राह में कैसे रोड़े आ रहे हैं, बता रही हैं अन्नू आनंद।

आवाज दो हम एक हैं, झाड़ू टोकरा तोड़ दिया मैला ढोना छोड़ दिया।

सुनो सुनों गांव की बहनों मैला ढोना बंद करो, नारायण जी की बात ही सुन लो, मैला ढोना बंद करो।' ये पंक्तियां मध्य प्रदेश के देवास जिले के भरौंसा गांव के छोर पर बनी कच्ची बाल्मीकि बस्ती में गाई जा रही थीं। किरन बाई बस्ती के बीचोंबीच बने मिट्टी से लिपे-पुते चबूतरे पर बस्ती की कुछ महिलाओं और बच्चों को यह गीत सिखा रही थी। बच्चे जोर-जोर से गा रहे थे। गीत खत्म होते ही सभी बच्चे अपने-अपने घरों की ओर भाग गए। किरन अन्य महिलाओं के साथ बैठी इस विचार-विमर्श में मगन थी कि ये बच्चे फिर से कब और कैसे स्कूल जा पाएंगे? ये वे बच्चे थे जिनकी माताएं पिछली लंबे समय से मैला ढोने का काम कर रही थीं।

फरवरी 2002 में जिले में चलने वाले गरिमा अभियान के तहत किरन सहित बस्ती की 26 महिलाओं ने यह काम करना छोड़ दिया। मध्य प्रदेश में इस अभियान के तहत मैला ढोने वालों को अपनी मान-मर्यादा और सम्मान की खातिर इस काम को छोड़ने के लिए तैयार किया जा रहा है। किरन बताती है कि यह काम छोड़ने के बाद उन सभी महिलाओं के पास बच्चों का पेट पालने के लिए कोई विकल्प नहीं था। उन्होंने खेतों में मजदूरी करना शुरू किया। लेकिन यह मजदूरी का काम भी कभी-कभार मिलता। मजदूरी के काम से अनजान किरन अक्सर नौ बीघा सोयाबीन काटती जबकि उसे मजदूरी केवल सात बीघा की ही मिलती। किरन सहित काम छोड़ने वाली बस्ती की अन्य महिलाओं के बच्चों को स्कूल में मिलने वाली छात्रवृत्ति भी बंद कर दी गई। अब बस्ती के अधिकतर बच्चे स्कूल से बाहर हैं। केंद्र सरकार ने जब वर्ष 1993 में मैला ढोने के अमानवीय कार्य को बंद करने का अधिनियम लागू किया था तो साथ में काम छोड़ने वाले लोगों के लिए पुनर्वास की योजनाएं भी लागू की थीं। इनमें से एक योजना अस्वच्छ धंधों में लगे लोगों के

अलविदा नर्मदा

प्रकृति के चितेरे और नर्मदा के अथक सहयात्री अमृतलाल वेगड़ की पदयात्राएं अनोखे अनुभव समेटे हुए हैं। बीते दिनों उन्होंने अपने साथी पथिकों के साथ नर्मदा की दो सहायक नदियों की परिक्रमा की थी। पहले बुढ़बेर और फिर बंजर की। यहां वे आखिरी नर्मदा पदयात्रा के रोचक संस्मरण बता रहे हैं।

बर्फ पानी के ही प्रकार हैं। लेकिन जीवन वहीं संभव है, जहां पानी है। और पानी केवल पृथ्वी के पास है। इसीलिए पृथ्वी पर जीवन है। हमें अधिकांश पानी अपनी नदियों से मिलता है। लेकिन हम हैं कि अपनी नदियों को चौपट करने पर तुले हुए हैं। अगर नदियां रहेंगी, तो हम रहेंगे। बच्चो, नदी प्रकृति का बहुत बड़ा वरदान है। हम उसका दुरुपयोग न करें। नदी को गंदा न करें। बाद में चाहे जितना साफ करें, गंदगी के घाव रह जाते हैं।

इसके साथ ही 'लेखक से मिलिए' कार्यक्रम पूरा हुआ। पारिश्रमिक के रूप में हमें डाल के पके बढ़िया सीताफल मिले। वहां से धर्मशाला गए तो देखा- हमारे साथियों ने सीताफल की एक बड़ी टोकरी ही खरीद ली थी और प्रदीप गुप्ता के नेतृत्व में कुछ साथी सीताफल खाने में प्राणपण से जुटे थे। एक नगर में भाजी के भाव मिठाई मिलती देखकर एक चेले ने अपने गुरु का साथ छोड़ दिया और वहीं रह गया। यहां सीताफल इतने अच्छे और सस्ते हैं कि मन करता है कि यहीं रह जाऊं। फिर जो दशा चेले की हुई थी, वही मेरी होती हो तो हो।

यहां की धर्मशाला बहुत छोटी थी। तभी एक ग्रामीण आया। नाम था तेजबल विश्वकर्मा। बड़े आग्रह से हमें- जिन्हें उसने कभी देखा तक न था- अपने घर ले गया। इस तरह हमारा रेवड़ उसके घर जा पहुंचा। उसके घर का

© NCERT not to be republished

फ़ीचर लेखन की प्रक्रिया

फ़ीचर के लिए ज़रूरी सामग्री इकट्ठा करने के बाद उसके लेखन की बारी आती है। लेखन की शुरुआत करने से पहले कुछ खास बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है–

- फ़ीचर के आकार यानी उसकी शब्द संख्या और उसे मिलने वाली जगह (स्पेस) के बारे में स्पष्टता और अनुशासन का ध्यान रखना ज़रूरी है।
- फ़ीचर के संभावित पाठक वर्ग की रुचियों, ज़रूरतों और अपेक्षाओं को हमेशा अपने ज़ेहन में रखना चाहिए। विषय के चयन से लेकर उसके लिए सामग्री इकट्ठा करते हुए और फ़िर लिखते हुए यह हमेशा याद रखिए कि उसका पाठक कौन है और वह क्या चाहता है?
- फ़ीचर जिस समाचारपत्र या पत्रिका के लिए लिखा जा रहा है, उसकी प्रकृति, उसके पाठक वर्ग और उसकी भाषा और शैली का ध्यान रखिए। इससे फ़ीचर संपादक को संपादन में सहूलियत होती है।
- इसके साथ ही फ़ीचर लिखते हुए संपादक के निर्देशों का पालन करना भी ज़रूरी है। जैसे अगर संपादक ने 500 शब्दों में फ़ीचर लिखने के लिए कहा है और उसका एंगल भी बताया है तो उस निर्देश का पालन अवश्य किया जाना चाहिए।

फ़ीचर लिखते हुए किसी भी नए लेखक को सबसे अधिक परेशानी यह होती है कि फ़ीचर की शुरुआत कैसे करें, उसको आगे कैसे बढ़ाएँ और उसका अंत कैसे करें? असल में, फ़ीचर लिखने का कोई फॉर्मूला नहीं है। समाचार लेखन की तरह उसकी शुरुआत और उसके ढाँचे का भी कोई नियम नहीं है। फ़ीचर की शुरुआत कहीं से भी हो सकती है। शर्त सिर्फ़ यह है कि शुरुआत दिलचस्प और पाठक को तुरंत बांध लेने वाली होनी चाहिए। वैसे फ़ीचर की

गतिविधि–11 Activity–11

अपने शहर/इलाके के किसी नदी/झील/तालाब पर 400 शब्दों में एक फ़ीचर लिखिए। इस फ़ीचर में इन सभी पहलुओं का समावेश ज़रूर कीजिए–

- नदी/झील/तालाब के बारे में तथ्यात्मक जानकारियाँ, उससे स्थानीय समुदाय को लाभ और उनकी अन्य खूबियाँ
- नदी/झील/तालाब के बारे में नगरपालिका/जलकल/प्रदूषण नियंत्रण विभाग के अधिकारी, उसके किनारे रहने वाले और वहाँ घूमने आने वाले दो-तीन व्यक्तियों और किसी वैज्ञानिक या अपने विद्यालय में विज्ञान के शिक्षक से उसकी खूबियों, समस्याओं और महत्त्व पर साक्षात्कार
- नदी/झील/तालाब घूमने जाइए और उसकी खूबियों पर नोट्स लीजिए। उनकी कुछ तस्वीरें भी लीजिए जिससे नदी/झील/तालाब की खूबसूरती उभरकर सामने आ सके। इन तस्वीरों को फ़ीचर में शामिल कीजिए–

Write a feature in about 400 words on a river/lake/pond in your locality/town. Include the following while writing the feature—

- Factual information about the river/lake/pond. Its usefulness to the locals and other features.
- Interview officials from municipal corporation/ water works department pollution control department. Also interview two/ three people living near that area or visitors and any scientist or science teacher of your school about its features, problems and importance.
- Visit that river/lake/pond and take notes based on your observation. Take a few photographs highlighting the beauty of that place. Include these in the feature.

देखें गतिविधि/Activity 12 पृष्ठ 101

© NCERT not to be republished

शुरुआत करने के कुछ तरीके भी हैं। सबसे पहला तरीका तो यह है कि आप फ़ीचर को एक वृत्त की तरह सोचें। इस तरह आप फ़ीचर उस वृत्त के जिस भी बिन्दु से शुरू करें, वह कहानी वृत्त का पूरा चक्कर लगाते हुए अंततः उसी बिन्दु पर समाप्त होनी चाहिए, जहाँ से उसकी शुरुआत हुई थी। इसलिए फ़ीचर की शुरुआत का कोई सही या गलत तरीका नहीं होता।

आमतौर पर फ़ीचर की शुरुआत दो तरह से हो सकती है। पहला यह कि आप जिस विषय पर फ़ीचर लिख रहे हों, उसके किसी खास पहलू के दृश्यात्मक विवरण से फ़ीचर की शुरुआत हो सकती है।

कैसे खोजें विषय?

फ़ीचर के लिए दिलचस्प विषय या आइडिया की खोज किसी भी नए फ़ीचर लेखक के लिए सबसे बड़ी चुनौती होती है। यह आप भी महसूस करते होंगे। आप किसी समाचारपत्र, पत्रिका या स्कूल की पत्रिका के लिए फ़ीचर लिखना चाहते हैं लेकिन समझ में नहीं आ रहा है कि किस विषय पर लिखें या फ़ीचर के लिए दिलचस्प आइडिया कहाँ से ले आएँ? ज़ाहिर है कि विषय या आइडिया ढूँढ़ने का कोई फॉर्मूला नहीं है लेकिन यकीन मानिए, विषय या आइडिया की खोज इतनी मुश्किल भी नहीं है। अगर आप ये उपाय आज़माएँ तो आपके पास विषय की कमी नहीं होगी–

- आप मानें या न मानें लेकिन सच यही है कि हमारे इर्द-गिर्द विषयों की भरमार रहती है। ज़रूरत है तो सिर्फ़ उसे पहचानने की। इसके लिए ज़रूरी है–अवलोकन क्षमता, कल्पनाशक्ति और विश्लेषण क्षमता। यह क्षमता अपने आस- पास की चीज़ों, समाज, उसके वातावरण और पारस्परिक संबंधों पर बारीक निगाह रखकर और हर अच्छे-बुरे बदलाव को पहचानकर विकसित की जा सकती है। गौ़र से देखिए तो हमारे आस-पास कितना कुछ बदलता, बनता-टूटता और नया होता रहता है, वह सब हमारे फ़ीचर के लिए दिलचस्प विषय हो सकते हैं।
- विषय और आइडिया का एक और प्रमुख स्रोत खुद अखबार, पत्रिकाएँ और पुस्तकें हैं। समाचारपत्रों, पत्रिकाओं की खबरों, रिपोर्टों, फ़ीचर, साक्षात्कारों, लेखों यहाँ तक कि उनके विज्ञापनों में कई आइडिया छिपे होते हैं। उदाहरण के लिए–उस समाचार को लीजिए जिसके मुताबिक मानव संसाधन विकास मंत्री ने घोषणा की है कि दसवीं में बोर्ड परीक्षाएँ नहीं होंगी। इस खबर के आधार पर आप अपने स्कूल के नवीं और दसवीं के छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों से इस फैसले के विभिन्न पक्षों पर बातचीत करके फ़ीचर तैयार कर सकते हैं।
- इसी तरह टीवी, रेडियो और इंटरनेट से भी आपको फ़ीचर के कई आइडिया मिल सकते हैं।
- इसके अलावा अपने शिक्षकों, मित्रों, परिजनों, पड़ोसियों और परिचितों से बातचीत में भी आपको कई विषय और आइडिया मिल सकते हैं।
- आइडिया को सहेज कर रखना भी उतना ही ज़रूरी है। इसके लिए विषयों की एक अलग से फ़ाइल तैयार करिए। यह फ़ाइल गाहे-बगाहे आपकी मदद करेगी।

फ़ीचर की शुरुआत यानी इंट्रोडक्शन् के बाद उसके मध्य भाग को लिखते हुए कुछ खास बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है। अच्छा तो यह होगा अगर आप फ़ीचर की शुरुआत करते हुए ही उसके अगले हिस्सों के बारे में भली-भाँति विचार कर लें। तात्पर्य यह कि अगर आपने फ़ीचर की दिशा और कथानक के बारे में पहले से सोच रखा है तो आपको शुरुआत

© NCERT not to be republished

के बाद बहुत मुश्किल नहीं होगी। इसका एक बेहतर तरीका यह हो सकता है कि आप पहले सोच लें कि इस फ़ीचर में क्या-क्या ज़रूरी है, जो देना ही है। वे सभी जानकारियाँ एक उचित क्रम में और किसके हवाले से आएँगी, यह स्पष्ट होने पर फ़ीचर का विस्तार आसान हो जायेगा। इसके बाद आप एक सहज प्रवाह के साथ हर पैराग्राफ़ में एक महत्वपूर्ण जानकारी/तथ्य देते हुए फ़ीचर को आगे बढ़ा सकते हैं।

फ़ीचर की शुरुआत करने का दूसरा तरीका यह है कि फ़ीचर की शुरुआत में ही प्रमुख पात्र का परिचय देते हुए उसके ज़रिए उस विषय या समस्या या मुद्दे की कथा को उठाया जाए। इसके बाद उस विषय या समस्या के अन्य पहलुओं और जानकारियों को प्रस्तुत किया जाए। असल में फ़ीचर की शुरुआत बहुत हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि आपने फ़ीचर के लिए तैयारी करते हुए अपने शोध, साक्षात्कारों और प्रत्यक्ष अनुभव के ज़रिए क्या कुछ खोजा है। आपके पास जितनी अधिक जानकारी और अच्छे साक्षात्कार होंगे, आप उतना ही अच्छा फ़ीचर लिख सकेंगे। उदाहरण के लिए, इन्ही विशेषताओं से भरपूर नीचे एक फ़ीचर दिया जा रहा है–

अपने ही मुल्क में बेगाने

देश में घुमंतू जातियां की तादाद करीब पंद्रह करोड़ है। लेकिन अब भी ज्यादातर के पास न कोई ठौर है, न ठिकाना। समाज और प्रशासन उनके साथ जरायमपेशा लोगों की तरह सुलूक करता है। इनकी गुरबत और तंगहाली के बारे में बता रहे हैं पंकज रामेंदु।

1 मई 2011

गुलामी के घेरे में वनों के बाशिंदे

जंगलों की रखवाली के लिए बसाए गए टांगिया वनवासियों की हालत आजादी मिलने के बाद उलट गई। कहां उन्हें अपने वनों का मालिक होना चाहिए था और कहां उन्हें उजाड़ दिया गया। अपने ही मुल्क में वे बेगानों जैसे हैं। जो कानून बना, उसे लागू नहीं किया जा रहा है।उनकी मुश्किलों को बता रहे हैं रोमा और रजनीश।

28 मार्च 2010

जिन्होंने संभाली पढ़ाई लिखाई की कमान

यह बात साफ हो चुकी है कि अकेले सरकारी बूते से अनपढ़ता का अंधेरा दूर नहीं हो सकता। जन-सहयोग भी जरूरी है। इस हकीकत और जिम्मेदारी को देश की कुछ महिला सरपंचों ने बखूबी समझा है और वे अपने-अपने गांव या हलके में शिक्षा का उजाला फैलाने में लगी हैं। सरपंची के तमाम काम संभालते हुए उन्होंने किस तरह इस प्रेरक मुहिम को अंजाम दिया, बता रहे हैं राजकिशोर।

12 जुलाई 2009

(जनसत्ता से साभार)

महान क्यों हैं सचिन

महानता के कई घटकों में से दीर्घता को सबसे पहले अलग रख दें क्योंकि पारखी लोग गरिमा, खूबसूरती और नफ़ासत की बात करेंगे; प्रशंसक आँकड़ों, टेस्ट रन, मेजर्स, ग्रैंड स्लैम, ओलंपिक पदक की बात करेंगे; लेखक जीते गए यादगार मुकाबलों की बात करेंगे; तो रोमांटिक लोग बहादुरी भरे प्रयासों का ज़िक्र करेंगे लेकिन दीर्घता? यह तो मशीनों की होती है, निश्चित ही आप यह नहीं कह सकते कि सचिन तेंडुलकर इसलिए महान हैं क्योंकि वे 20 वर्ष खेल चुके हैं। क्या ऐसा कह सकते हैं? है न बेकार की बात?

इसके बावजूद यही मेरा शोध है। दीर्घता में वे सारे गुण हैं जो सबको प्रिय हैं। अगर आप 20 साल तक खेलते रहते हैं तो निश्चित ही आपमें एक खिलाड़ी के सभी गुण विद्यमान हैं। आप सचिन की महान पारियों पर नज़र डाल सकते हैं, आप अपने दिमाग में संजोकर रखे सभी दृश्यों को याद कर सकते हैं, आप उनके आंकड़ों पर गौर कर सकते हैं लेकिन यह तथ्य कि उन्होंने अपना शरीर और दिमाग एकदम स्वस्थ बनाए रखा और 20 वर्षों के लंबे दौर तक खेलते रहे हैं, सभी को चकरा देता है।

इसका अर्थ यह है कि वे अलग-अलग दौर में दुनिया के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजों के खिलाफ़ खेल चुके हैं; वे अत्यंत तेज़ पिचों पर, घुमावदार पिचों पर खेल चुके हैं; वे ठंडे और बादलों से भरे दिनों और तपते मौसम में खेल चुके हैं; वे परिवारजनों और प्रशंसकों से भरे घरेलू मैदानों और दूर देश में अकेलेपन में खेल चुके हैं। दर्द और थकान के बावजूद उनका शरीर दिमाग के सभी आदेशों का पालन करता रहा है। और उन्होंने यह सब किसी तरह झेलकर नहीं किया है बल्कि हर अवसर पर वे अपनी छाप छोड़ते रहे हैं। यह एक शानदार उपलब्धि है। इंग्लैंड के अपने पहले दौरे पर उन्होंने एडी हेमिंग्स के खिलाफ़ बल्लेबाजी की थी जिन्होंने अपने प्रथम श्रेणी के मैचों की शुरुआत, सचिन के पैदा होने से सात साल पहले की थी। और अब वे उन लड़कों के साथ ड्रेसिंग रूम में बैठते हैं, जो उनके पहला शतक लगाने के वक्त पैदा ही हुए थे।

अपने अब तक के सफ़र में उन्हें लोगों की भारी व अतर्कपूर्ण उम्मीदों के बीच खेलना पड़ा है–ऐसे लोग जो उनमें कोई भी कमी नहीं देखते, तो ऐसे भी लोग जो खुर्दबीन लेकर उनमें खामियाँ तलाशते रहते हैं। वे दर्शकों के भारी शोरगुल के बीच मैदान पर उतर चुके हैं और तब भी उन आवाज़ों को अनसुना करना पड़ा है। लोग उन्हें दुनिया की हर चीज़, दौलत, सम्मान,

कृतज्ञता देने को तैयार रहे हैं लेकिन उनकी तो बस एक ही इच्छा रही है–क्रिकेट खेलना, एक सिर्फ़ क्रिकेट खेलना ही उनका लक्ष्य है। इस मामले में वे सर गैरी सोबर्स की तरह हैं, एकमात्र दूसरा खिलाड़ी जिसने 20 वर्ष तक अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट खेला। सोबर्स ने भी क्रिकेट रोमांच के लिए खेला था। तो क्या दीर्घता का राज़ यही है? खेल का आनंद लेना? हर सुबह?

बच्चों जैसे उत्साह के साथ ही उनमें एक ऐसा गंभीर शख्स भी है जो अपने खेल को किसी भी दूसरे व्यक्ति से ज़्यादा समझता है। सचिन क्रिकेट के बारे में पूरी गहराई से सोचते हैं, उनका दिमाग इसके दांव-पेचों को आश्चर्यजनक रूप से इतना सरल बना देता है कि वे एकदम शांत होकर बल्लेबाज़ी के लिए मैदान पर उतर जाते हैं। वे न तो गेंदबाज को देखते हैं और न ही वहाँ की स्थितियों को, वे तो बस अपनी ओर आती गेंद पर नज़र रखते हैं। सचिन अपनी सहजवृत्ति से खेलने वाले खिलाड़ी हैं लेकिन यह वह सहजवृत्ति है जो कड़ी तैयारी से धारदार हुई है।

और जब उनका दिमाग शांत और सभी तरह के विचारों से मुक्त होता है, वे ध्यान की ऐसी अवस्था में पहुँच जाते हैं जिसे दुनिया भर के गेंदबाज़ तुरंत पहचान जाते हैं। वे इस अंक में अपनी बातचीत में कहते हैं, "यह ध्यान की वह अवस्था है जब आप सब कुछ भूल जाते हैं।" वे कहते हैं, "एक ही स्थिति में और एक ही रफ़्तार पर एक ही गेंदबाज के खिलाफ़ खेलते हुए जब आपका दिमाग मुक्त होता है तो आपके पास शॉट खेलने के लिए समय होता है; लेकिन जब आपके दिमाग में बहुत सारे विचार भरे होते हैं तो आप शॉट खेलने में देर कर देते हैं।" ध्यान केंद्रित करने का उनका यही गुण उन्हें दूसरों से अलग करता है।

शायद इसी वजह से वे क्रिकेट के मैदान पर कभी अपना आपा नहीं खोते। उन्होंने निराशा तो व्यक्त की है लेकिन शायद ही कभी नाराज़गी दिखाई हो। अत्यंत उकसाने पर भी शांत रहने की उनकी काबिलियत पर मुझे अक्सर अचंभा हुआ है, शायद यही गुण उनकी योग्यता और दीर्घता का राज़ है। एक शांत दिमाग वाला क्रिकेट खिलाड़ी बदले और गुस्से की भावना से भरे खिलाड़ी के मुकाबले ज़्यादा खतरनाक होता है। शायद यही बात उन्हें 'ब्रायन लारा' से अलग करती है, जो अपने दौर के एक महान खिलाड़ी रहे हैं।

लारा आश्चर्यजनक रूप से प्रतिभावान खिलाड़ी हैं, और सचिन की तरह गेंदबाज़ों का शानदार ढंग से

मुकाबला करते रहे। लेकिन कभी-कभी लारा का दिमाग एक खतरनाक अवस्था में चला जाता था और वे खुद अपने ही दुश्मन बन जाते थे। बल्लेबाजी की कला के मामले में दोनों बराबर हैं। लेकिन सचिन के शांत रहने के गुण ने उनके खेल को ज़्यादा टिकाऊ बनाया।

जबसे मैं उन्हें जानता हूँ, सिर्फ़ एक बार ही उन्हें विचलित या क्रिकेट की दुनिया से बाहर कुछ और सोचते हुए देखा है। एक के बाद एक चोटों के बाद भी वे आइपीएल में खेलना चाहते थे लेकिन चोट के कारण वे नहीं खेल सके। चोट दुःखद थी लेकिन उससे भी ज़्यादा दुःखद था वहाँ मौजूद होते हुए खेल न पाना। लगातार चोट का मतलब था कि दिमाग और शरीर साथ-साथ नहीं चल रहे थे। इस तरह वे दो मोर्चों पर लड़ रहे थे। उन्होंने अचानक घोषणा की, "मैं इस स्वास्थ्य लाभ से तंग आ चुका हूँ।" और तब लोगों ने उन्हें पहली बार परेशान होते हुए देखा। लेकिन वे चोट से उबरे, और जब ठीक होकर लौटे तो एक नए ऑटोमोबाइल की तरह थे। जब मैं उनसे मिला तो उन्होंने कहा, "आखिरकार मैं चोट से मुक्त हूँ।" वे एक मोर्चे पर लड़ने के लिए, वे शॉट खेलने के लिए फ़िर मौजूद थे जो सिर्फ़ वे ही खेल सकते हैं।

सचमुच, ये उनके स्ट्रोक ही हैं जो भारतीय क्रिकेटरों की दो पीढ़ियों के बीच पुल का काम करते हैं। एक वह पीढ़ी जो स्वाभाविक इच्छा को दबाकर समय के अनुसार परंपरागत क्रिकेट खेलती थी। और दूसरी वह, जो इस तरह बल्लेबाज़ी करती है जैसे कल होने वाला ही न हो। इस बीच भारत के लिए कुछ शानदार बात हुई। आर्थिक तंगी से उबरने के बाद हम एक गौरवशाली देश में बदल गए जिसने अपने पैरों पर खड़ा होना सीखा और जिसने निराशा की छाया को दूर भगा दिया। सचिन ऐसे नायक हैं जो इस परिवर्तन के प्रतीक हैं। वह देश जिसकी जड़ों में अहिंसा है, उसने समय की माँग पर एक हमलावर क्रिकेटर को जन्म दिया है।

वे कप्तान भी रहे, एक नहीं बल्कि दो बार। तीसरी बार भी चाहते तो बन सकते थे। लेकिन यह हीरों से भरे उनके ताज में एक पत्थर की तरह है। खेल के हर पक्ष, यहाँ तक कि लेग ब्रेक गेंदबाज़ी में भी दक्ष होने के बावजूद कप्तानी उनके लिए कभी उपयुक्त नहीं रही। शायद इसकी वजह नियंत्रण की कमी थी या फिर सब कुछ अपने हाथ में न होने के कारण स्थितियों से तालमेल बैठाने की अयोग्यता। शायद वे उन लोगों को समझ न पाए हों जिन्होंने पूरी कोशिश की लेकिन जिनमें असुरक्षा की भावना थी। शायद यह कि वे क्रिकेटरों के मुकाबले क्रिकेट को ज़्यादा समझते थे। ऐसा है तो वे पहले नहीं थे, न ही आखिरी होंगे।

फिर भी वे अपने समय के सर्वश्रेष्ठ क्रिकेटर हैं। तुलनाएँ सिर्फ़ किताबी होती हैं और निरर्थक भी। एक दिन ऐसा भी आएगा जब वे क्रिकेट को अलविदा कह देंगे। क्या तब वे बच्चों, भोजन और कारों की दुनिया तक सीमित हो जाएंगे? क्या वे दुनिया की सैर करते हुए अपने रेस्तरां के लिए रसोइयों से व्यंजनों के नुस्खे लेंगे? क्या उनके पास अपनी फ़ेरारी चलाने के लिए समय होगा? मैं नहीं जानता। और दुनिया में उनके बाकी प्रशंसकों की तरह, यह जानना भी नहीं चाहता।

–हर्ष भोगले, इंडिया टुडे से साभार

© NCERT not to be republished

इस फ़ीचर को ध्यान से पढ़िए और देखिए कौन से बिंदु हैं, जो इसे एक बेहतर फ़ीचर बनाने में सहायक रहे। फ़ीचर लिखते समय उन बातों पर ध्यान दें। यह भी याद रहे एक ही पैराग्राफ़ में एक साथ कई जानकारियों या तथ्यों को डाल देने से पाठक भ्रमित हो सकता है, इसलिए हर पैराग्राफ़ में एक या दो महत्वपूर्ण जानकारी या तथ्य से अधिक कुछ नहीं लिखना चाहिए। यही नहीं, एक पैराग्राफ़ से दूसरे पैराग्राफ़ को बाँधना भी ज़रूरी है, जैसे सीढ़ियाँ होती हैं जहाँ एक से दूसरी सीढ़ी जुड़ी होती है ताकि चढ़ने या उतरने वाले को कोई झटका नहीं लगे, उसी तरह से पैराग्राफ़ भी होने चाहिए। एक पैराग्राफ़ से दूसरे पैराग्राफ़ में पहुँचने पर पाठक को झटका नहीं लगना चाहिए। एक फ़ीचर में अनुच्छेदों को फूलों की माला की तरह एक धागे से गुंथा हुआ होना चाहिए। यह धागा वह कथाक्रम है, जिसमें फ़ीचर के फूल यानी अनुच्छेद एक-दूसरे से गुंथे हुए होते हैं। एक अनुच्छेद को दूसरे से जोड़ने के लिए ऐसे कई औज़ार हैं जिनका इस्तेमाल किया जाना चाहिए। ऐसे कई शब्द हैं जिनसे अगर अगले पैराग्राफ़ की शुरुआत की जाए तो पाठक तुरंत पिछले अनुच्छेद से खुद को जोड़ लेता है, जैसे- लेकिन, दूसरी ओर, इससे पहले, इस बीच, अब, इसी तरह, ध्यान रहे, ज़ाहिर है, इसके बावजूद आदि। एक अच्छा फ़ीचर लेखक बनने के लिए इस कला में माहिर होना बहुत ज़रूरी है। उदाहरण के लिए यह अंश देखें–

शायद इसी वजह से वे क्रिकेट के मैदान पर कभी अपना आपा नहीं खोते। उन्होंने निराशा तो व्यक्त की है लेकिन शायद ही कभी नाराज़गी दिखाई हो। अत्यंत उकसाने पर भी शांत रहने की उनकी काबिलियत पर मुझे अक्सर अचंभा हुआ है, शायद यही गुण उनकी योग्यता और दीर्घता का राज़ है। एक शांत दिमाग वाला क्रिकेट खिलाड़ी बदले और गुस्से की भावना से भरे खिलाड़ी के मुकाबले ज़्यादा खतरनाक होता है।

एक फ़ीचर को आकर्षक और प्रभावी बनाने के लिए और कई बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है। फ़ीचर को रोचक बनाने के लिए उसमें कुछ प्रत्यक्ष उदाहरण ज़रूर डाले जाने चाहिए। इससे फ़ीचर की गति में विविधता आती है और वह जीवंत हो उठता है। लेकिन फ़ीचर के लिए प्रत्यक्ष उदाहरण का इस्तेमाल सावधानी से करना चाहिए। वही उदाहरण इस्तेमाल किए जाने चाहिए जो दिलचस्प, कुछ अलग हटकर और मन को छूने वाले हों। ऐसे उदाहरण साक्षात्कार के दौरान मिल जाते हैं जब किसी ने तथ्यात्मक या सपाट जानकारी के बजाय कुछ बहुत ही अलग, दिलचस्प, रोचक, भावुक, दुःखद या असामान्य बात कह दी हो। ऐसे उद्धरण, जो फ़ीचर के विषय से जुड़े और ज़रूरी हों, को प्रत्यक्ष उदाहरण के तौर पर लिया जा सकता है।

इसी तरह फ़ीचर में अगर जीवन की कुछ-कुछ दिलचस्प और सबक देने वाली झाँकियाँ भी डाल दी जाएँ तो वह जीवंत हो उठता है। ये ऐसे प्रसंग होते हैं जो किसी व्यक्ति के जीवन पर गहरा असर डालते हैं। उससे पाठकों को भी प्रेरणा मिलती है। जैसे-अगर आप अपने विद्यालय के किसी छात्र के राज्यस्तरीय खेलों में स्वर्णपदक जीतने पर फ़ीचर लिख रहे हों तो उसमें आप उस छात्र से साक्षात्कार के आधार पर उसकी वह छोटी-सी कहानी उसके ही शब्दों में दे सकते हैं जिसमें उसने बताया था कि कैसे उसने जब हिम्मत छोड़ दी थी तो उसकी मुलाकात एक सफ़ल खिलाड़ी से हुई थी जिसने उसे अपना हस्ताक्षर देते हुए उसकी कॉपी में लिख दिया था कि "हिम्मत मत हारना, मंज़िल तुम्हारे सामने है।" उस घटना ने उसका जीवन बदल दिया और वह और

© NCERT not to be republished

गतिविधि–13 Activity–13

अपने शहर/इलाके के किसी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल पर लगभग 400 शब्दों में एक फ़ीचर लिखिए। इस फीचर में इन सभी पहलुओं का समावेश ज़रूर कीजिए–

- ऐतिहासिक स्थल के बारे में प्रमुख ऐतिहासिक तथ्य, उसकी खासियतें और उसके प्रमुख आकर्षक पहलू
- ऐतिहासिक स्थल की देखभाल करने वाले अधिकारी/कर्मचारी, कम-से-कम दो या तीन दर्शकों और किसी इतिहासकार या अपने विद्यालय में इतिहास के शिक्षक से उसकी खूबियों, दिलचस्प जानकारियों और महत्त्व के बारे में साक्षात्कार
- ऐतिहासिक स्थल का दौरा कीजिए और उसकी खूबियों और आकर्षक बिंदुओं के साथ-साथ उसकी देखभाल की स्थिति पर नोट्स लीजिए। ऐतिहासिक स्थल की कुछ ऐसी तस्वीरें/फ़ोटोग्राफ़्स लीजिए जिससे उसकी खासियतें उभरकर सामने आएँ। इन तस्वीरों को फ़ीचर में शामिल कीजिए।

Write a feature of about 400 words on any important historical monument. Include the following while writing the feature.

- Give historical facts about the monument, its importance and main attractions.
- Interview at least two or three officials/personnel who take care of the monument, visitors, a historian or your history teacher about its importance, qualities and interesting anecdotes.
- Visit the historical monument and make notes about its attractions, qualities and conservation. Take a few photographs highlighting the monument's beauty. Include these photographs in your feature.

उत्साह से अभ्यास करने लगा। जिसका नतीजा है यह **स्वर्णपदक**! इस घटना का एक पैराग्राफ़ में उस खिलाड़ी के शब्दों में ही उल्लेख फ़ीचर को एक नया रंग भर देगा।

फ़ीचर का अंत भी दिलचस्प होना चाहिए। अगर वह उस विषय या समस्या या व्यक्ति के बारे में कोई भविष्योन्मुखी इशारा कर सके या उनकी आगे की योजनाओं की जानकारी दे सके या फिर उन चुनौतियों का उल्लेख कर सके जो सामने आने वाली हैं तो वह एक प्रभावी अंत हो सकता है। फ़ीचर लेखन के बारे में कोई भी बात बिना भाषा और उसकी शैली पर चर्चा किए खत्म नहीं हो सकती है। फ़ीचर की भाषा सरल, वाक्य छोटे और सहज होने चाहिए। फ़ीचर की भाषा आम बोलचाल की भाषा होनी चाहिए लेकिन उसमें सपाटपन नहीं होना चाहिए। भाषा थोड़ी लालित्यपूर्ण, नरम, मन को छूने वाली और आकर्षक होनी चाहिए।

पीछे दिए गए फ़ीचर की उन पंक्तियों में भाषा की रवानी देखिए –

इसका अर्थ यह है कि वे अलग-अलग दौर में दुनिया के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज़ों के खिलाफ़ खेल चुके हैं; वे अत्यंत तेज़ पिचों पर, घुमावदार पिचों पर खेल चुके हैं; वे ठंडे और बादलों से भरे दिनों और तपते मौसम में खेल चुके हैं; वे परिवारजनों और प्रशंसकों से भरे घरेलू मैदानों और दूर देश में अकेलेपन में खेल चुके हैं। दर्द और थकान के बावजूद उनका शरीर–दिमाग के सभी आदेशों का पालन करता रहा है।

पर्यावरण से संबंधित दो ऐसे मुद्दे चुनें जिन पर आजकल बहस चल रही है।

देखें गतिविधि/Activity 14 पृष्ठ 102

© NCERT not to be republished

II. लेख लिखना

समाचारपत्र में संपादकीय पृष्ठ पर विभिन्न समसामयिक विषयों पर लेख छापे जाते हैं। इन लेखों की खासियत यह होती है कि वह उन विषयों का गहराई से विश्लेषण करते हैं। लेख में तथ्य, विश्लेषण और विचार तीनों ही होते हैं। वास्तव में लेख उस विषय पर लेखक के अपने विचार होते हैं, जिन्हें वह उपयुक्त तथ्यों और तर्कों के ज़रिए प्रस्तुत करता है। असल में किसी भी विषय या मुद्दे के कई पहलू हो सकते हैं और इसी कारण उसे देखने के भी कई नज़रिए हो सकते हैं। लेख से लेखक के नज़रिए का पता चलता है।

विषय संबंधी शोध

समाचारपत्रों में आमतौर पर विभिन्न विषयों पर उनके जानकार या विशेषज्ञ लेख लिखते हैं। इन लेखों से उसके पाठक अपना नज़रिया बनाते हैं। इसलिए लेखों का समाज में जनमत बनाने में अपना एक महत्त्व है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि अगर आप किसी विषय के विशेषज्ञ नहीं हैं तो लेख नहीं लिख सकते हैं। लेख आप भी लिख सकते हैं लेकिन इसके लिए थोड़ी व्यापक तैयारी और अध्ययन की ज़रूरत पड़ती है। आप जिस विषय पर लेख लिखना चाहते हैं, उसके लिए आवश्यक सामग्री जुटाने के वास्ते आपको न सिर्फ़ पर्याप्त शोध करना चाहिए बल्कि उस विषय पर अन्य जाने-माने विशेषज्ञ क्या लिख रहे हैं, उसे अवश्य पढ़ना चाहिए।

लेख की रूपरेखा

लेख लिखने के लिए आवश्यक सामग्री जुटाने के बाद सबसे पहले उसकी रूपरेखा तैयार करनी चाहिए। इसके तहत लेख की भूमिका, उसके विभिन्न पक्षों, उनसे जुड़े तथ्यों, उनके बीच के अंतर्संबंधों की व्याख्या और विश्लेषण और उनसे निकलने वाले निष्कर्षों को रखा जाना चाहिए। इस रूपरेखा को तैयार करने के बाद लेख लिखना आसान हो जाता है। असल में लेख लिखने के पहले जितनी तैयारी की जाती है, लेख लिखना उतना ही आसान हो जाता है।

भारत में स्कूली शिक्षा की समस्या

एक उदाहरण—अगर आप भारत में स्कूली शिक्षा की समस्याओं और चुनौतियों पर एक लेख लिखना चाहते हैं तो इसकी तैयारी के लिए आपको देश में स्कूली शिक्षा की मौजूदा स्थिति से जुड़ी जानकारियाँ इकट्ठा करनी चाहिए। इसके लिए आपको मानव संसाधन विकास मंत्रालय की सालाना रिपोर्ट, अन्य जानी-मानी शैक्षणिक और प्रतिष्ठित संस्थाओं की स्कूली शिक्षा की दशा और दिशा पर तैयार रिपोर्टों का अध्ययन करना चाहिए। इन रिपोर्टों से अपने लेख के लिए ज़रूरी तथ्य और जानकारियाँ अपने नोटबुक में लिख लेनी चाहिए। इसके साथ ही यह भी जानने की कोशिश करनी चाहिए कि इस विषय पर देश के जाने-माने शिक्षाविदों के क्या विचार हैं? इसके लिए आपको उनकी पुस्तकों और लेखों का अध्ययन करना पड़ेगा। स्कूली शिक्षा से जुड़े गैर-सरकारी संगठनों की रिपोर्टों पर नज़र डाल लेना भी अच्छा रहेगा। इसके अलावा आप अपने आस-पड़ोस के कुछ स्कूलों का भ्रमण करके वहाँ के छात्रों और अध्यापकों से भी इस विषय पर उनकी राय पूछ सकते हैं। इस तरह आपके पास स्कूली शिक्षा की मौजूदा स्थिति और उसकी चुनौतियों पर काफ़ी सामग्री इकट्ठा हो जाएगी।

लेकिन लेख लिखते हुए इस संपूर्ण सामग्री का इस्तेमाल करना ज़रूरी नहीं है। इसमें जो सबसे महत्वपूर्ण और आपके तर्कों और विश्लेषण के लिए ज़रूरी सामग्री है, उसी का इस्तेमाल करना चाहिए।

© NCERT not to be republished

गतिविधि – 15 Activity – 15

खतरे में परिंदे

पर्यावरण से संबंधित दो ऐसे मुद्दे चुनें जिन पर बहस चल रही है।

- बहस किन बिंदुओं पर है यह भी बताएँ।
- अब इन बिंदुओं को आधार बनाकर किसी एक पर लेख लिखें।

Select two issues related to the subject 'Environment', which are being currently debated in the news.

- List the points on which both the issues are being debated.
- Using the points, write an article on any one of the issues.

Doing their bit to save the planet

Schoolchildren hold placards at Parliament Street to create awareness during the 'Save The World' campaign organised for the World Earth Day in New Delhi on Friday. SONU MEHTA/HT PHOTO

Follow good habits to save environment: Dikshit

NEW DELHI: Chief minister Sheila Dikshit on Friday asked people in the city to shun plastic bags, plant more trees and "follow good habits" to prevent damage to environment.

Addressing a function to mark the Earth Day, Dikshit also asked the people to follow the 'mantra' of reduce, recycle and reuse to minimise pressure on scarce natural resources.

"We should plant more trees and we must follow good habits of limiting our consumption," she said.

Also, to mark the Earth Day, a programme was organised in the city's commercial hub Nehru Place to clean the green cover there.

Around 100 employees of Paharpur Business Centre, Nehru Place, and staff of The Climate Project India in partnership with Delhi Development Authority carried out the drive. PTI

कार्टून सच बयान करने का एक अच्छा माध्यम (जनसत्ता से साभार)

जहाँ ज़रूरी हो, वहाँ उन रिपोर्टों और विशेषज्ञों को अवश्य उद्धृत करना चाहिए। लेख की भाषा फ़ीचर की तुलना में गंभीर और विचारपरक होती है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि लेख को बोझिल और अपठनीय बना दिया जाए। एक अच्छे लेख में विचारों की स्पष्टता बहुत ज़रूरी है। यह स्पष्टता तभी आ सकती है जब आप खुद अपने विचारों में स्पष्ट हों। लेख लिखते हुए आपको पता होना चाहिए कि आप क्या कहना चाहते हैं? कई बार लेख इसलिए जटिल, बोझिल और दिशाहीन हो जाते हैं क्योंकि लेखक खुद अपने विचारों में अस्पष्ट होता है। विचारों में स्पष्टता रखने के लिए ज़रूरी है कि आप सीधी और साफ़ बात करें। इसके अलावा लेख में गैर ज़रूरी तथ्य और आँकड़े भरने से बचना चाहिए। लेख में बहुत ज़्यादा उदाहरण देने से भी बचना चाहिए।

देखें गतिविधि/Activity 16 पृष्ठ 110

III. स्क्रिप्ट (रेडियो, टेलीविज़न)

रेडियो के लिए लेखन

रेडियो एक श्रव्य यानी कानों से सुने जाने वाला माध्यम है। इसका अर्थ यह हुआ कि रेडियो बोले हुए शब्दों यानी ध्वनियों का माध्यम है। इस कारण रेडियो के लिए लिखते हुए लेखक को हमेशा यह ध्यान रखना पड़ता है कि इसे कोई पढ़ेगा या बोलेगा। बोले और सुने जाने वाले माध्यम के बतौर रेडियो की अपनी कुछ शक्तियाँ और कुछ सीमाएँ भी हैं। रेडियो की ताकत यह है कि वह देश के हर हिस्से में उपलब्ध है। उसकी पहुँच निरक्षर व्यक्ति से लेकर पढ़े लिखे लोगों तक है। वह गाँव से लेकर शहर तक और अमीर से लेकर गरीब तक सबकी ज़रूरतें पूरी करता है। उसकी एक और बड़ी विशेषता यह है कि अन्य माध्यमों के विपरीत आप कुछ और काम करते हुए भी रेडियो सुन सकते हैं। इसी कारण उसे "ऑडियो वॉलपेपर" भी कहा जाता है।

लेकिन उसकी कुछ सीमाएँ भी हैं। उसकी सीमा यह है कि श्रोता तक सब कुछ ध्वनियों के ज़रिए ही पहुँचना है। इसलिए श्रोता का ध्यान प्रसारण पर केन्द्रित रखना बहुत ज़रूरी है। अगर प्रसारण के दौरान किसी भी कारण से श्रोता का ध्यान बंटा और वह सुन नहीं पाया तो उसके पास उसे दोबारा सुनने की सुविधा नहीं होती है। इस कारण अर्थ का अनर्थ हो सकता है। या श्रोता की उस प्रसारण में रुचि समाप्त हो सकती है। चूँकि रेडियो एकरेखीय माध्यम है, जिसमें श्रोता के सामने प्रसारण एक क्रम से होता है। इसलिए रेडियो प्रसारणकर्ताओं के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि वह श्रोता का ध्यान और रुचि शुरू से लेकर आखिर तक कैसे बनाए रखें?

इस कारण रेडियो के लिए चाहे समाचार लेखन हो या फ़ीचर लेखन या फिर रेडियो वार्ता या डॉक्यूमेंट्री या नाटक, लेखक के सामने माध्यम की इस सीमा में रहते हुए लेखन की चुनौती होती है। चूँकि रेडियो सुनते हुए श्रोता के पास किसी कठिन शब्द या तकनीकी शब्दावली का अर्थ शब्दकोश से खोजने की सुविधा नहीं होती है, इसलिए उसके लेखक को कभी भी कठिन, तकनीकी और पारिभाषिक शब्दों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, रेडियो लेखन में लंबे और जटिल वाक्यों के लिए भी कोई जगह नहीं होती है। रेडियो के लिए लिखने वाले लेखक को यह भी ध्यान रखना होता है कि उसे कोई पढ़ेगा। इसलिए वाक्य संरचना ऐसी होनी चाहिए जो बोलचाल की शैली में हो। जिसे पढ़ते हुए वाचक/वाचिका लड़खड़ाए नहीं और श्रोता सुनते हुए यह महसूस करे कि उससे कोई बात कर रहा है। यही कारण है कि रेडियो को बातचीत या बोलचाल का माध्यम भी कहा जाता है।

रेडियो के लिए लिखते हुए समय सीमा का भी ध्यान रखना चाहिए। आमतौर पर यह माना जाता है कि एक सेकेंड में लगभग दो से ढाई शब्द पढ़े जा सकते हैं, इसलिए एक मिनट के किसी प्रसारण के लिए अधिकतम 120 से 130 शब्दों की स्क्रिप्ट लिखी जानी चाहिए। चूँकि रेडियो में अखबार की तरह डेटलाइन यानी स्थान और तिथि का अलग से उल्लेख करने की जगह नहीं होती है, इसलिए रेडियो की कॉपी में ही स्थान और समय का उल्लेख करना पड़ता है। इसी तरह रेडियो एक तात्कालिक माध्यम है यानी वह अखबार की तरह 24 घंटे बाद नहीं आता। रेडियो पर हर घंटे समाचारों का प्रसारण होता रहता है। इसलिए रेडियो के लिए लिखते हुए यह तात्कालिकता कॉपी में दिखनी चाहिए। उदाहरण के लिए रेडियो के लिए लिखे गए इस आलेख को देखें–

© NCERT not to be republished

मध्यप्रदेश में दूसरा अंतर्राष्ट्रीय नदी उत्सव आज होशंगाबाद जिले में बांद्राभान में नर्मदा और तवी नदियों के संगम पर शुरू हुआ। दूसरा अंतर्राष्ट्रीय नदी महोत्सव हमारे भविष्य के लिए हमारी नदियाँ और हमारे वनों को बचाने के आह्वान के साथ शुरू हुआ। विभिन्न क्षेत्रों से ताल्लुक रखने वाले करीब सात सौ प्रतिनिधि, जिनमें कई विदेशी मेहमान शामिल हैं, महोत्सव में भाग ले रहे हैं। वे नदियों में प्रदूषण के कारणों और महोत्सव की केंद्रीय थीम–नदियाँ और प्रदूषण के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा कर रहे हैं। महोत्सव के दौरान नदियों के संरक्षण पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम भी पेश किए जाएंगे। वहीं महोत्सव स्थल पर प्रसिद्ध कलाकार सुदर्शन पटनायक द्वारा बनाई गई रेत की आकृतियाँ भी आकर्षण का केंद्र बनी हुई हैं।

गतिविधि – 17 Activity–17

अखबार की किसी खबर को पढ़कर रेडियो समाचार तैयार करें।

- हरेक विद्यार्थी एक-दूसरे से समाचार सुनें और एक या दो मिनट की रिकॉर्डिंग करें।
- अब सभी साथियों के साथ मिलकर एक-एक कर सुनें और रेडियो समाचार की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए उस पर चर्चा करें।

Choose any news item from a newspaper and prepare a radio news story on it.

- Listen to every student's news item and make one/two minute recordings.
- Now listen to each one's recordings in the class and have a discussion keeping in mind the features of radio news.

ज़रूरी बातें

1. इसका तरीका यह है कि आप रेडियो की कॉपी हमेशा वर्तमान काल में लिखें।
2. रेडियो में तिथि के बजाय आज सुबह, आज दोपहर, आज शाम या रात या फिर मंगलवार की सुबह या अगले सप्ताह या महीने लिखा जाता है। आपने गौर किया होगा कि जब हम आपस में बातें करते हैं तो तिथियों के बजाय दिनों और समय का उल्लेख करते हैं। बोलचाल का माध्यम होने के कारण रेडियो की कॉपी में भी इसी का पालन किया जाता है।
3. जैसे रेडियो में यह लिखा जाएगा कि "प्रधानमंत्री आज दोपहर रूस रवाना हो रहे हैं। कल सुबह मॉस्को में वे रूसी प्रधानमंत्री से मुलाकात करेंगे।"

रेडियो में अंकों के इस्तेमाल में भी सावधानी बरती जाती है। चूँकि रेडियो श्रव्य माध्यम है इसलिए श्रोता बड़ी संख्याओं को याद नहीं रख सकता है। ऐसी स्थिति में अंकों का प्रयोग करते हुए यह ध्यान रखा जाता है कि उसे पूरा बताने के बजाय एक निश्चित संख्या के करीब बताया जाए। जैसे 98,35,636 रुपये। लेकिन सभी अंकों को लगभग या निश्चित अंक के करीब नहीं लिखा जाता है। जैसे अगर सचिन तेंदुलकर 98 रन पर आउट हो जाएँ तो यह नहीं लिखा जाएगा कि उन्होंने लगभग 100 रन बनाए। इसी तरह मुद्रास्फ़ीति के आँकड़े भी लगभग में

© NCERT not to be republished

नहीं बल्कि ज्यों-के-त्यों लिखे जाते हैं। 5.35 प्रतिशत को लगभग साढ़े पाँच नहीं बल्कि पाँच दशमलव तीन पाँच प्रतिशत लिखा जाएगा।

टेलीविज़न के लिए लेखन

टेलीविज़न मूलत: एक दृश्य माध्यम है। हालाँकि टेलीविज़न में दृश्य और श्रव्य दोनों मौजूद होते हैं। लेकिन उसमें दृश्यों की सबसे अधिक महत्ता होती है। टेलीविज़न भी रेडियो की तरह एकरेखीय माध्यम है। इन दोनों ही कारणों के आधार पर टेलीविज़न के लिए लेखन की प्रकृति और स्वरूप निर्धारित होते हैं। टेलीविज़न के लिए लेखन करते हुए सबसे अधिक महत्त्व दृश्यों को दिया जाता है। टेलीविज़न के लिए स्क्रिप्ट लिखने का सबसे बेहतरीन तरीका यह माना जाता है कि दृश्यों के अनुसार लिखा जाए। कहा जाता है कि टेलीविज़न में स्क्रिप्ट की इमारत में दृश्य ईंटों की तरह हैं, जबकि शब्दों की भूमिका सीमेंट की तरह है जो सिर्फ़ ईंटों को जोड़ने के लिए इस्तेमाल की जाती है।

इस कारण टेलीविज़न में शब्दों की किफ़ायत बरतना बहुत ज़रूरी है। यहाँ कम-से-कम शब्दों में अपनी बात कहने की कला आनी चाहिए। दरअसल टेलीविज़न में दृश्य खुद ही कहानी बयान कर देते हैं, इसलिए लेखन की भूमिका उन तथ्यों और जानकारियों को सहेज कर सामने लाने तक सीमित होती है जो दृश्यों में नहीं बयाँ हो पाते हैं। यहाँ तक कि जब दृश्य बहुत ही प्रभावशाली और आकर्षक हों तो यह कहा जाता है कि उस समय उस पर कोई स्क्रिप्ट की ज़रूरत नहीं होती है। यानी जब ऐसे दृश्य **टेलीविज़न के पर्दे पर दिख रहे हों तो उसके पीछे से बोलने** (वॉयस ओवर) **की ज़रूरत नहीं रह जाती है**। वहाँ दृश्य खुद बोलते हैं। आपने खुद यह महसूस किया होगा कि जब टीवी के पर्दे पर बहुत ही प्रभावी दृश्य चल रहे हों तो उस समय पीछे चल रहा वॉयस ओवर आपको सुनाई नहीं पड़ता क्योंकि आप दृश्यों में खोए होते हैं और दिमाग शब्दों को सही तरीके से नहीं सुन पाता है।

इसी तरह टेलीविज़न में प्राकृतिक ध्वनियों (जिसे टेलीविज़न में नैट साउंड कहते हैं) का भी बहुत महत्त्व होता है। ये वे ध्वनियाँ हैं जो किसी दृश्य को शूट करते हुए खुद-ब-खुद दृश्यों के साथ कैमरे में चली आती हैं। जैसे–अगर आप अपने विद्यालय में सालाना खेल प्रतियोगिताओं के तहत हो रहे फुटबॉल मैच के दृश्य कैमरे में शूट कर रहे हों तो उसमें दृश्यों के साथ मैच देख रहे दर्शकों का शोर, और गोल

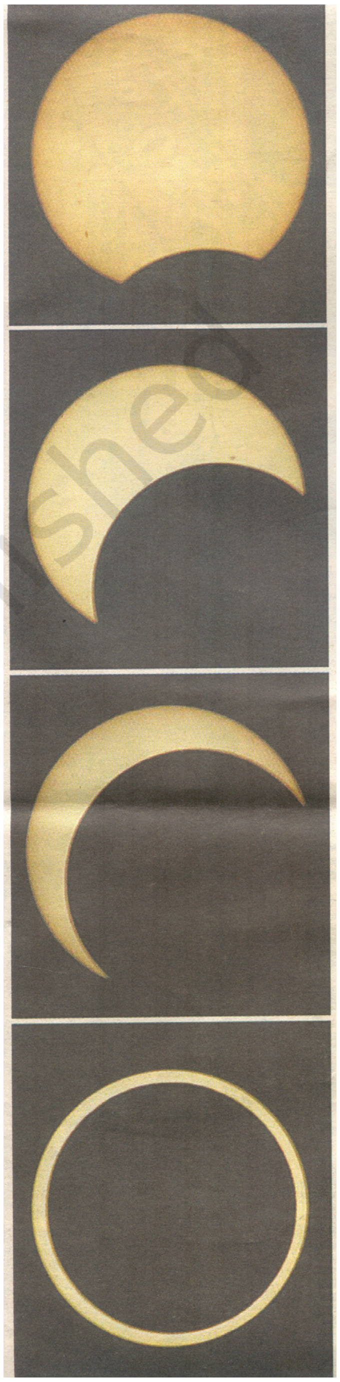

चँद्रग्रहण के इन दृश्यों के लिए एक टेलीविज़न स्क्रिप्ट लिखिए

होने पर तालियों के साथ उठने वाला शोर भी कैमरे में आ जाएगा। आप जब इस मैच की टेलीविज़न के लिए रिपोर्ट तैयार करेंगे तो उसकी स्क्रिप्ट लिखते हुए जब गोल का दृश्य दिखाएंगे तो उस समय वॉयस ओवर के बजाय दृश्य के साथ आने वाले नैट साउंड को जगह देना ही उचित होगा। इससे उस रिपोर्ट को देखने वाले दर्शकों को वही उत्तेजना और आनंद महसूस होगा। जो मैदान में मौजूद दर्शकों ने किया होगा। इसी तरह अगर आप किसी जंगल या पार्क या नदी पर कोई टी.वी. रिपोर्ट तैयार कर रहे हों और उसमें चिड़ियों की चहचहाहट, पानी के कलकल बहने और पार्क में बच्चों का शोर न सुनाएँ तो वह रिपोर्ट जीवंत नहीं बन पाएगी। आखिर जंगल, नदी और पार्क जैसी जगहों की पहचान इन्हीं प्राकृतिक ध्वनियों से होती है। इन ध्वनियों के बिना कोई भी रिपोर्ट अधूरी होगी। एक अच्छी टी.वी. रिपोर्ट वही होती है जिसमें दृश्य और ध्वनियाँ ज़्यादा बोलें और रिपोर्टर को कम बोलना पड़े ।

टी.वी. रिपोर्ट की स्क्रिप्ट में इन ध्वनियों के लिए जो अंतराल छोड़ा जाता है, उसे टी.वी. की भाषा में ब्रीद यानी साँस लेना कहते हैं। टी.वी. स्क्रिप्ट में इसका होना बहुत ज़रूरी है। इससे दर्शक को दृश्यों और ध्वनियों के साथ सामंजस्य बिठाने में मदद मिलती है। टी.वी. की बेहतरीन रिपोर्टों, डॉक्यूमेंट्री, फ़ीचर और ड्रामा को इस नैट साउंड के बिना नहीं बनाया जा सकता है। टी.वी. की फ़ीचर रिपोर्टों की तो सबसे बड़ी खासियत यही नैट साउंड होती है।

टी.वी. समाचार के लिए स्क्रिप्ट लेखन करते हुए कुछ और बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है। इसमें साउंड बाइट्स का भी बहुत महत्त्व होता है। साउंड बाइट्स से आशय यह है कि उस समाचार रिपोर्ट के लिए जिन लोगों से बात की गई है, उनके साक्षात्कार के वे टुकड़े जिन्हें आप अपनी रिपोर्ट में इस्तेमाल करते हैं।

साउंड बाइट का इस्तेमाल करते हुए यह ध्यान रखना चाहिए कि एक से डेढ़ मिनट की टी.वी. रिपोर्ट में बाइट 10 सेकेंड से छोटी ना हो और औसतन 20 सेकेंड से बड़ी ना हो। इसी तरह यह भी ध्यान रखना ज़रूरी है कि जो बात स्क्रिप्ट में कही गई है बाइट में उसी बात का दोहराव न हो बल्कि वह उसमें कोई नयी बात जोड़ती हो या उससे जुड़ी कोई बात कहती हो। आमतौर पर एक से डेढ़ मिनट की टी.वी. रिपोर्ट में दो से ज़्यादा बाइट नहीं ली जाती है। लेकिन अगर रिपोर्ट उससे बड़ी हो तो उसी अनुपात में बाइट की संख्या बढ़ सकती है।

इस तरह एक अच्छी टी.वी. रिपोर्ट, जिसे पैकेज भी कहते हैं, का ढाँचा कुछ इस प्रकार होता है–**एंकर लिंक**–किसी भी टी.वी. रिपोर्ट को दर्शकों के सामने प्रस्तुत करने के लिए टी.वी. एंकर जो बोलता है उसे एंकर लिंक कहते हैं। आमतौर पर यह दो या तीन वाक्यों का होता है। यह 15 से 17 सेकेंड का होता है। इसमें समाचार की सबसे महत्वपूर्ण बात लिखी जाती है। इसके बाद रिपोर्ट की शुरुआत होती है और एंकर पर्दे से हट जाता है।

रिपोर्ट–रिपोर्ट की शुरुआत पहले वॉयस ओवर से होती है। वॉयस ओवर का अर्थ लिखित स्क्रिप्ट को पढ़ना होता है। आमतौर पर पहले वॉयस ओवर के बाद पहली साउंड बाइट आती है और फिर दूसरा वॉयस ओवर रिपोर्ट को आगे बढ़ाता है। इसके बाद दूसरी साउंड बाइट आती है। आखिर में रिपोर्टर खुद अपनी आवाज़ और उपस्थिति के साथ रिपोर्ट को समाप्त करता है। इसे टी.वी. की भाषा में 'पीस टू' कैमरा कहते हैं।

© NCERT not to be republished

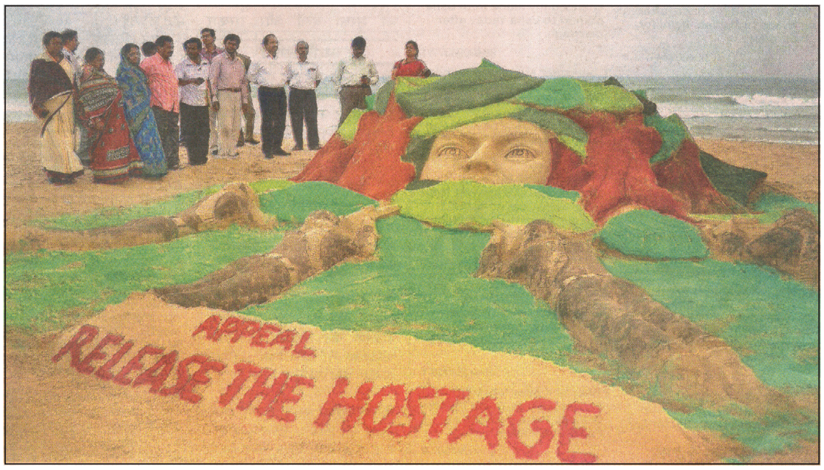

विरोध का सृजन, सुदर्शन पटनायक की कलाकृति – यह अखबार का एक फ़ोटो कोना है। इसे टेलीविज़न स्क्रिप्ट में बदलें।

टी.वी. की समाचार रिपोर्ट भी उल्टा पिरामिड शैली में ही लिखी जाती है। यानी सबसे महत्वपूर्ण बात सबसे पहले आती है। लेकिन टी.वी. के लिए समाचार लेखन का फ़ॉर्मेट अखबार और रेडियो की तुलना में काफ़ी अलग होता है। इसकी वजह यह है कि यहाँ दृश्य और ध्वनि दोनों का महत्त्व होता है और इस कारण उसमें तकनीक की भी महत्वपूर्ण भूमिका हो जाती है।

देखें गतिविधि/Activity 18 पृष्ठ 118

IV. नए माध्यमों के लिए लिखना

जनसंचार के नए माध्यमों में वे डिजिटल माध्यम आते हैं, जिनकी सबसे बड़ी खासियत उनका अंतरक्रियात्मक (*इंटरएक्टिव*) होना है। इंटरनेट से आप सभी परिचित होंगे। इंटरनेट नए माध्यमों में सबसे महत्वपूर्ण और उपयोगी माध्यम के रूप में उभर कर सामने आया है। इंटरनेट ने ऐसे कई मंच उपलब्ध कराए हैं, जहाँ आप अपने विचारों और अनुभवों को एक दूसरे से साझा कर सकते हैं। वास्तव में इंटरनेट ने हर व्यक्ति को अपनी अभिव्यक्ति का शानदार अवसर उपलब्ध कराया है।

गतिविधि–19 Activity–19

- अखबार या पत्रिका से कुछ आकर्षक चित्र इकट्ठा करें और अपने पोर्टफ़ोलियों में लगाएँ।
- इन चित्रों को जोड़ते हुए टेलीविज़न के लिए एक स्क्रिप्ट तैयार कीजिए।
- कक्षा में इसको प्रस्तुत करें।
- Collect a few attractive pictures from newspapers/ magazines and put these in your portfolio.
- Write a script for television connecting these pictures.
- Make a presentation in the class.

© NCERT not to be republished

गतिविधि–21 Activity–21

अखबार से कोई दो समाचार लें। उनसे वेबसाइट के लिए संक्षिप्त समाचार तैयार करें। अब कुछ समाचार पत्रों के वेबसाइट देखें और अपने लिखे हुए संक्षिप्त समाचार की उससे तुलना करें। समाचार प्रस्तुति के अलग–अलग तरीके पर कक्षा में चर्चा करें।

Take two stories from a newspaper. Write your own version of the stories for the web. Now compare your script with the newspaper's website (online posts). Discuss the different ways of presentation of the news.

- दिए गए वेबसाइट्स आपकी मदद कर सकते हैं।
- The following websites may be of use to you.
  - http://nytimes.com
  - http://hoot.org
  - www.ndtv.com

देखें गतिविधि/Activity 20 पृष्ठ 123

ब्लॉग

आपने ब्लॉग के बारे में ज़रूर सुना होगा। ब्लॉग एक तरह की व्यक्तिगत डायरी है जिसमें आप अपने व्यक्तिगत अनुभवों, विचारों और अभिव्यक्तियों को प्रस्तुत करते हैं। लेकिन इसकी खूबी यह है कि यह सबके लिए उपलब्ध है। यानी आपकी इस डायरी को कोई भी पढ़ सकता है और उस पर अपनी प्रतिक्रिया भी दर्ज़ करा सकता है। इस तरह यह आपसी संवाद और चर्चा का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनता जा रहा है। अपने ब्लॉग की शुरुआत करना बहुत आसान है। इसके लिए आपको अलग से कोई खर्च नहीं करना पड़ता। अपने ब्लॉग की शुरुआत करने के लिए आप कई वेबसाइट्स पर जा सकते हैं जहां निःशुल्क ब्लॉग शुरू करने की सुविधा उपलब्ध है। उदाहरण के लिए–गूगल की वेबसाइट पर जाकर आप उसकी सर्विसेज़ में ब्लॉगर पर क्लिक करें तो वहाँ तीन आसान चरणों में ब्लॉग शुरू करने का निर्देश का पालन करते हुए आप अपना ब्लॉग शुरू कर सकते हैं।

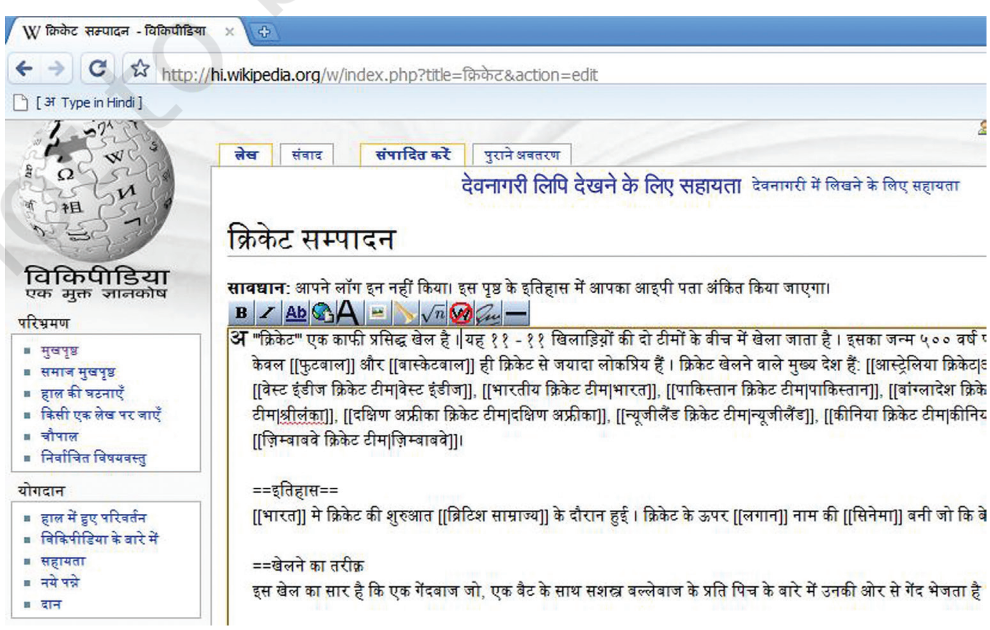

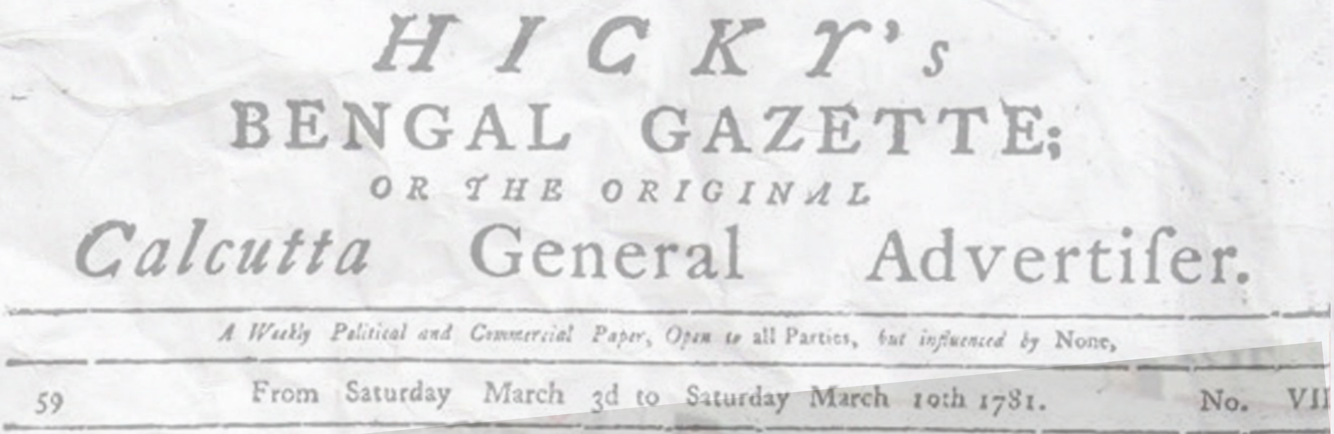

HICKY's
BENGAL GAZETTE;
OR THE ORIGINAL
Calcutta General Advertifer.

A Weekly Political and Commercial Paper, Open to all Parties, but influenced by None.

59 From Saturday March 3d to Saturday March 10th 1781. No. VII

Understanding Media

You were introduced to a collage in the previous unit. Here is another one for you. Now try and prepare a collage of your own.

- Describe your experience of preparing the collage.
- Give a title to the collage.
- Exchange your collage with a friend and give a new title to her/his collage.
- Share your collage making experience with the class.

© NCERT not to be republished

I. Feature Writing

Either write something worth reading or do something worth writing.

— Ben Franklin

The main purpose of any newspaper is to give news about topical events, issues and problems; but some stories or events are also covered for entertainment. You must have observed that a newspaper offers a variety of items written in different styles. These are news stories, articles, features, editorials etc. While we all have different choices but articles or features attract one's attention the most because these are interesting, entertaining and informative. Their presentation style is more creative and imaginative as compared to a news item. A feature or an article is written in such a manner that it touches the feelings/emotions of the reader. Often, features comprise leisurely reading after all the other short news items have been quickly glanced through.

Understanding Features

Writing is a craft honed with practice

The human-interest story is also referred to as a 'Feature Story'. These feature stories have elements of emotion and variety. They are well presented and are interesting. Their success and readability rests on originality. The beginning of a feature may not be in a usual lead form but it aims to stress the story's timeliness. The feature writer's aim is not persuading but illuminating. Features inform and entertain us. The middle and the end should be as compelling as the beginning but the most important part is devising a lead that will capture the reader's interest and also serve as a framework for the rest of the story. The feature differs from the short story in that it is factual, not fictional. As a feature writer you may, however, use the devices of the short story, especially in a narrative feature so that your feature reads like a short story. The body of the human-interest story usually follows the rules of simple narrative. The artistic quality of the writer draws the reader into the climax. It can have a surprise ending too.

Feature writing can be a creative experience for reporters. Features can be written on profiles,

© NCERT not to be republished

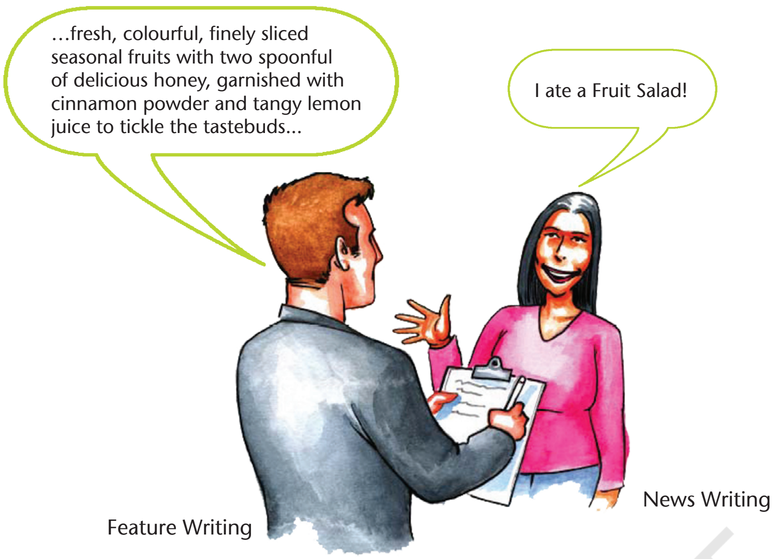

personalities, travel, life and style, trend, food, sports, automobiles, entertainment etc. It can focus on the lighter, the tragic, the interesting or the ironic side of life. It entertains readers or fills them with wonder, sadness or happiness. Above all, it is built around human interest. They can be plain fun-to-read or can make the readers reflect on life. Features should touch people's emotions and provide food for thought.

Features can also be short. Some editors use short features to brighten a page. Feature stories can be lavishly illustrated with pictures, drawings, and can also have sidebars.

See गतिविधि/Activity 11 on Page 83

Sidebars can run on page one or the 'jump' page, where the story continues inside. Sidebars give space to the writer. He/she need not put everything in the feature. Sidebars focus on one aspect of the feature. We can have more than one sidebar, that highlight different aspects of the feature. Sometimes, sidebars carry only statistical or biographical information.

गतिविधि–12 Activity–12

नीचे दिए गए विभिन्न क्षेत्रों की हस्तियों के बारे में जानकारी हासिल करें और लिखें कि इनमें से किसी एक पर फ़ीचर लिखते समय मुख्य बिंदु क्या होंगे।

- महाश्वेता देवी
- ध्यानचंद
- सैयद हैदर रज़ा
- कुमार गंधर्व

Find out about the following personalities and write what could be the main theme of a feature on them.

- Mahashweta Devi
- Homai Vyarawalla
- Pullela Gopichand
- Birbal Sahni

Chidanand Rajghatta | TNN

Washington: She is an interpreter of maladies. He's the biographer of one of the greatest maladies of all time. Dr Siddhartha Mukherjee, a New Delhi-born oncologist, has been awarded a Pulitzer Prize for his book 'The Emperor of All Maladies: A Biography of Cancer', more than a decade after Jhumpa Lahiri won the prize for her similarly-titled collection of short stories.

While the New York-based Lahiri won the 2000 Pulitzer for fiction, Dr Mukherjee, 41, who also lives in Big Apple, has

▶**Cancer Chronicler: P 15**
▶**Patient inspired him, P 15**

been awarded the 2011 prize for general non-fiction. In its citation, the Pulitzer committee described the book, which has won rave reviews, as "an elegant inquiry, at once clinical and personal, into the long history of an insidious disease that, despite breakthroughs, still bedevils medical science".

Mukherjee joins a growing band of Indian-origin physicians who seem endowed with literary DNA. Among them, Abraham Verghese, who began his writing career in the late 1980s with 'My Own Country: A Doctor's story', which centered on AIDS in the US; Atul Gawande, author of 'The Checklist Manifesto', and Dr Deepak Chopra, the new age spiritual guru.

Siddhartha Mukherjee

OTHER INDIAN WINNERS

Gobind Behari Lal | Science editor of San Francisco Examiner. Won prize in 1937 for coverage of science at Harvard University tercentenary

Jhumpa Lahiri | Won for her collection of short stories, 'Interpreter of Maladies' in 2000

Geeta Anand | Awarded Pulitzer in 2003 for work on Pompe Disease, a muscular condition

Courtesy:
Times of India, *20 April 2011*

Characteristics of a Feature

To be able to write a good and impressive feature we need to understand the main characteristics of a feature. Elements such as style, language and presentation help in writing a good feature. A good feature should have the following:

- **Creative Synergy**—A good feature has creative synergy between language, style and presentation. Choice of appropriate words, simple and short sentences, keen observation coupled with interesting examples, descriptions and narration make a feature creative.
- **Captivating**—A good feature immediately attracts the attention of the readers. This can be achieved through presenting relevant and useful information.
- **People and facts**—Features connect with the lives of the people. People should be able to identify themselves with what is being narrated, this catches the attentions of the readers.
- **Angle**—Each topic has various viewpoints. A good feature focuses on the most relevant angle. It should be topical, interesting and useful.
- **Language**—Language of the feature should be simple so as to retain the attention of the reader. It is important to use language that is appropriate; wherever there is a scope to introduce humour, the writers incorporate that.
- **Illustrations**—Another important aspect is the use of pictures, graphics, graphs etc., to make any feature lively and impressive.

See गतिविधि/Activity 13 on Page 90

Types of Features

News Features

A news feature is mostly about current events but is presented in a different manner. It gives detailed information about the background or the implications of the news being discussed. News features are mostly about social, economic, political and environmental issues. These ongoing issues are not always breaking news but have topical interest and value. To write a news feature collect facts, make sure they are authentic. Ask questions or take interviews or talk to people about what you don't see on the surface. Use quotes as they have an impact on the reader. Given below is a feature on Ladakh, which highlights some contemporary issues.

गतिविधि–14 Activity–14

कोई एक राष्ट्रीय/क्षेत्रीय अखबार लें और अलग-अलग तरह के एक-एक फ़ीचर अपने पोर्टफ़ोलियो के लिए सोचें और लिखें–

- व्यक्ति फीचर
- फ़ोटो-फ़ीचर
- यात्रा-फ़ीचर

Take any national/regional daily and find one feature of each type suitable for your portfolio:

- Personality feature
- Photo feature
- Travel feature

© NCERT not to be republished

As the Glaciers Recede

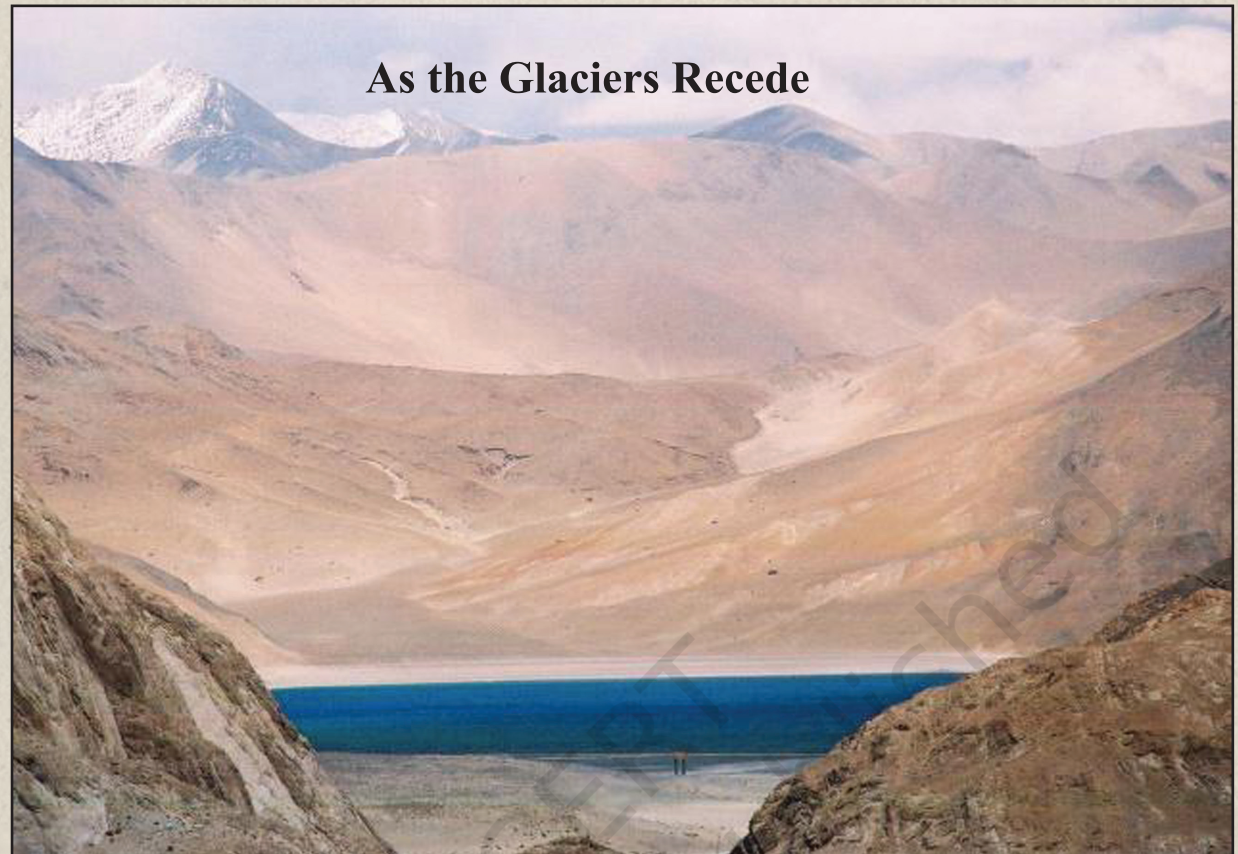

Ladakh has an unwelcome visitor: Climate change. Retreating glaciers, water scarcity and changes in traditional agricultural patterns are having an adverse impact on this fragile ecology.

—Meena Menon

There's an old saying in Ladakh that only a dear friend or a serious enemy will reach here; the passes are so high and the land so harsh. Climate change falls in the latter category and is an unwelcome visitor to this remote region, which tourists have happily discovered in the last few years or so. Water, or the lack of it, is the main worry for this generation and the next. While the world debates the effects of global warming, Ladakhis who are most vulnerable to the vagaries of nature, are living through it already. The many small glaciers in Ladakh have retreated, natural springs are reducing as also the water flow in the rivers. While there are no scientific studies yet to bear this out, it is the people who are living witnesses to this change.

In the village of Stakmo, near Leh, villagers testify to the receding glacier nearby, making agriculture very difficult. Over 80 per cent of the farmers in Ladakh depend on snow-melt for their needs and any slight change in temperature is a catastrophe. High altitude wetlands are vulnerable to rising temperatures. The impact of climate change on three major lakes in Ladakh, the *Tso Moriri, Tso Kar* and *Pangong Tso*. The lakes offer the only breeding grounds for the Black-necked Crane in India. The other key species found in the region include the Snow Leopard, Tibetan Gazelle, Tibetan Antelope, Musk Deer and Hangul. Highly endangered medicinal plants used in the Tibetan system of medicine also grow in the area.

© NCERT not to be republished

The existing threat of climate change is exacerbated by tourism, which coincides with the breeding season of migratory birds, posing a major threat. For the first time, a regular uninterrupted survey on the status of the Black-necked Crane was conducted and during the survey, six, new nesting sites were discovered. To boost the local income, home-stays for national and international tourists have become popular.

Widespread changes as a result of the rise in temperatures and the subsequent snow-melt in Ladakh have been mainly oral histories. Eyewitnesses have spoken of glaciers like Siachen, Khardung and Stok in Ladakh, which have either receded or almost disappeared in about a decade. Along with this comes a change in migration routes of nomadic tribes and an increase in the frequency and intensity of pest attacks, particularly the locust, due to rising temperatures.

In the *Changthang* region, where there are 22 wetlands, people of the nomadic tribe, the *Changpas*, acutely feel the climate change. They are dependent on livestock and rear the famous *Pashmina Sheep* for their wool. Since about six years, the migration routes of the *Changpas* have changed due to decrease in pasture land. Untimely snowfall has led to a loss of livestock as well. In the *Tso Moriri* and *Tso Kar* lakes, migratory birds are coming earlier than expected and one pair of Black-necked Cranes have not migrated. The wild rose blooms now in May instead of June. The *Changpas* used to extract salt from the brackish lakes but since the water level has risen over the years, this too has stopped. In the *Tso Kar* area there are 60 *Changpa* families which have to frequently migrate, while in *Tso Moriri*, 22 families have settled down there.

The summers are getting warmer and winters too, and pests like the coddling moth are now found everywhere. Rain and snowfall are showing a decreasing trend, according to a baseline survey in 20 villages in Leh and Kargil areas. In Kargil, water shortage has hit farmers and two villages were relocated in the *Zanskar* as a result. The cultivation of wheat is now possible due to the warmer climate and the sowing of barley is now pushed to May instead of June.

© NCERT not to be republished

Urgent Concern

Water shortage has led to hotels in Leh digging borewells, some 100-feet deep, and in the *Karzu* area in Leh, this has led to the drying up of natural streams. Concern about water is topmost in the minds of every Ladakhi. The Women's Alliance of Ladakh, which spearheaded the successful campaign banning plastic bags in Ladakh, is one of the groups which has members in every village in Ladakh. Fifty-seven-year-old *Kunzes Dolma*, Vice-President of the Alliance formed 23 years ago, has been addressing local environmental concerns.

Lifestyle Changes

Kunzes recalls colder winters when she was a child. "Now the winters are warmer," she says. The quality of food was tastier then and now vegetables like capsicum, brinjal and cucumber are being grown. There is increased use of pesticides and the Alliance is campaigning against this as well.

There is a huge concern about the melting glaciers, and lack of water and even livestock rearing is reducing now with more and more people preferring to look for jobs. The traditional "*goncha*" a warm woolen dress is not much preferred now. Traditional homes in Ladakh have been designed using ecological and climatic wisdom. However, those mud houses are being replaced by cement structures. Clearly, there is also a cultural aspect to the climate change here. "Our aim is to promote nature conservation and our culture. The modern generation is dropping all our old ways of life and the explosion of cars is damaging the environment," says *Ms Dolma*.

Local and global links need to be forged to address climate change if regions like Ladakh are to be rescued from their vulnerability.

Courtesy: The Hindu, *December 6, 2009*

not to be republished

Personality Features

A creative and imaginative writer weaves a picture through words to make a personality profile come alive. Readers are curious to know about prominent people. However, one mustn't think that personal features are written about great personalities only. The profile of a vendor, potter, rickshaw-puller, painter, or a person who has dedicated his life for a social cause would be of great interest to readers as well. The essence of the profile is not what the person does; his/her occupation plays a secondary role. It is the individual who must stand out in the story. Profiles use diverse formats. One format is the face-to-face interview, during which the person may talk about facts of his/her life that are not known to the public. Every detail of the interview with the subject should be given in the story. The person's home or the place of work can also be described since it is linked to the subject's personality. You may also include the backdrop against which the interview takes place. While writing, take care of grammar, spelling and punctuation.

Lifestyle Features

Lifestyle features tend to give useful information to help people. These can be about furnishings, handicrafts, shopping malls, sales, celebration, parenting, trends, prices, availability, methods etc.

Travel Features

To capture the attention of the reader, a travel feature needs to be innovative in its presentation and style. Details such as accessibility, transportation, accommodation, food, locales, entertainment, approximate expenditure etc., provide an overall description of the place and give an insight into a holiday the reader is looking for. This type of feature allows one to assimilate our five senses, i.e., touch, smell, sight, sound and taste while describing. The creative use of language adds flavour to such a feature.

Investigative Features

As the name suggests, the investigative feature delves deep into the news story and may reveal certain things that may not be apparent to the public or it may give a different insight or perspective to the news story. An investigation by a newspaper might lead to evidences in support of the victims. Many such cases are reported in the newspaper. To write an investigative feature, one should verify the facts, talk to people, interview eyewitnesses, assess information and data and then write the story. Remember, there is a difference between fact and opinion. Your aim should be to produce a fair, unbiased and informative feature.

Illustrative or Photo Features

The impact of pictures and illustrations is undisputed. Photographs and images often help in shaping public opinion. The pictures of earthquake and Tsunami (March 2010) moved the hearts of millions of people and motivated them to come forward and extend help in whatever way they could. Similarly, photo features on topics of general interest such as sports, cookery, gardening, travel etc., are an integral part of print media. A photo feature can also be built around a

© NCERT not to be republished

powerful single photo that describes or defines themes.

If you like the world of photographs then look out for the work of these Indian Photo essayists on the Internet— Kanu Gandhi, Raghu Rai, T.S. Satyen, Prashant Panjiar.

Courtesy: Jagadish Moirangthem

Photographs are poetry through images

The Process of Feature Writing

Before you start writing a feature, you must keep the following in mind:

Selecting a Topic

To begin writing one must have a topic. Look around, you will find that there is an abundance of topics, you need to recognise the issue/topic that interests you. A feature can be written on a place, person, product, incident, instruction, lifestyle etc. Your observation, creativity, imagination and analysis will help you select a topic. You may also get ideas when you read books, magazines, newspapers, advertisements, visit a place or observe something happening. Any important issue related to public can also become a topic for feature writing. Select a topic that interests you and then focus on any one angle of the topic to write the feature. You can write a feature on your school.

The joy of feature writing lies in its variety. This variety demands creativity, versatility and requires special attention. Feature writing has become an important craft. For newspapers and magazines, sometimes the writers choose the topic themselves, but sometimes the editor selects it according to the need of the paper or magazine.

Research

Feature writing also requires research about facts and related issues on the topic. The information can be gathered from libraries, Internet or other related documents. It may also require interviewing experts; visiting places or talking to people related to the event; and also collecting

© NCERT not to be republished

photographs etc. A good feature does not mean increasing the length of any news story. Feature writing, therefore, has a lot of scope for creativity, in terms of its plan, presentation and print.

The Process

- To instantly capture the attention of the reader, the beginning or introduction of a feature needs to be creative as well as effective. To do so, you could use a variety of language techniques such as beginning with a quotation from an authentic source; giving your personal observation about place, person or event; opening with a question; or giving facts or figures that would make the reader wonder about what their background is.

- The main body of the feature should elaborate in detail the background, facts, data discussions, descriptions and quotations etc., in a logical and coherent manner.

- Paragraphs can be written chronologically or in order of importance.

- Connect paragraphs with transitional words, paraphrases, and direct quotations. Transition is particularly important in a long feature examining several people or events because it is the tool writers use to move subtly from one person or topic to the next. Some transitions are—while, even, as, and, but, etc. Trace the rest of the transition words used in order to ensure continuity for the reader.

- The concluding paragraph should sum up the entire piece with a reminder of the central point of the piece. It can have an open-ended closure that encourages further debate and hypothesis; end on a strong quotation; end with a message; surprising anecdote; or summarise the main points etc. Whatever method is used to end the feature, it should gel with the content, style and purpose of the whole feature.

- The characteristics of a feature in terms of its lead and style, should be maintained throughout the article. Feature writing is not fiction writing. Facts remain an integral part of any feature but you need not pack the five w's—who, what, when, where, and why into the lead. Feature leads can be in a narrative or story-telling style. They can be amusing, anecdotal or interrogatory.

Steps to Write a Feature

Feature writers seldom use the inverted-pyramid form used for news stories. Instead, they may write a chronology that builds up to a climax at the end of the narrative, a first-person piece about one of their own experiences or a combination of these.

A feature lead invites the reader into the story. In fact, a delayed lead is preferred. Rather than putting the news elements of the story in the lead, the feature writer uses the first paragraph to set the mood, get the attention of the readers and invites them inside the

© NCERT not to be republished

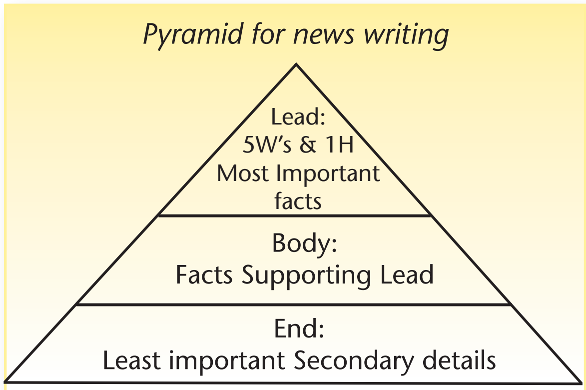

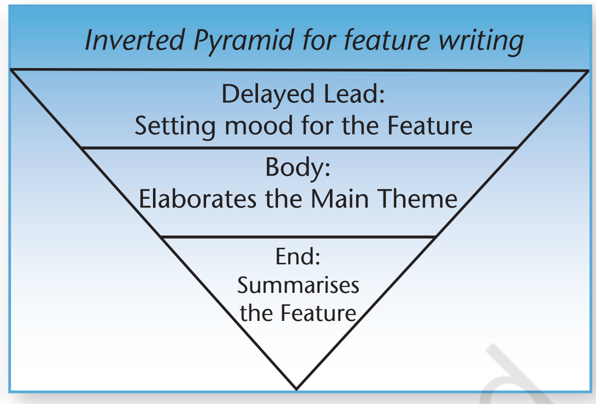

story. A summary lead, like the one used for straight news stories, may not be the best way to start a feature. For example, look at the lead in the feature story given below. It is setting the scene for the story to unfold. Is the lead different in style? Discuss.

Art, Imagination and the everyday

Shalini Umachandran

Chennai: In a classroom in Chennai's Olcott Memorial High School, a boy bashfully holds up a sketch of a coconut tree and says, "I drew it because it's a tree I like. No other reason." But Gond artist Bhajju Shyam sees much more: "In the south you use coconut in food, they're essential for *puja*, these trees are in your homes," he tells the boy. "By drawing this tree, you've unconsciously depicted something that's important to you, something of your culture." He goes on to explain that the Gonds, a tribe from Madhya Pradesh known for their exquisite art, use such everyday symbols in their paintings. "We create paintings with stories from what we see around us. We all draw from what is part of our everyday lives."

(Courtesy: The Hindu, *October 14, 2007)*

© NCERT not to be republished

Points to Remember

- To begin with, think of a topic, propose a plan and then start your work, which includes research or interview.
- While writing you may begin with a quotation or an anecdote.
- Finally, give your analysis or opinion.
- Make sure that you develop the ideas in a logical and coherent manner and there is a link between all the paragraphs.
- Each paragraph should begin with a topic sentence.
- You can also give additional input in the form of tables, boxes, figures, bullet-points, illustrations and pictures.
- Before you start writing think about the topic, related questions and issues carefully. It may require rethinking, redoing or reshaping the structure if you want the feature to be relevant, appealing and original. A well thoughtout plan would give direction and shape to your feature. For interviews, go prepared with a list of relevant questions.
- Finally read your own feature. Revisit it, read it from the point of view of the reader. Cross-check that nothing is wrong or ambiguous. Write crisp and short sentences. Read and re-read not once or twice, but every time you pause or take a break.

See गतिविधि/Activity 15 on Page 92

गतिविधि – 16 Activity–16

शिक्षा से संबंधित दो ऐसे मुद्दे चुनें जिन पर बहस चल रही है।

- बहस किन बिंदुओं पर है यह भी बताएँ।
- अब इन बिंदुओं को आधार बनाकर किसी एक पर लेख लिखें।

Select any two issues related to the topic 'Education' and list the pros and cons associated with them, like you would do in a debate.

- List the points on which both the issues are being debated.
- Using the points, write an article on any one of the issues.

Overcoming Writer's Block

Getting started is the most difficult part of writing. Did you know that before writing—

- Ernest Hemingway sharpened 20 pencils.
- Some writers glance through a favourite book or story.
- Some take a slow walk in the park.

Jotting down a few sentences that highlight the event helps focus the mind and helps one start writing. Start with anything that you think will be a part of the story.
This is like warming up the engine!

© NCERT not to be republished

II. Article Writing

An article is a non-fictional prose composition that appears in magazines, newspapers, online magazines or any other type of publication. Articles are the larger umbrella under which features and editorials are placed. Through these articles, writers present their views. Article writing is a serious rendering of your thoughts, facts, analyses and the inter-relationship among these, leading to a conclusion. To write an article you don't have to be an expert in that area, though it does require good preparation and in depth study of the topic. Once you have chosen the topic you need to research that topic and go through related or similar articles also. You can then develop an outline of the article keeping all the aspects and related issues in mind. This would facilitate in writing the final article. While it is not necessary to use all the material collected but it will certainly help you analyse your views and present them in a logical manner. An article is normally of a serious nature and more thought-provoking as compared to a feature.

Read the article that follows–

> *The man who writes about himself and his own time is the only man who writes about all people and all time.*
>
> — ***George Bernand Shaw***

Tree, Most Majestic

Shantha Bhushan

The memory of the trek to Sonanadi (river of gold) sanctuary in Uttaranchal is still fresh. I had finished my standard V exams and was thrilled to know that I was going on a 10-day trek with my friends. It was a trek, which was both difficult and rewarding. On the third day, we had just crossed a stream and at the turning of the path, spotted a glorious green magpie. We stopped in our tracks to look at the bird through our binoculars and some of us made appreciative sounds, which of course irritated the serious bird watchers. By the fourth day, the entire group was hooked to bird watching and, all of a sudden, Salim Ali's Pictorial Guide on Indian Birds became a very important book.

Old Friend

Our last stop was a guest house, built more than 80 years ago, by the British. Right next to the guest house was a beautiful, majestic fig tree and I was immediately fascinated by it. The tree seemed to call out to me like an old friend. I decided to stay back and spend time with it while others went for a long walk in the forest. The sun had started to set and I sat watching birds of different colours and sizes come to eat the fruits. There was the hornbill with its huge beak and there were the tiny sunbirds, all coming there to partake of the fruit. Hours passed and all the birds went about business as usual, ignoring my presence.

Being with the fig tree changed my life. I realised what a "giving" tree this was! It provided food to so many different birds without asking anything in return.

© NCERT not to be republished

Home for All

That night, I lay restless, trying to understand what I had seen and felt. I spent the next few days in recollection of how the fig tree actually supported life.

I returned home, transformed, and decided that one of the ways of helping the birds in the city was to plant and protect fig trees. This is how our "Fig tree club" was born. Gradually, my friends in other schools heard about this and also joined in. Together we did our little bit to save the tree and learnt so much with it.

Source: Kalpavriksh.org & The Hindu Young World (a supplement for children from The Hindu newspaper).

Article writing also demands indepth study and research like a feature. Its presentation should also be logical and coherent keeping in mind the beginning, the middle and the end.

The Lead

The writer here is describing a personal experience.

- *How will you write the lead for an article on an adventure trip you took? Read the lead of this piece again and think of an innovative way to begin your article.*

The Body

- *What was the most exciting aspect of your trip? Develop the body of the article by describing it in detail. You can also support your article with reasons as to why the experience was so memorable.*

The End

- *How does this piece end?*
  Can you find another creative way to end the above article?
  Now write another end for your own travel piece.
  Remember, the title of the article should also be attractive.

III. Script (Radio, Television)

Electronic media has found its way into all parts of modern life. Radio and television are the key mediums for electronic broadcasting. Today, satellite receivers have reached some of the most remote and inaccessible regions of the world. Therefore, electronic media hold a significant place in our lives.

Characteristics of Radio — In radio we paint our own pictures. Unlike television, whereas shows everything through a combination of Visuals and sound, radio allows us to conjure our own images. Often known as the blind medium, it stimulates our imagination. For a radio listener, it is easy to climb Mount Everest or make a spaceship and land on the Moon!

Radio is an enormously flexible medium. Even a basic unit of one person with just a microphone and a recorder can broadcast for a radio programme. It is truly a medium of the masses. It has an expansive geographical reach, is inexpensive and portable, and unlike a newspaper, caters to the literate and the illiterate alike. This also makes it easier for non-professionals to take part in radio broadcasting, thereby creating a greater possibility of access to the medium.

© NCERT not to be republished

Read the following dialogues to understand radio's dramatic power

The dialogues between the teacher, Kanika and Savita comes alive through voice modulation

Sound—*(Ambience of a classroom as a class is about to begin. Desks and chairs moving,*

Teacher: Kanika, why don't you listen to the Radio?

Savita: … Its so boring! There is nothing … no pictures like TV!.

Teacher: How is it? Just yesterday I saw visuals …? Are you sure? Is your radio working …?

Kanika: (Giggles) Yes, ma'am. I believe you. We can surely watch sound!—tell me also. Have you switched on the visual button on your radio …?

Savita-(Serious now)—Really, which radio is this? I think I have an old one ma'am …

Teacher (smiles again): Sit here. Now close your eyes. Relax and watch your first radio show. *general chatter of students, a bell ringing.)*

Teacher: Good Morning! (Chirpily).

(Silence)

The class in chorus "Good Morning ma'am …"

Teacher: Please sit.

Sound effect – *As students sit, the desk and chairs make noise again.*

General Ambience—Sound of the teacher teaching math.

The voice of teacher continues in the background …

Radha (whispers to Savita)—Savita, *shush shhhu …* See Savita my new watch.

Savita—Wait, I can really visualise a classroom.

Radha—Really?

Radio is a powerful medium which can connect people from far and near. Radio is a medium of sound. It paints pictures through music, voices and sound effects. With radio, the listener is a co-author. Radio is like a book, it allows your imagination to soar. You can listen to radio while doing any work, therefore, it is also referred as 'audio wallpaper.'

Writing for Radio

Since the radio is a medium of sound. But the manner in which various voices, sound effects and music are used predominantly depends on the form of radio writing one chooses to do. Writing for radio is predominantly done in three forms—Radio News, Radio Feature and Radio Drama.

Writing for Radio News

Radio news is written for the ear and not the eye. Radio scripts use everyday words and an informal conversation style. Radio news writing is often described as a headline service. A half-hour news cast may have as many as 20 news items. An average sentence in a radio news copy will have 13 to 14 words. So the radio writer will first give the headline and will then briefly elaborate the news event in short sentences. The simple SVO (Subject-Verb-Object) style of writing forms the basis of radio news writing. Remember, all the news in a half-hour newscast on radio will not fit in the front page of a newspaper.

© NCERT not to be republished

Broadcasting began in India with the formation of a private radio service in Madras (presently Chennai) in 1924. In the very same year, the British government approved a license to a private company, the Indian Broadcasting Company, to inaugurate Radio stations in Bombay presently Mumbai and Kolkata. This later became the Indian State Broadcasting Corporation. In 1936, this very Corporation was renamed All India Radio (AIR).

When India became independent AIR was made a separate department under the Ministry of Information and Broadcasting. In 1957, All India Radio was renamed *Akashvani*. AIR today has a network of 229 broadcasting centres. The coverage is 91.79% of the area, serving 99.14% of the people in the largest democracy of the world.

Points to Ponder

- Radio's greatest strength is its immediacy. Simple sentences with active verbs form the basis of effective writing for radio. Use the present tense, which gives the impression that something is happening now.
- A frequent error in radio writing is the use of pronouns without any reference to identify the pronouns. For example—He was awarded yesterday, but he refused to receive the award. Who is "he"? Who conferred the award? So one should use the appropriate pronouns repeatedly in radio so that even listeners who join-in late can follow.
- Keep the timeline in mind.
- Use simple language that is close to day-to-day use. Avoid jargon.
- Do not repeat, this will unnecessarily use airtime.

See गतिविधि/Activity 17 on Page 94

Young radio jockeys

© NCERT not to be republished

Writing Numbers for Radio

Keeping track of numbers is a difficult task even for the most attentive listeners. In Broadcast style, ages are given as adjectival phrases preceding the name or other identifying feature, such as "the 45-year-old First Lady, 40 years old Sachin". Also spell out numbers if more than two figures. If necessary round-off a large number. For Example: Instead of saying 2999 students joined the Peace March, you may write—nearly three thousand students participated in the Peace March. Similarly, the descriptive words "half" and "quarter" are generally preferable to "point five" and "point two five".

Giving people a voice: Community Radio

Reading Radio News

Listen to yourself as you read your news story aloud. Look for the following:

Pronunciation – Check the pronunciation of all difficult words or names you don't know. Every Radio news organisation also has a pronunciation guide/style book.

Marking a Copy – Most Broadcasters mark a news copy to help them remember when to pause in order to emphasise certain words. One should mark the copy as you read it aloud. A pause is used to get attention when you want to emphasise something you just said. Many broadcasters mark their scripts so that they are reminded of the pause as they broadcast. Some use slashes (/), other's use brackets ( ) or ellipses (...) For example:

What happens ...(Short Pause) when galaxies collide ...? (Pause) Our Space telescope ...(Short Pause) reveals that two galaxies have collided.

Writing a Radio Feature or a Documentary

Like feature writing for print, a radio feature or documentary covers a particular topic in some depth, usually with a mix of commentary and sound pictures. Both can be creative in terms of aesthetic choices depending on the subject at hand. They may include folk songs, poetry or drama to help illustrate the theme. Today, many mixed forms also exist like—the feature documentary and the documentary drama.

A feature programme can innovate freely with the choice of subjects and ways of presentation. The distinction between a feature and a documentary is often not concrete, the key distinction that still remains is the length. A documentary is often longer than the feature.

Writing a Radio Feature: The main elements of a radio feature or documentary are—interviews, voice over (also known as the commentary), sound effects and music. A radio script writer has to creatively

not to be republished © NCERT

employ the various tools in a narrative structure.

One can choose to make an unknown omniscient voice, do the voice-over or think of a persona for the narrator. The radio feature or documentary can also introduce the theme through a bouquet of short interviews on the topic, also known as 'voxpops'.

Radio Drama: Radio drama is a form of audio storytelling broadcast on radio. With no visual component, radio drama depends on dialogue, music and sound effects to help the listener imagine the story. Since the end result occurs purely within the imagination, there are few limitations of size, reality, place, mood, time or speed of transition.

Radio: Of, for and by women

Radio drama achieved widespread popularity within a decade of its initial development in the 1920s. By the 1940s, it was a leading international popular entertainment. With the advent of television in the 1950s, however, radio drama lost some of its popularity, and in some countries, has never regained large audiences.

A Broadcast Interview— We have already discussed the basics of interviewing earlier. The only difference is that in a radio interview we are recording on a digital recorder and for television the same interview would be shot on a camera. But, the technique of interviewing and the types of interviews remain the same that you have read about in '*Srijan I*'.

Remember that natural sound will give credibility to a radio interview like visuals of the location help a television interview. For example, interview of a railway porter with appropriate sound will help in creating the ambience of the railway station.

Creative Use of Some Sound Effects

Radio is about creating pictures through sound.
How can YOU create complex sounds simply for Radio:

1. CAR DRIVES OFF
Electric car driving toy.

2. CRAWLING IN UNDERBRUSH
Crinkle large plastic bag.

3. FACE BEING SLAPPED
Slapping hands together

4. HORSES GALLOPING, TROTTING, WALKING
Use coconut shells in a box with gravel.

The New York Times.

NEW YORK, MONDAY, OCTOBER 31, 1938.

Radio Listeners in Panic, Taking War Drama as Fact

Many Flee Homes to Escape 'Gas Raid From Mars'—Phone Calls Swamp Police at Broadcast of Wells Fantasy

A wave of mass hysteria seized thousands of radio listeners throughout the nation between 8:15 and 9:30 o'clock last night when a broadcast of a dramatization of H. G. Wells's fantasy, "The War of the Worlds," led thousands to believe that an interplanetary conflict had started with invading Martians spreading wide death and destruction in New Jersey and New York.

...and radio stations here and in other cities of the United States and Canada seeking advice on protective measures against the raids.

The program was produced by Mr. Welles and the Mercury Theatre on the Air over station WABC and the Columbia Broadcasting System's coast-to-coast network, from 8 to 9 o'clock.

The radio play, as presented, was to simulate a regular radio ...

The single best-known episode of radio drama is probably the Orson Welles—directed adaptation of The War of the Worlds (1938), which some listeners believed to be real news broadcast about an invasion from Mars.

The Indian Radio Drama has had a literary origin. Its genesis can be easily associated with much acclaimed writers and authors in various Indian languages. Urdu authors Saadat Hasan Manto and Upendra Nath Ashk, the Gujarati dramatists C. C. Mehta and Shiv Kumar Joshi, and the Bengali popular writer Birendrakrishna Bhadra are some of the names that find easy mention.

Tinka Tinka Sukh
The Radio Soap Opera

PCI-Media Impact's Indian radio programme *Tinka Tinka Sukh* (Little Steps to a Better Life)—the show aired in 1996–98 and quickly gained such great popularity that thousands of audience letters poured into the broadcaster, All India Radio. The music-based style helped make this drama popular. The issues covered were—gender, women's empowerment and health, HIV/AIDS, family size, conservation. The radio drama reached about 40 million listeners on 27 local radio stations covering 7 Hindi-speaking states, probably the largest listenership for any radio drama worldwide.

Source: http://www.comminit.com/en/node/1690/ The Communication Initiative Network.

What is Community Radio?

In India, the campaign to legitimise community radio began in the mid-1990s, soon after the Supreme Court of India ruled in its judgement of February 1995 that "airwaves are public property"

Community Radio is radio of the people, by the people and for the people.

In community radio, members of the listening community finance and/or participate in the operations such as 'Women Speak to Women'

Deccan Development Society *Community FM Radio Service.*

In most countries as also in India, Community Radio is considered non-commercial broadcasting, and only non-profit organisations and educational institutions are given-licenses. Anna FM was India's first campus 'community' radio, launched in 2004, it is run by Education and Multimedia Research Centre (EMRC), and all programmes are produced by the students of Media Sciences at Anna University.

Have you heard of any of the following?

- *Radio Bundelkhand*
- *Apna Radio—AR 1Jamia FM*

Search the internet and find out about other Campus/Community radio initiatives.

© NCERT not to be republished

Writing for Television

How many hours of television do you watch in a day?
What are the various genres of programmes one can watch on any typical television evening?
Which television news channel is your favourite? Why do you like it?

Today we have found ways to describe almost everything in the visual language. Can you count the number of visuals you see in a day? Perhaps your answer would be—infinite. In short, we are surrounded by visuals. From billboards on roads to 24-hour-television channels; from virtual advertising to the architectural marvels; from the back of trucks to posters on the walls of our city—visuals entertain us, inform us, inspire us and educate us constantly. Television is one of the most omniscient visual mass medium.

Writing a Television News Script

Writing for television adheres to almost the same set of rules as radio, with one exception. The writer should always remember that unlike radio and print, in television, visual is the most important element. Television writers structure and build scripts around the visual. They combine words with pictures. They do not tell viewers what they are seeing. Instead support the visual by saying what the visuals do not or cannot reveal. Words fill in the factual details that pictures lack. One needs to keep in mind to avoid cramming the visuals with voice-over or narration. But do remember that a picture is worth a thousand words thus let your visuals talk when necessary. Like radio, a television writer uses everyday words—short, simple and easy to understand. The average acceptable number of words per sentence in a TV copy is 13 to 14. The element of immediacy is one of the biggest assets of the TV medium in reporting news. Thus the present tense needs to be used more often. For example, Police was searching for clues will not do, instead the more appropriate way to write will be, "Police is searching for clues."

The present perfect is less dated than the past tense and is used in situations in which the past tense is unacceptable. 'Like radio' it is important to keep the action in the verb even in television writing. So, writing in the active voice is more suitable.

Passive Voice: "An airliner was hit by a private plane."

Active Voice: A private plane crashed into an Airliner ..."

गतिविधि – 18 Activity–18

लगातार एक हफ़्ते तक रात नौ बजे का रेडियो समाचार सुनें। साथ-ही उन्हीं दिनों के टेलीविज़न समाचार भी देखें। दोनों की तुलना करते हुए लिखें कि आपको रेडियो समाचार टेलीविज़न समाचार से कैसे अलग लगा।

Listen to the 9.00 PM radio news regularly for a week and also watch television news on related subjects. Do a comparative study of how radio news and television news differ from each other.

See गतिविधि/Activity 19 on Page 97

© NCERT not to be republished

It is very important to be objective while writing for Media.

Let's understand this with the help of a film *Rashomon*. *Rashomon* is an acclaimed masterpiece by the Japanese film director Akira Kurosawa.

On the surface, the film is straightforward. An incident, the murder of a Samurai, an assault on his wife occurs in a forest; all allegedly carried out by the bandit, Tajomaru. Three people are involved; a bandit, the Samurai husband, and his wife. The film narrates the incident from each protagonist's perspective and an eyewitness account of the woodcutter. The film never shows us the incident as it happened. It only shows us the incident in multiple flashbacks as narrated by each of the protagonists and the eyewitness. Each version of the incident as narrated by a protagonist has a different take on what happened in the forest. The viewer is then left with the question—what "really" happened in the forest? In other words meanings are something that we create, meanings do not exist independently of us. These meanings arise as a result of the social world we inhabit. *Rashomon* puts forth this viewpoint brilliantly in its form; the flashbacks reinforce the point that each of the characters interprets the incident in his or her own way. Kurosawa prods us to ask—Can there be an objective account of the world? Aren't all our accounts of the world stories we interpret?

© NCERT not to be republished

Elements of TV News Script

Anchors Lead–in and Lead–out: Today a Television news reader is known as an Anchor. An anchor strings the whole bulletin together with lead-ins and lead-outs. A short introduction to the news story is called the 'Lead-in'. A 'Lead-out' is a connection between two stories or could be a comment on the last story as we move to introduce the next story.

The most skeletal news story is a 'reader' or a 'liner'. This is a story read on camera by one of the news anchors with no visual appearing on the screen. Stories with no visuals are carried in situations of immediacy when visuals are unavailable.

Sound Bytes: The words of news makers are key to telling a good TV news story. A TV news writer weaves their copy between and around sound bytes, eyewitness reports, experts or subjective comments. Generally, a sound byte runs for about 10 to 20 seconds in length.

Piece to Camera: When a reporter appears on camera from the scene of the news event it is called a piece to camera. A piece to camera is read straight into the camera. They are about 20 seconds in length. The location for the news story usually is chosen as the background.

It has other advantages also. It establishes the reporter's presence on the spot; it is simple to execute. For example, if the story is on the Peace March then the Piece to Camera's backdrop can be the people who are walking in the March. Piece to camera can be done in the beginning of a story when one needs to find a follow-up on the latest in the story or they can be done as bridges in the middle of the story by the reporter or in the end to summarise and conclude the story.

© NCERT not to be republished

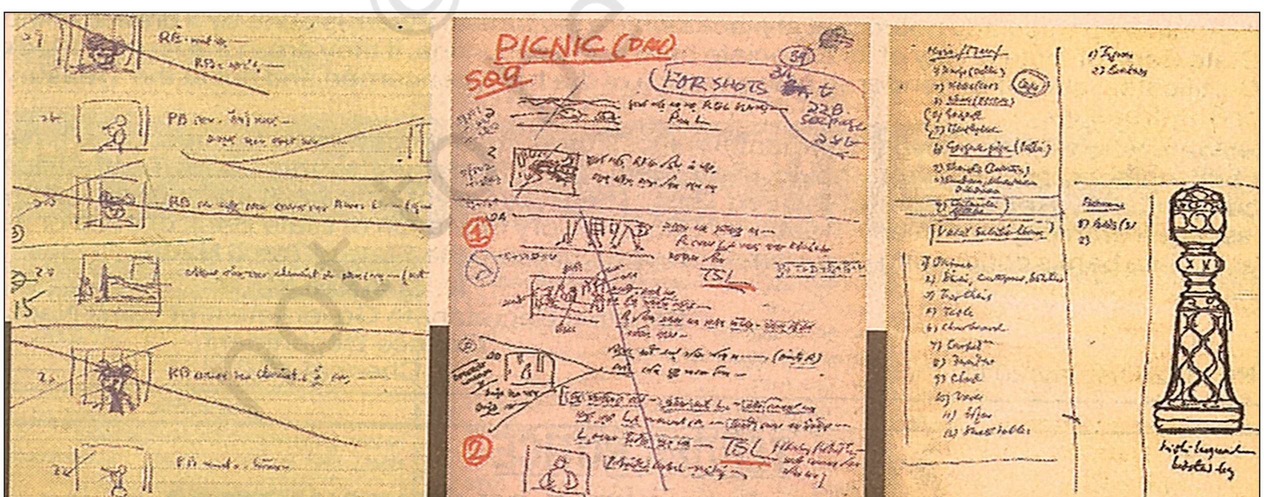

(From left to right): Pages from the manuscripts of Shakha Proshakha *(Reunion) and* Shatranj ke Khiladi *(Chess Players). The pages reflect the mind of a master film maker Satyajit Ray through various phases of his illustrious life*
Courtesy: The Economic Times, *9 April 2011*

An Example of a TV Script

VIDEO

(**MS**) Anchor Lead-in

Story: Cue

(**MCU**) Lakshmi on the green slide down swing.

(**MS**) Lakshmi running in the playground with other kids of her age …

(**MCU**) Lakshmi painting a tree.

AUDIO

And now is the special campaign story for the week. The story of Lakshmi …a story which can teach all of us some big and small lessons on life …

Voice Over: Lakshmi loves the green swing.
It is her favourite…. She also enjoys painting and singing

(MS) Lakshmi standing in a group of children and singing

Sound bite 1:

(MS) Ms Nanda in her office

GFX: Ms Neelima Nanda
In-charge, Anand Niwas

General Long shots- Children running around in the corridor. Laughing, eating together in the mess.

Sound bite Lakshmi: MCU of Lakshmi sitting on her green swing.

MS—She slides down from the swing and smiles looking in the camera …

Anchor Lead Out: MS Anchor Audio— "*Machali Jal ki rani hai* …"

Sound bite 1:

MS of Ms Nanda in her office.

Lakshmi is a blessed child. She has already won so many awards for her painting and singing. She is a child wizard of sorts.
We are lucky to have her at our home.

Sound bite:

Anand Niwas is a home for HIV + Orphans. There are 60 children of different age groups living happily here.

Sound bite (Lakshmi) — I want to be a big singer when I grow up …want to sing on TV …(She smiles …)

Audio:

Song …Lakshmi's Voices sings a popular song …
Perhaps in 10 odd years we will see her on television singing …
and now lets see the weather …

Types of Compositions

Mid Close Up (MCU)
Distance between the camera and subject is comparatively greater. As the distance increases, the connection or the intimacy is also reduced. Eg: Face and neck.

Mid Shot (MS)
The camera frames subjects waist up wards and is often used to highlight action, including fight scenes. Eg: Face, neck, torso.

GFX
Stands for graphics. These may be in the form of text, numbers, logos etc.

© NCERT not to be republished

Web Page Maker - [Untitled - index]

File Edit Page Insert Format Arrange Tools Help

New Navigation Bar

IV. Writing for the New Media

HOME | DEFINITIONS | IMAGES | CONTACT

New media is a generic term for the many different forms of electronic communication that are made possible through the use of computer technology. The term is in relation to "old" media forms, such as print newspapers, that are static representations of text and graphics. New media includes—websites, streaming audio and video, chatrooms, e-mail, online communities, Web news and advertising, DVD and CD-ROM media, integration of digital data with the telephone, such as Internet telephony, digital cameras, mobile computing etc.

Writing for the Web: Like radio and television, the Web is "24/7," and Web writers for news websites often emphasise the 'up to the minute' aspect of stories. Not only can they update stories, they can write using the present and present perfect tense to emphasise the "happening right now" angle, just like broadcast news. Most rules for web writing are similar to old "print journalism" advice; use the active voice, strong verbs, summary leads, inverted pyramid structure, tight writing and punchy headlines. Distill longer documents down to their most important facts by creating a summary. Many news sites, offer readers collections of background stories on recurring topics in the news. Such pages assemble 'evergreen' links to stories and other information. They provide information, but they also provide navigation. They invite the reader to 'click through' to a full story or to investigate additional chunks of a multi-part story. These are known as hypertext links.

© NCERT not to be republished

Blog

Do you write a blog? Let's start a blog together. You can start a blog on any of the following platforms—Wordpress.org, blogger.com, Live Journal, Movable Type etc.

What will you call your blog?
Think of a pseudonym or a writing Id?
What is your first post on your blog?
Ask your friends to read it.
Give feedback on each other's blog.

Points to Ponder

- A blog is like a personal diary.
- It is a medium through which one can express oneself.
- Blogging tools on New Media enables asynchronous interactivity and exchange of ideas.
- New Media is about convergence of mediums. You can take a photograph from your mobile phone and post it on your blog. Think of other mediums that can be brought together on New Media.
- Blogging also known as the 'Sixth Estate' has the potential to be a tool for collective activism and citizen journalism.

You already know that the press is known as the Fourth Estate. New media is also referred to as the Sixth Estate. The Sixth Estate—blogging, texting etc., is like an observe, critic and counterweight

to the Fourth Estate because it offers an opportunity to everybody to critique or present one's viewpoints. The Fifth Estate is the broadcast media. This (now acceptable as a critic of the Fourth Estate), tries to bring solid stories, evidence and diverse perspectives on important issues.

Blogging and Citizen Journalism

Blogging has enabled people to become a part of the process of news-making. The frequently updated websites called "blogs" use many writing styles and can address any topic. Informality generally rules on personal weblogs. You could practice creative writing, news writing or share photographs and short films through your blog.

Technology has changed the face of journalism forever. Today, any aware citizen can become a journalist. Everyday as you come out of your house, to go to school or to the nearby market you are a silent witness to many news stories waiting to be reported, for example, the weather update, the phenomena of laughing clubs, yoga classes in parks, people who commute by car-pools to save energy, all these are potential news stories. So, if you are aware, you observe and are ready to research your observations then you are already a 'citizen journalist'.

Also, there are many blogs that adopt a journalistic tone. A few consciously try to fill gaps in local news coverage. Today's fast Internet connections allow web writing to take greater advantage of multimedia, from video blogs to You Tube.

गतिविधि–20 Activity–20

- इंटरनेट से महिला सशक्तीकरण विषय पर सूचनाएँ इकट्ठी करें–
- इसी विषय पर विभिन्न क्षेत्रों की कुछ महिलाओं के ब्लॉग पढ़ें।
- इसी विषय पर अपने ब्लॉग पर टिप्पणी लिखें।
- इकट्ठा की गई सूचनाओं और अपनी टिप्पणी के प्रिंट लें।
- इन्हें अपने पोर्टफ़ोलियो में लगाएँ।

(जिन्हें इंटरनेट की सुविधा नहीं प्राप्त है, वे विद्यार्थी अखबार, पत्रिकाओं और इंसाइक्लोपीडिया से सूचनाएँ इकट्ठी करें तथा अपनी टिप्पणी लिखें।

- Collect information on the topic 'Women's Empowerment' using the Internet.
- Read blogs by women from different walks of life on this topic.
- Post your own comments on the topic on these blogs.
- Take a printout of the information collected from the websites, blogs and your comments.
- Put all these in your portfolio.

(Where access to the internet is not available, students may collect information from newspapers, magazines and encyclopedias and then write their comments.)

See गतिविधि/Activity 21 on Page 98

"When something can be read without effort, great effort has gone into its writing"

— ***Enrique Jardiel Poncela***

© NCERT not to be republished

संवाद / Excercise

1. अखबार के लिए एक अच्छा फ़ीचर लिखने से पहले आप क्या-क्या तैयारियाँ करेंगे। किसी एक विषय को ध्यान में रखते हुए लिखें।

   What factors should you keep in consider before attempting a good feature for print media? Keeping these in mind write a feature on any topic of your choice.

2. हाल में टेलीविज़न पर देखे हुए किसी समाचार फ़ीचर की उन विशेषताओं को लिखें जो आपको ज़्यादा अच्छी लगीं।

   List the qualities of a TV news feature that appealed to you the most recently.

3. निम्नलिखित में से किसी एक पर फ़ीचर लिखें–

   (क) गाँव / मोहल्ला

   (ख) विद्यालय

   (ग) अपने क्षेत्र की कोई लोक कला

   (ग) अपने क्षेत्र के किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति (जैसे–साहित्यकार, खिलाड़ी, समाज सेवक या पत्रकार)

   Write a feature on any one of the following:

   (a) village / neighbourhood

   (b) school

   (c) any art / craft from your locality

   (d) any important personality from your locality e.g. litterateur, sports person, social worker or journalist)

4. 'दो महत्वपूर्ण बदलाव जो मेरे स्कूल को बेहतर बना सकते हैं'–इस विषय पर लेख लिखें।

   "Two important changes that will make my school better" — write an article on this topic.

5. 'क्रिकेट के अलावा अन्य खेलों को महत्व क्यों नहीं मिलता'? कक्षा में चर्चा करें और लिखें।

   Why are other games given less importance than cricket? Discuss in class and write your views.

© NCERT not to be republished